

७५ ३१३

वानाहिकल्प

७२१६

५ ३१३

DH373

घर्मरत्न बज्राचार्य मुरली श्री महाबिहार

हिकल्प

ॐ नमः श्रीवज्रवा वाक् ॥ हगवतीदिगम्वामृक्तकभाईपाददिनकनकवतासमृद्धि
तावजवावाहिकल्पः ॥ अथाताहगवतीनांवावाहीनांसदवानांमहेश्वरीनां ॥ महामंडल
युक्तानांमियंमातामहमायतिविश्रुता ॥ इलावृतासनीविद्याप्रपदवंमहेश्वरीयय
नूषान् ॥ विद्याधनपिभावाश्चवाक्तात्रगकिन्नवान् ॥ वसमानयतिहृतानांजलजस्त
विद्यपात्राटनादिकं ॥ वक्ताकर्षणंनचशूनकविविधानिच ॥ शूनकध्वनिश्च ॥ अ
पंचरूपनमयंकुमालाभिनिविधाविद्या ॥ चतुर्मात्रविनाभार्थकालाननंसूतीषधीवक्ता
नंतां ॥ ॥ एवंमयाभूतंमकस्मिन्समयतहगवान्सर्वतभागतकायवाक्त्रिंशद्वजवा
लाकिन्नश्चवादावभीतिकारोयागिनीश्वरीमहेश्वरजवावाहीमवलावृत्तिरुमकार्षीत्
स्वंप्रनष्टवज्रीवावाहीकल्पयागिनी ॥ प्रकाशयतुहगवांस्वामीवावाहीकनसंतुवं ॥ उत्प

जनं ॥ इन्द्रियंविषयंसर्वंप्रविष्टंनाहिमधुलवहस्यर्धमूवंवायूमूर्द्धिवज्राश्चपंजव ॥ वा
हवागमहासूत्रमयाधुनंतहिश्चजनितपूनात् ॥ स्वरावनेवात्यकंडवसमंथागत्रपकं ॥
गप्रसाधकं ॥ त्वयाधिपस्त्वकीदवीसंस्तानंवहूचावकी ॥ मकुमालामनावर्त्तुश्चाकावायश्च
गतावावाहियागतश्च ॥ उत्पलिवचयागिन्यानात्रिकायाम्बवंप्रनं ॥ घासप्रतिसहस्रभूम
विरूपायनायकीचपवंपदं ॥ वज्रादिप्रथमंनामश्रवजाचकवज्रिका ॥ एवमाद्यास्तुमकु
तिपत्राप्यवनाहिमूर्द्धादुदार्द्रकथा ॥ विस्तुवकिसदात्मानंयागिनीवीननायकां ॥ अत्र
गिनी ॥ कालंनचाकावकलुष्यामत्रज्ञाकवस्थितं ॥ प्रवत्समृत्तवीजकुयागिमार्गवहिर्ग
र्याहिश्चात्रवंप्रनं ॥ कुरुहृतमहाविद्यांलित्यनतावनात्मनां ॥ यदिश्रुवेवाचनानाहंन
श्रुत्यमकासचत्रापष्टमंतं ॥ अवासांवावामयाहनाहित्रिंसाहस्त ॥ मथ ॥ वत्रामकु

9

[illegible]

एसादाय एसाहि नयासा विहिनि ० ॐ अमधना इति त्रिय च धसन ० ॐ उवीद अका वाह
 हसति कह नधि ० ॐ नवहता वला यवर्गन यदि श्री वा अद नला कु अनगरी जा ॐ दस
 ॐ सच नसा अनाहा व ॐ सन ० ॐ चउ सन गिहा कहाहन दस हउ नक बल दच
 नत बाऊ मा अ धउ ध ० ॐ उ न हागहन संता नू ॐ धन विहि मायू ॐ ॐ उ सक सं न
 दवा उऊ हव च सा व ॐ पू विह निरूय शवा हि चिह ॐ ॐ ॥ नवमूक्त श्रय मका
 स्पडु माहात्म्य म न्न न स्यादिह नय ४ ॥ विस् न कि महात्मा नं कला वा ध उ सह उका ४
 नच उक्क नू पन च सच वा घिन रु हविस्म उ न वन नू अ प हद न वी उ उ स रु द
 धवा प ॐ ॥ इ विनि विस्म य ह ॐ यत्सा तिह स कय ग ह स च उ का न धु गाय स च इ वा
 जाल ह अ क ख नू सं ० ॐ ५ ॥ स ० ह का न धु ला ५ ॥ च व ग ॐ म ऊ ० ॐ अ गहन ॐ ॐ ॥ वय

लघु॥००॥रुतिरुवसजानसदाउपमरु॥अग्निश्रुवीउलित्रिसवकुरुड॥ससवहवाम०॥
सवगहिश्रु००॥अहं॥भवतिबुश्रसतउदाव॥अजिम॥जा०००॥डावशुकडा॥असवपू॥
सयलसबुश्र॥व०००॥डाश्रुसवशुडमवहइ०॥सलकावसडकु॥जश्रुवागहिगहिश्रु॥
न॥वाश्रुमहंडुश्रुलाडाकवरु००॥धउसकु॥थानवि॥भसानमकु॥लडाश्रुलडालाश्रुह॥
श्रुतिन॥पदंतासवश्रुसै०००॥उ॥तिरुश्रुनमातिसत्रवातक्क॥बु॥अउसिश्रुशा॥सह॥
वजसकुश्रुनाहजाम॥००॥सवश्रुलडजवगदकावि००॥न०००॥उश्रुजानसबुश्रु॥धमन॥
वविश्रुडडा॥मश्रुबन्दसहाडामड॥पचउरुहिश्रुउ॥सवजश्रुवक००॥रुजहनठश्रु॥
श्रुकवसदलघुमकानदमनड॥अपउगहननूगह००॥डामा००॥बुश्रु॥सववा॥अश्रु॥
श्रुवश्रुउडा॥विसमितधम्म॥जवगसहका००॥पमह॥अक्क॥बुलावा॥चवगसम॥

2

[illegible]

मन्त्राक्यपहृदः शृङ्गवनचिंदडासकृकम्मस वृश्ववक्त्रा ॥ ॐ तिथीकजवावाहिक
ॐ त्वाहृगवां वज्रवावाहीया कल्पकं । कत्र्त्वाकामना हृत तत्त्वस्य वचवित्त्वा ॥ यत्र च
षादधीष्टुत वद्वीषकिं भावेष्टुत्वाहितं । श्रावसेकाङ्ग वंयस्तुदयाक्रमतापविस्तुट
सिद्धिसप्तकं ॥ उकेकस्पपनिवा नं वस्तुवर्धश्चन्द्रकौ । सर्वेषां श्रधिकै नूनं वस्तुवदकुसन्धि
कादयकालगत ॥ ॐ त्रियविषयं ननु मावथ कर्मकालगत ॥ उच्चाटयत्माना नामवधं क
नथप्राप्तमाकर्षतस्तु द्रष्टव्यं ॥ कायवाचनथाचिरुत प्रकृत्या कुरुकुरु नं । श्रुत्य कर्मयथान
स्तुस्पमहात्माना उत्पन्नाहृगमक्रवा । द्वितीययत्नं प्रवक्ष्यामि वावाही कल्पसैरुकी ॥ ॐ त्वा
॥ कथं वाचापिमापश्च पृथिव्याकाशमवच । पंचका नं कथं दवषद्विषयातगत प्रता ॥ कथं
वताप्रता ॥ चतुस्र्यकथं दवकथं पञ्चस्वहावकौ । कथं तस्य नी वस्तुतावकुनाडी नृपं

सकथयस्वममप्रता ॥ कनपीभादिसेकं तं वाक्काष्मात्मकमवच । कथं हृम्पादित्वा हृस्पकथं
कतजापस्पलक्ष्मी । कथं तमधुलमावर्तुदवनाकावथागत ॥ सिद्धिमर्तु कथं दवकोमावी
वपंचाई । चतुर्वी ॥ कथयस्वमधुलालाव्यैस्तुपातं कथं हवत् ॥ कथं तं हृमिसेरुभाध्वं
कनकर्तुव्येकथं निष्पीचसंयह । श्रुतिषकप्रमानं च चतुर्थं च कथं हवत् ॥ यूरयूरगकथं हि
जातप्रमानं च कतपात्रमितास्तथा । प्रविष्टाहाममागम्यसिद्धिमर्तु कथं हवत् । नसायसेव
ग्रहं च कथं दवश्रुतं ग्रहं च कथं हवत् । तत्त्वानां च कथं हृगवन्श्रुतनाकत्रुषा कथं ॥ कथं
सर्वधर्मपविस्तुनं तावानां कथं तप्रता ॥ ॥ त्वावावाहा ॥ साधुवीवध्वनीवज्रवावी
ॐ वा ॐ सहजा । तिचिजि श्रुतवहृदुडा । श्रुतवपूतिश्रुताज्ञाश्रुनमकागता ॐ श्रुश्रु
वातिजिम्मा ॐ सवमउजहलधातिहवत्रधायस्तुवगा । तजप्रहृव ॐ । प्रहनवगतपति

॥ कजवा नाहिकल्पमहानकु वाजवजवा नाहीनामसंयुक्ता स्थितिः प्रथमः पटलः ॥ ॥
 तथा यकुचक्रप्रवक्त्रामित्वस्मर्तुं लघुविस्तु वीलि वेज्याद भले वाउ समस्तान्यदविस्तु व
 मतापविस्तु टं चकुर्विभा क्रवत क्षर्प कर्षु कायाकु सर्वतः ॥ त प्रउत्पयत नाडीं सुहृत्वा
 सुवदकुसन्निर्गतं ॥ त गस्थ समूध यकु कर्म ककु यथा वृत्तिः ॥ विस्तन वाहनं सर्वनाडि
 तानामवधं कुर्यादुचिरु कं ॥ धातवायतमान्यव भानि प्रष्टिश्चका यथ न वाकत्त चसर्ध
 म्रन्य कर्म यथा न्याय्यं भतमश्शरुयापि च ॥ अथवाया दधीवी ऊक्तप्रमा धकु कर्म कं ॥ काल
 तैरुकी ॥ ॥ अकुमिदुमिह गवनस्पति यकु लक्ष्मी उत्पन्ने च कथं द व सर्वका नेकथ गिनी
 तः प्रता ॥ कथं गिकायमधिस्थाने वाद्य चात्यक्त ॥ स्थितिः ॥ कथं क द वती नूपं कथय स्वद
 वकु नाडी नूपं कथं नतः ॥ कं न नाडी प्रमातस्प भात्री वपि तु तः कथं ॥ समय संक नकु म

देलाहस्प कथं निमिरु दर्भने कथं क द भ कर्म मकु जापं कथं र वत् ॥ अक्रमाला कथं पक्ति
 थं द व कोमा नीतर्प कथं क क दिवसन वरु वी अलिवलिकथं प्रता ॥ पंचामृतादिकथं द
 मिसेर भाध्वं नक्रा चक्र कथं र वत् ॥ कं न वा नाहिकल्प स्थिति गिनी ककु कथं र वत् ॥ आचार्य
 रायूरग कथं सिद्धि वर्षा वा नी कथं र वत् ॥ कं न वा नाहिकल्प स्थिति गमकु कथं र वत् ॥ कथं म
 कं न नाय कथं द व मयपाने कथं र वत् ॥ मकु दयं कथं द व मकु दयं कथं र वत् ॥ नि
 ॥ कथं ॥ कथं भूयस्व हावत्वं क नृत्ता कथं स्व हावकी ॥ द वी नूपं कथं नाम वा नाही लक्ष्मी वलि
 व नी वकु वा नी ही ऊक्त कथं त ॥ धितीय यकु वक्त्रामिला कानां हित कामपया ॥ य व र्ण ह का
 ॥ ता ॥ ००० अश्चल उ अगान न ॥ ००० स अ उ उ अ न मि रु ॥ अ ००० ० ० अ स नापि हि अं गु हा
 गहन वग्न पक्ति अश्च वन क उ स नूप ॥ ००० य स च उ लु वि अ वी ॥ ॥ सं अ ल ००० ना अ स हा

व्यंजनान्यष्टमासकठसंपूर्णनवमासनचक्रनादभमासकठकललादकाहद्रूपधाम
चनस्यापिपंचाकाचकुदभयन्त्रक्रास्यमृदवक्रस्पमिनाहृद्रूपधामपिपंचमाचक्र
वामभुक्तविज्ञानीयादृक्किंस्वत्वमवचनान्यामीलितमकत्वधर्मधामस्वतावकठक
वतिनिश्चितंउत्तयार्मस्वगतंवीजनपुंसकंसदाहवत्त्राष्टपेदिकाहृयातकाध
पिर्लुवजसत्ववचायथाद्रूपवदनासहसंस्कावविज्ञानमवचनपंचवृद्धस्वतावकुस्का
तत्कत्वपविज्ञानंकथितंतत्त्ववादिनामृत्तुसंख्याश्चकसेवउत्पलिकूटिलवादिनास
तिश्रद्धाम्नाहगचउपनिश्रुताप्रश्रवकाहृद्रवत्वाश्चनमकंनमकंनमकंशिश्रुता
मह००३॥हृ००॥नचक्रवकु॥चमकगह००॥श्रुताउजहृद्रूपश्रुपचमसंदराचसमह
क००॥जानसवृश्रुजवीडाउकुलश्रुनकुभयवदृ००॥जावसकजीन००॥दि००॥ग०॥च

[illegible]

कात्तुपक्षमृद्वदं नलसंतं वं पभीमृमि तनाथस्य घनामृमाघसि दय ४॥ पभादवावेभा
४॥ पंठमाकुरु नलसंतं नमिधवे वाचनस्थित ४॥ घनामृथानिमरुधु वामदक्षिणस्थित ४॥
स्वतावक ४॥ कर्मबीजवभात्पात्र ४॥ वायवापनि वल्लुच ४॥ धर्मादियाभिधा नातिमतिमृद्वर
४॥ रूपातजाधुश्चमारुका ४॥ त्वमात्मश्च वरुश्चमारुका ४॥ तिकथत ४॥ एवंषट्कोषिकं
४॥ स्वतावकुक्क ४॥ त्वलि विनिश्चिता ४॥ जभात्पलिकमंस्तत्तासंमर्कं वृद्धमापुयात् ४॥
४॥ लवादिनासाध्यस्य नाममादाय पश्चात्तु न संद्वय ४॥ ययव ४॥ हव ४॥ आसन् ४॥ अपह
४॥ तमऊ ४॥ शिन्नुडादाजडा ४॥ अथ ४॥ न ४॥ स ४॥ अ ४॥ निम्मादिविस्मदा ४॥ पपकू ४॥ सह ४॥ अ ४॥ ल ४॥ अ ४॥
४॥ द ४॥ अ ४॥ स ४॥ म ४॥ रू ४॥ अ ४॥ ह ४॥ अ ४॥ व ४॥ स ४॥ ह ४॥ ड ४॥ ग ४॥ य ४॥ व ४॥ त ४॥ द ४॥ ल ४॥ ४॥ ४॥ ति ४॥ नि ४॥ र्वा ४॥ त ४॥ सि ४॥ व ४॥ सि ४॥ अ ४॥ ड ४॥ वि ४॥ स्म ४॥ ह ४॥ म
४॥ ४॥ दि ४॥ ४॥ ग ४॥ च ४॥ व ४॥ घ ४॥ ४॥ ति ४॥ ४॥ ज ४॥ वी ४॥ ड ४॥ त ४॥ द ४॥ रू ४॥ ४॥ त ४॥ व ४॥ अ ४॥ वा ४॥ अ ४॥ य ४॥ ४॥ ना ४॥ च ४॥ उ ४॥ ल ४॥ हि ४॥ अ ४॥ अ

अ ४॥ अ ४॥ स ४॥ द ४॥ न ४॥ स ४॥ ती ४॥ र्क ४॥ त ४॥ अ ४॥ ह ४॥ न ४॥ ४॥ त ४॥ म ४॥ ह ४॥ व ४॥ ४॥ स ४॥ ज ४॥ व ४॥ ला ४॥ अ ४॥ ४॥ ल ४॥ ग ४॥ ह ४॥ ४॥ अ ४॥ ड ४॥ उ ४॥ व ४॥ ह ४॥ च ४॥ उ ४॥
४॥ ल ४॥ घ ४॥ मा ४॥ क ४॥ न ४॥ अ ४॥ अ ४॥ ज ४॥ न ४॥ ४॥ वि ४॥ त् ४॥ ४॥ स ४॥ व ४॥ वा ४॥ व ४॥ स ४॥ क ४॥ स ४॥ हा ४॥ अ ४॥ व ४॥ मि ४॥ अ ४॥ व ४॥ ध ४॥ मा ४॥ अ ४॥ ध ४॥ म ४॥ नि
४॥ च ४॥ हा ४॥ ४॥ पू ४॥ ना ४॥ य ४॥ व ४॥ न ४॥ द ४॥ रू ४॥ ४॥ अ ४॥ अ ४॥ ब ४॥ ड ४॥ इ ४॥ ड ४॥ ४॥ व ४॥ म ४॥ ४॥ न ४॥ अ ४॥ प ४॥ सा ४॥ ड ४॥ ४॥ य ४॥ ४॥ अ ४॥ ग
४॥ व ४॥ ह ४॥ ४॥ न ४॥ अ ४॥ म ४॥ ला ४॥ ४॥ म ४॥ ऊ ४॥ त ४॥ रू ४॥ ४॥ न ४॥ स ४॥ च ४॥ वा ४॥ अ ४॥ अ ४॥ व ४॥ रू ४॥ सि ४॥ अ ४॥ ४॥ च ४॥ नि ४॥ न ४॥ अ ४॥ म ४॥ उ ४॥ द ४॥ अ ४॥ व
४॥ था ४॥ ति ४॥ नि ४॥ वा ४॥ स ४॥ि ४॥ व ४॥ स ४॥ उ ४॥ स ४॥ ४॥ ड ४॥ त ४॥ रू ४॥ ग ४॥ि ४॥ अ ४॥ व ४॥ स ४॥ न ४॥ अ ४॥ ४॥ नि ४॥ क ४॥ वा ४॥ मि ४॥ स्म ४॥ हा ४॥ व ४॥ ४॥ ज ४॥ न ४॥ ४॥ ति ४॥ नि ४॥ व
४॥ य ४॥ ल ४॥ ४॥ म ४॥ ह ४॥ ४॥ स ४॥ हा ४॥ ४॥ अ ४॥ ध ४॥ वी ४॥ व ४॥ द ४॥ का ४॥ अ ४॥ य ४॥ व ४॥ ह ४॥ क ४॥ ४॥ अ ४॥ ह ४॥ न ४॥ स ४॥ क ४॥ वा ४॥ अ ४॥ ड ४॥ अ ४॥ हि ४॥ न
४॥ क ४॥ स ४॥ रू ४॥ व ४॥ स ४॥ वि ४॥ म ४॥ ४॥ अ ४॥ उ ४॥ त ४॥ स ४॥ मा ४॥ स ४॥ वी ४॥ ड ४॥ अ ४॥ व ४॥ क ४॥ रू ४॥ ह ४॥ वा ४॥ म ४॥ च ४॥ ल ४॥ ४॥ क ४॥ ल ४॥ ४॥ अ ४॥ अ ४॥ क ४॥ ग ४॥ म
४॥ ४॥ ४॥ ति ४॥ धी ४॥ व ४॥ ड ४॥ वा ४॥ ना ४॥ हि ४॥ क ४॥ ल ४॥ म ४॥ हा ४॥ त ४॥ क ४॥ वा ४॥ ज ४॥ य ४॥ क ४॥ च ४॥ ड ४॥ त ४॥ लि ४॥ वि ४॥ ती ४॥ य ४॥ व ४॥ त ४॥ ल ४॥ ४॥ ४॥
४॥ म ४॥ य ४॥ लि ४॥ त ४॥ ४॥ रू ४॥ ती ४॥ य ४॥ च ४॥ क ४॥ सा ४॥ म ४॥ र्क ४॥ क ४॥ र्म ४॥ क ४॥ र्प ४॥ या ४॥ य ४॥ र्थ ४॥ पि ४॥ तं ४॥ मा ४॥ हि ४॥ तं ४॥ मा ४॥ य ४॥ या ४॥ स ४॥ र्वा ४॥ क ४॥ र्म ४॥ का

五

दलाका बँवा बाहीमधुलाधिपध्वा ॐ श्रीगुरुं ॐ निमकुनकायवाक्किलमधुलैः स्वर्गमर्त्यच
तुसर्ववीनसमायागकालमूर्खीमरुसत्सुखैः चत्वा बाधातवठस्कन्धषष्टिषयात्मकास्त
वभूयतातथाग्नेवात्मातथताविश्वमूपायकब्रह्मावलक्ष्य यूगनद्यमहातागमधुलथाग
वाकाबसूध्विद्विष्यध्वातावरावात्मकैचेवरावैकत्वानित्यादितठ्ठाश्रुनात्रापमनातागैनित्या
स्वैवद्यमजानकमपस्यकैनिब्रुपत्वादकूटस्थनिर्गुनदविकात्रतठ्ठा। नचातावाप्यनूत्त
मस्थानैस्वर्यैरुत्वादनाहतमनाधनठ्ठाश्रुनूत्मादत्रसावधारावनापितथाविधायाप्रह्वेव
हासुखातिर्सेवाधिर्महामूजापत्रातथाधर्मतत्त्वावकात्रायतत्त्वातदैप्रदर्भितैः। सङ्कुवा
त॥ कायवाक्किलसैकर्मसर्वाकात्रेकथागिनीं। वाबाहीसूध्वचबँवाधिमवाव्यमनिदर्भ
४सङ्कुवा४कोशलात॥ ॐ ग्राहगवाँवजीरुमिद्यादभति४प्रलु४श्रुद्रवषूचपी४दि

अकितपत्रतलगाशासत्वमस्यतसर्वमसत्वस्यादिदं वध्वाननवहं वदाहत्वा मायास्वप्र
जवावाहिलकृतीयश्चमपूचचकपूनिर्वादीकथनपिचमावहीसर्वदवादिमाचनकप्र
सनूअंसुत्रमूअमसिमुडाअम्राव० पूजि० अतस्मात्सगाह० असाहा० अउभावा
हवक० अमम्रावपूज० अडाअमिजाल० सानम्राधव० वीडाचव० महपउम
अ० विम्रावम० हक० गाह० अवीडातिस्त्रिवावसि वसिउमम्रावमू० तिऊयस
ऊ० मलुअम्रावमतिनिहानिहनिअहं वहव० माअसहायम्रायवीडा० म
अमाकगतमका० पूनू० अमवडाअकिपहकाअम्राव० हदअविउमउयह
तिपदिअम्रावमच० अवीडामसानुतदक० अक्कलू० रुक० अनिस
सअनूउपज० विअर्क० सवहह० तिनिवीडालयमस० चिकष्य० आसावड

विकवीगाय० स० दअउअविदवसासुमायमल० दसवकम० अउभाजसय० कुषयासच
नाहनू॥ नमक० तिकिवाधसिबहउास० अउनिवदिअधमम्रधमसवम्राधयडाव
वस० विनिवडाजालनमम्राहउमसम्राव० सवाहिनअउसिहमहिसम्राव०
कुधव० वीडासउस० उउआवलदककुजानुवैपअचउअदसहमअवकुसकुसक
चकरुतीय० पटल० ॥००॥ हगवांवीजीसर्वरुतरयंकव० मकुसहाववृपात्म
कवृत्तात्मानंमावर्धनचमावर्ध० कामक० वडावयसनूअमवनिधममिअम्रावविनि
नातवहहसमचउल्लथिअमपूज० अउभाधमनूवा० अतकुमविधुतिनिवाधउसिअ
निमरुपअउतिनिहनिअहं कययउवाहनतउमकथासंलमत्तुवनिधुसवम्राव
उसमसहाव० अमनम्रावपूजुमवम्राव० गुहाह० मका० मम्रावमम्राव० ना० निस

हत्वा माया स्वप्रसूता गतः ॥ ॐ दंय कुमहा राग कर्मा धां च यथा हवः ॥ वामपस च हत्वा व
दिमा च न क प्रसर्वदा ॥ ॥ अहः ॥ कवर्ग विचि वीडा इव विजल तगह ॥ ॐ अय दको
हा ॥ ॐ अउभा कम ऊकु ॥ ॐ अवी उभा विस ॥ ॐ ह ॥ ॐ अलग्न ॥ ॐ मरु कवी अउा सन्न सन्न अ
व ॥ ॐ मरु पउा तच उरु धि ॥ अउा अम व ॥ ॐ रु स ॥ ॐ अउा ॥ हवन ॥ ॐ अम वय ॥ ॐ स इ
व ॥ ॐ ति ऊ य स ह ॥ य द क ॥ ॐ वी उा मन नि ना डा कि अउा ॥ स व वा अ अ व च द इ उ र
गा य वी उा ॥ ॐ म धि अउा मि अ व स र ह त थ अ ग ह न कु ॥ स अ व ॥ ॐ रु रु ॥ ॐ सि ह रु ॥ ॐ
॥ वि उ म उ य ह ल ग्घ ॥ क विस मन ॥ ॐ अ प स अ वा ति नि स व उ स ॥ ॐ अ वा व ॥ ॐ प्र म ॥
ॐ उा नि स हा सं र ॥ व द को ॥ ॐ अ स व प्र लि अउा म ना इ स च ॥ ॐ म ह ह न ॥ न उ अ
य ॥ ॐ उा सा व ड ॥ ॐ अ प ह अ ह न ॥ त च ॥ ॐ इ ॥ ॐ क व ल रु य न म कि वी अ न ॥ प व अ

ॐ रु स या स च ॥ ॐ उा वी उा ॥ न क र्क ह व धा रु न ॥ ॐ उा उ ना स ॥ स अ प उ ॥ ॐ अउा स स उ उ क य
अ ॥ ध य उा व ॥ ध न अ म रु ॥ स व अ स हा अ ॥ त द र ॥ ॐ ग ह ॥ ॐ अउा न ॥ ॐ ता ॥ ॐ अ ता ॥ ॐ य
अ अ स ॥ ॐ म रु उा स अ ल स ॥ ॐ ति व ॥ ॐ प द रु ॥ ॐ अ उ स ॥ ॐ क ॥ ॐ उा मा ॥ ॐ व ॥ ॐ स र स
कु स रु स रु ह अ न ॥ ॥ ॐ ति श्री व ज वा ना हि क ल्प म हा त कु वा उा वा ना ही स म य ॥
स हा व वृ पा त्मा ॥ धि स र हा व का व क ॥ च क स र्का व वृ पा त्मा वा ना ही क ल्प रु प ॥ ॥ ॥ अ य ता
अ अ स वि नि स च ॥ ॐ अ त स वि न क ल ॥ ॐ स व ॥ ॐ उ उा इ धि त उ र ॥ ॐ उ न ॥ ॐ अ व वा अ
वे वा उा ति अ अ स क ॥ ॐ इ ॥ ॐ नि ह द द अ उा ॥ ध म का ॥ ॐ उ स ॥ ॐ अ उा इ व स ग न र्से र
॥ स व अ ॥ ॐ ह म का ति नि ह र ॥ ॐ इ व द ह उ जा य नि न स म ॥ प व अ ॥ ॐ इ क व ॥ ॐ इ उ ॥
ॐ ता ॥ ॐ नि स न्द ॥ च व स ॥ ॐ अउा प म उ म रु प प्य अ ॥ ॐ उा ग ॥ ॐ न स म ॥ स अ व स च ॥ ॐ अ

[illegible]

2

॥ हसननं मकुगविसहब्रह्मलक्ष्मीं जालं तिजासं मकपउमनं विसउजा
सबवउं मकपउकऊहविजानवकाश्चाहवमनाप्यानविस्मउलक्ष्मीं मिलं
सद्विसम्रउासदहसयकाततिनिं विजानवमं मरूपम्रसउकाश्चं मिस्मउास
लथागमत्माविसयदियादिमात्रक॥ यथाकुसत्वानामुत्पलिविषयाम्बुजायथाक
ऊनं साधकास्तेनसावकुतउरकुपूकर्मक॥ सवभाषसबश्चाहनायवधुद्विन्दम
म्रब्रह्मिन्निकमहताउाप्रश्नायं समम्रम्रधतंसहम्रइं नियदिम्रसिधं नमरूप
हववं ऊमधिवादकं पवयस्मवउत्कवीउा॥ सिबहलग्नउमसमरूपम्रनहस
मेकसंपवक्षामिचउसूर्यपतदकठवामदक्षिणथागनवहतंचयथाक्रमं कथादा
तद्वतानाहवावत्यसथानपवृत्ताक॥ द॥ त॥ नाडिकाईमूखीसूर्य॥ कालिश्वाक

सदावहारावामनाडीप्रवभासुखानिष्काभपदतिनासावधुदयंकात्रंयनाडीप्रमान
हवन्मग्नहर्भिसमहानाकंप्रहयायामउच्यतेनचक्रुर्ग्यामदिनेविद्याचक्रुर्ग्यामकथानिभा
यासदाप्रतिपदंस्मानत्यसितावायूदिनकयं प्रावृहतिर्यथावस्यंचदभीतिथि
यतनचक्रुर्ग्यामदिविद्याचक्रुर्ग्यामप्रमातकभदरस्यार्धनाडितप्रर्धसामान्यंनृतिस्मृत
गविचक्रुर्ग्यामप्राहोपंचभतषहिःस्वासेक्तिहिसुत्यादसंयुतेभउरुवायानकालस्यद
वृद्धिजानीयात्कालहृदतथास्वासेहसपादब्रूयैप्रतिसंक्रमनस्यवृद्धिनिजासोभ्यस्युक्त
यातृगाकलहादिरुवन्नूनंमठसंलक्ष्यंस्वधीगाचकदिदिचक्रुर्ग्यामपंचषष्टिनानिविपर्यय
मरुवधपक्रुर्ग्यामविपर्ययासान्द्रहृद्वधविपरुवतृगापक्रुर्ग्यामविपर्ययसमासेषहिस्मृति
कचन्द्रमायदापोहनामाकदाकालान्मूर्तिर्निचयकात्रकथायजनासोनवाजातकस्मा

मार्गान्कर्गत्सततगामिचकालंनिबृपयधीमानिचक्रुर्ग्यामवक्रुर्ग्यामयजवलाक्रुर्ग्यामवाय
दिनार्धसलदिनमथाहर्निर्भयावदवतस्मादक्रुर्ग्यामयजंविदिनमथचक्रुर्ग्यामसनाद्यप्य
यजुवतनविदिष्वाषष्टिधंचपंचस्य४पंचभदिवसगविहानाहर्नपंचवृद्ध्यातस्माद
४षष्टिद्युग्मन्दवाममासाकुरुनिष्वाक्तिथिदिभिषुगुलद्विन्दवाजीविनेषुविपूटंच
तृगापंचाहपंचविंशत्यावक्रुर्ग्यामपूवाहनाभनाक्ता४षाउभसंख्याय४तषासाधनमूच्य
हन्मूवत्सवेभब्रूजक्रुर्ग्याममंध्याद्यदिनानिप्रविपानित४गागुलपाफचक्रुर्ग्यामविंशत्यहस्य
नविंशतिचदिवंकमातृगुलितर्कदिनमूनादवतिवर्षाद्यमात्यय४मूकतपतिकाला
ने४षष्टिर्नूनातषासासतामृति४विपूटंचक्रुर्ग्यामलित्वद्यार्जिभक्रुर्ग्यामसंयुतं४तृगाभस
थाविधिवदंचनंमन्त्रायदिदृक्कथ्यतंपदं४नाडीसंसाधनंतावक्रुर्ग्यामयायंविभ

99

वलाङ्गलवायागतिनयप्रवर्तनतत्रवलाङ्गलधूर्धुमवर्दीस्यान्नसंभयः॥आदौकृत्वा
 दुर्वासनाद्यप्ययावत्॥प्राक्षानायाधिनाथावरुतिदिनपतन्नुक्तमसवरीनतस्माद्विरू
 द्ध्यातस्मादकारुवैद्यजिगृहिकदभक्तंशूलवयावदव॥पोष्टसमाकृत्तिनयनभभिन
 पूजिपूटंचक्रमालिख्यसफटिंभक्तुहन्तिनंश्रायूषष्टप्राशिवाथाश्वविनालव्यंकमालिख
 तांसाधनमूच्यत॥षष्ठास्तनवारुनियदिवात्यनिलकमात॥यद्यप्यपचदुर्विभक्त्यनेव
 दुर्विभक्त्यहमूनर्धिवत्सवे॥षाड्भाहंतथसफदभाहंवातिमात्रुत॥श्रृष्टादभाहमका
 ततप्रतिकालायंभममतिनसंभयः॥एकद्विजिचदुर्विभक्त्यहंवातिमात्रुत॥श्रृष्टादभाहमका
 त॥तत्राश्राद्धवाथाश्वसंख्याकससमालिखत॥इत्येनानिसमलदिमृत्पालिङ्गसर्व
 र्गघायंविभक्त्ययत्॥प्रभुर्कमसायागीयचोयत्वापूनर्पून॥पिधायिकाजिकाघात

११

वनप्रसन्नविर्भा। माहउमधुलंवहतेवायूवलसेतवंसदा॥ तदामन्दप्रचान्मुभितकन्द
सर्वचक्षुषदर्मक॥ वेनाचनस्वतावासीमहावायूपकीर्तित॥ मानूकंगध्यधागिप्र
हजापनपनिपूरुनसाधक॥ नक्षायनपिपंचादांनजीवनानुसंभय॥ पातवृत्त्यप
सूक्तधारणनमस्तु॥ जयतिसर्वदा॥ श्रुपूर्यवायूनासर्वमापादकलमात्मवित्॥ सुक्त
सुक्ता॥ धृष्टकुजिगुल्लय॥ सुक्तकस्तनजायतविधायक॥ सुक्तपूर्वश्रुतमनाजानूम
नवन्त॥ सुक्तकक्रिया॥ जिगुल्लय॥ सुक्तकस्तनजायतविधायक॥ सुक्तपूर्वश्रुतमनाजानूम
कंस्थवोरुत्पनिनाधनारतिष्ठत॥ तस्यकल्पसहस्रात्मिन्त्युनायातिसंनिधि॥ रुदया
देति॥ संसात्रुर्धरावायूनिर्वासेस्यादक्षगक॥ श्रुपतिष्ठतिनिर्वासेरुदयांतान्
पंपदमापूयात्॥ वायूधागंनजानातिधाहृत्वापिक्रान्तिन॥ ससंसात्रस्यकिंनस्याना

नाइ० वेत्तुपडन०॥ गतागतं चयावायं लङ्गयत्सु ब्रह्मिमान् वायनाधिष्ठितं सर्वं वायु०
साकर्मसासहजात्क०॥ उत्पत्तिश्च त्रसूर्यादिंचकाकावस्वरूपक० चक्रीनवर्तुश्चेवध
धनवर्षाश्च धूतलङ्गधी॥ ५ ॥ सहस्रवीचमरूपउ॥ तथश्च वज्रगुधश्च॥ ०० नरुव
रुध०० हचर्मदि॥ तिलाश्रुतासति०० समका॥ इपूकवाचिश्च०॥ सतसहस्रकथा००
द्विन्दुस०० अ०॥ अ०॥ उ०॥ सहस्रउ०० मरु॥ सश्रुलहदु०॥ मरुसहाव०॥ अ०॥ मरुपउ०
कल्पमहातनुवाजचतुसूर्यादिं हूनाचकप्रयागपंचम०० पतल०॥ ॥०० आहहगव
उक्ताश्च यागिनी मरुपूकर्मपुस्रसिद्धिदं॥ अ०॥ चकप्रयागनसिद्धिदं॥ नान्यथागवान्॥ प्र
रुवी०॥ पापमरु०० वी०॥ प०॥ व००० विजाल॥ दृ०॥ उ०॥ दी०॥ व०॥ मरु॥ सिंह०॥ अ०॥
अ०॥ तिलाश्रुउद०॥ प०॥ प०॥ व००० ह००० सश्रुलउ०॥ अ०॥ स०॥ ड०॥ ल०॥ अ०॥ व०॥ ग०॥ ह०॥ ति०॥ नि०॥ प०॥ उ०॥ म०॥

पकनउ०॥ अ०॥ ति०॥ नि०॥ अ०॥ व०॥ अ०॥ सं०॥ रूप०॥ उ०॥ म०॥ र०॥ स०॥ क०॥ र्म०॥ अ०॥ ला०॥ अ०॥ जा०॥ न०॥ त०॥ म०॥ उ०॥ अ०॥ ति०॥ म०॥ न०॥ ह०॥
त्वज्जनि०॥ त०॥ स०॥ दं०॥ पू०॥ वा०॥ प०॥ ति०॥ श्र०॥ मार्ग०॥ र्म०॥ व०॥ च०॥ व०॥ ज०॥ ध०॥ वा०॥ न०॥ व०॥ मा०॥ या०॥ का०॥ म०॥ श्र०॥ मा०॥ या०॥ च०॥ स्वा०॥ त्मा०॥ ति०॥
म०॥ ला०॥ सा०॥ नि०॥ व०॥ अ०॥ नि०॥ वा००० नी०॥ ला०॥ आ०॥ ना०॥ व०॥ द०॥ न००० प०॥ उ०॥ वा००० नि०॥ ता०॥ ना०॥ ला०॥ अ०॥ स०॥ रू०॥ क०॥ र्म०॥ र्म०॥ रू०॥ द०॥ म०॥
अ०॥ स०॥ रू०॥ म०॥ रू०॥ प००० त०॥ ति०॥ अ०॥ क०॥ म०॥ क०॥ व०००॥ अ०॥ थ०॥ त०॥ स०॥ प०॥ व०॥ क०॥ मि०॥ हू०॥ न०॥ ह०॥ मि०॥ हू०॥ मि०॥ पू०॥ स्व०॥ प०॥ वा०॥
म०॥ धु०॥ ल०॥ स०॥ ह०॥ स०॥ च०॥ वा०॥ ल०॥ रू०॥ य०॥ च०॥ वि०॥ च०॥ रू०॥ ॥०॥॥ भा०॥ ति०॥ पू०॥ र्मि०॥ व०॥ सा०॥ क०॥ र्मि०॥ मा०॥ व०॥ ला०॥ च०॥ ट०॥ नं०॥ त०॥ थ०॥॥ त०॥ स०॥
य०॥॥ म०॥ ह०॥ उ०॥ त०॥ ह०॥ व०॥ जा०॥ रू०॥ वा०॥ त्र०॥ स०॥ न०॥ ध०॥ ना०॥ र्थ०॥ द०॥॥ द०॥ र्मि०॥ ॥०॥॥ प्र०॥ स०॥ वा०॥ ध०॥ उ०॥ रू०॥ त०॥ रु०॥ क०॥ म०॥ लु०॥ तं०॥ च०॥ व०॥ त०॥॥
सं०॥ स्थि०॥ त०॥॥ ह०॥ वि०॥ त०॥ स्या०॥ म०॥ सं०॥ का०॥ र्म०॥ ना०॥ थ०॥ स०॥ च०॥ व०॥ त०॥॥ दं०॥ द०॥ स०॥ प्र०॥ स०॥ वा०॥ ध०॥ उ०॥ क०॥ न०॥ क०॥ व०॥ रू०॥ स०॥
सा०॥ वा०॥ त्र०॥ स०॥ म०॥ धु०॥ ली०॥ शु०॥ द०॥ रू०॥ टि०॥ क०॥ सं०॥ का०॥ र्म०॥ व०॥ ज०॥ ना०॥ थ०॥ स०॥ च०॥ व०॥ त०॥॥ सर्व०॥ ध०॥ उ०॥ स०॥ म०॥ हू०॥ स०॥ आ०॥ वा०॥ धि०॥ ति०॥
जा०॥ ना०॥ ति०॥ क०॥ र्म०॥ क०॥ र्म०॥ न०॥ सि०॥ द०॥ य०॥ त०॥॥ मार्क०॥ का०॥ न्य०॥ जा०॥ य०॥ न०॥ वा०॥ य०॥०॥ सर्व०॥ ग०॥ ता०॥ ह०॥ व०॥ त०॥ वा०॥ य०॥ रू०॥ त्वा०॥ न०॥

विह्वलनवाहनं चैव वृक्षलक्ष्मणमात्र्यात् ॥ नहसं सर्वतनुस्य उपायं वाधिकावतात् ॥ प्रनव
दभानं महायकुठकथितं मम वल्लतं सर्वचकर्मिकं यकुं दारणे ॥ सहकावयत् ॥ उक्ते क
॥ पहकासवनाश्रुका ॥ यहका ॥ ॥ सहकुरु उअनहतावडापहका ॥ सिधपडविद्य
पपासह ॥ उरुश्रुवा ॥ रुद्रवाहीसावा ॥ सश्रुउ ॥ उश्रुमकुनातिश्रु ॥ उश्रुविहिनासध
लिनाडीदहानुगहवत् ॥ नाडिकाउपनाडीनां तेषां स्थानसमाधिना ॥ विरामरुवधतं नाम
जयानाडीश्रुधयनिचसर्वग ॥ प्रलीमल्यतिवसिनवदकवहास्थिता ॥ ज्ञावंधवभिरवा
पृष्ठवसतिनाडीवक्रवाहिनी ॥ गगदावलीवामकर्षुनाडीवायुश्चवाहिनी ॥ वामध्वजाश्रुमरु
क्षयस्थाननाडीरुदयवाहिनी ॥ कामवक्रुक्षयस्थानचक्रवहति सर्वदा ॥ उअरुनयुगल
श्रुमकुमालावहास्थिता ॥ मरुवस्थानकलिंगपृष्ठवर्तिसदास्थिता ॥ लंपाककधदरुण

यमदस्थाननाडीसीमानकमध्वगभाप्रताधिवासिनीलिंगनाडी ॥ श्रुमवाहिनी ॥ गुरुदवनागु
धस्थाननाडीप्रध्वदवाहिनी ॥ नगवपादकुलीरुयानाडीमदसदावहा ॥ सिंरुषपादपृष्ठ
लजातानूवथास्थित्वाचालसिंहानूवाहिनी ॥ तेषां मरुस्थितानाडीललनामरुवाहिनी ॥ द
ध्वगभाकदलीपूष्पसंकाशालम्बमानात्वरुमरुवी ॥ तेलीवंक्रिनिवादीपावाधिचिरुसमा
नायाश्रुनाडिका ॥ श्रुतवाधयमन्यागंगसिंधुपवापगभा ॥ तावयानिनायस्रुवकीरु
याललनायाश्रुनाडिका ॥ ललनाप्ररुस्वहावनवसनापायनसंस्थिता ॥ श्रुवधूनिमध्वद
श्रुवधूनिधर्मकाय ॥ स्यादितिकायसंमर्ग ॥ उतानाडिकां सर्वोत्तरीवधुतवाविधी ॥ तस्या
नस्मादचिरुयागनतयतामयसर्वगभायनयनप्रकावधपिधुतीतप्रदस्थिता ॥ नन
रुत ॥ वीजाश्रुवधुर्विभपत्नीनादिउविधित ॥ श्रीहनुकवजवावाहीनरुतानरुविष

महाकृत्वा प्रनृवाचरुगवान्मरुत्पववस्थितः प्रभवदलमकोकमरुवेर्मज्जुरुकः ॥ वा
नयत् ॥ उकोकलुमहाचक्रं कुर्याद्वेपथकर्मनः ॥ लस्यद्यादभकदवीसाधयत्साधनामको
स्थिपडविद्यपडस्विमकाभयपासउटवीउरुवलिन्द्रविन्दउसन्नापूरसावितरिभ्रुकं
श्रविहिनासधनाउसहकश्रुड ॥ श्रथागः संपवक्रामिनाडीचक्रं यथाक्रमं वासफतिसहजा
रुवभर्तनामनाडीप्राधानमूर्चनगनाडीस्थानं चपी० चरचुर्विभत्यमाधनः ॥ नैषांमरु
जाबंधनभिरवास्थानं कथयामसहवहना ॥ उदियामदक्रिधकार्धुनाडीत्वमलवाहिनी ॥ श्रवद
म्वनाश्रुमरुश्रुस्थिवहति सर्वदा ॥ दविकार्धस्थिताचक्रनाडीवृकश्चवाहिनी ॥ मालवस्कन्ध
उक्तनयगलनाडीपिरुवहासदा ॥ नातिष्ठिभक्तनिस्थाननाडीरुद्रसावहानकाभलनासिका
ककधदरुणनाडीउदववहासदा ॥ काश्चित् हृदयस्थानप्रनाडीविमनप्रवाहिनी ॥ हमात

गुरुदवतागुडस्थानसामान्यपूयवाहिनी ॥ सोमाश्रुडनयगवस्थितिर्नचसदावहा ॥ सुवर्धुजं
संरक्षोपादपृष्ठस्थानश्रुश्रुर्वहतिवृषिधी ॥ मन्त्रश्रुगुहयास्थानावटवर्धिप ॥ हतिसर्वदा ॥ व
ज्रवाहिनी ॥ दक्रिधनसनाख्यातानाडीचक्रवाहिनी ॥ संवृत्तामध्यागचक्रत्सनाब्रह्म
विचिरुसमावहा ॥ सावधूनीतिविरूयासहजानन्ददायिका ॥ प्राधान्यक्ता ॥ सर्ववीजानां लल
सू० ॥ वकीरुक्ता ॥ खगाननसंतागकायवृपास्तजानीयादहमाधिता ॥ क्षिप्रक्रियांप्रधाना
वधूनिमध्वदरुणदुयाकाय ॥ हकवर्जिता ॥ ललनासंतागकायाथा ॥ वसनानेर्मासकीननू ॥
विधी ॥ तस्यासमूहसंज्ञाना ॥ पिलुकदवतात्मका ॥ वृपागीर्तवत्पिपुलीपिपुलीतंचदवता ॥
स्थिता ॥ ननकल्पयतांपाप्यथागीवृद्धत्वमापूयान् ॥ श्रथपावाचरुगवाचर्धिकाद्यादरु
रुतानरुविष्याति ॥ श्रस्पमकुसुमसामर्थ्यपार्त्तीकाटिसहस्रक ॥ गच्छन्तनवावप्रतथासा

शत्रुपञ्चमना तथा गन्धर्वान्ननसर्वसिद्धिततात्परिकौ प्रवभका न स्वासकुमा
 त्रुया एतद्वर्तनं ब्रह्मकं स्वासचा न वज्रवा नाही मगम्बालयागिना अतिप्रकंथ
 तामधुलं वल्यत्सर्वका नाही मथह नृका ४ प्रह्व प्रवभय रू वज्रकं पामथा न्यात्मा अन्म
 वकं गहना का नाश्च वा नाही ह्यालिंघ्या ह नृका ४ विन जा यो प्रपिष्ठा च रुर्मवा प्रथुत्क
 तया निविप्रहा ४ दक्षिण वज्रकर्त्तु अपवधुदम नृकं तथा विभूलानं गज चर्म च वाम
 ग्राश्च मधुमाला दुधा विकाशं गन्धवा ह वरत्नयूका ४ कपालमालिका मूयत वाग वज्रनम्र
 मरुषि पट्ट चन्द्रश्च वज्रकं ललाटं च सदा धार्यं प्रत्यालीरु पदान्चिता ४ कालामाला रू व
 त घृचर्म निवसन पंचमूजा विरूष ४ कपावमालिना वी वविश्व वज्रा र्च चन्द्रकं विनर्जं
 ४ यज्ञपत्री तहस्मि च कालो माला कलादि हि ४ यानि मूजा द्विहस्तं वज्रवा नाहि वि

चर्म पनाट नाह नृक स्पष्टि हस्त पूदन चर्म सुधात्रिक ४ उपाय प्रह्व त्मकं यागं महासूत्र
 जाकि न्यादियथाक्रमं दातव्यं सर्ववीनाश्च वधु कपालमकुविन नृकं कासापित रुं यथा
 ती स्यात्समवसं यज्ञ नृगा ४ विचक्रं विगुणिना देव्या जाकि न्यादियथाक्रमं ह नृकं वज्रवा
 ॥ ॐ ह्यविस्तृक्त नदिक वदउ नृकु नृन ॐ सह स्थान ह ॐ सद्रुप पत्रा अगस्त्य ॥ अत्र
 त वीज स्पष्ट दिविन्य स्पष्ट वक्षसं ह नृसादिकं ॥ मधुलं च समानीय पूजा पापदमनादिकं
 नृक्षेत्र उपायिका अत्रायं सर्ववर्षु त नृहिसुन्द नि ४ वलिं च दापय रू व पूजयत्ये च मादिकं
 मर्द मन्त्र वे ४ वहत्यर्ध मूवाना जी तथा गता ह्न नृक जं ४ जाकि न्यादि समस्तं उदहति ह्न
 यागी वज्रवा नाहि नायकी ४ सर्वयागि समायाग ४ वज्रसत्त्व पत्र सूत्र ४ ॥ ॐ मिथी व
 मठ पटल ४ ॥ अथातः प्रवक्ष्यामि यागिनी नायकादयं यागिनी यागमाधिरु

गवानुकीउनाप्रवावाकानकनूपश्चस्त्रनिताजालजालसंवन्कायलावश्चतद
न्दिनादीचचउर्थसहजपकानतमयास्त्रमार्गवखुवाद्यादधमध्वकतभाप्रव्वीदस
पदमाश्रयातमहाजम्बूदीपदम्पावखुवाद्यादधमध्वक॥प्रव्वीदसमास्थितादवीवाहि
कदवीवावाहिपिपी॥विज्जानकवर्षुउजिनजानकवकिका॥इडाबोडकलालीचपं
लिधानादक्षिणकर्किधनितावामेकपालवद्याईस्त्रवत्सहाववियही॥मरधमधुलस
धीउंक्ज्जहउहकिन्नीवृथइंउहंकीरुलीजाइसैस्वातहावहंरुहस्वाहा॥मधुल
तभावावाहीस्त्रानमासाययागिनीतकतिष्ठतिस्वाहागमयमूखादित्याधफजिधतिदव
यनमहास्त्रातमधिकावंजकितीयस्माकुकजकिनीकलीपृथग्महंस्वयास्वामिकथम
स्त्रिबनष्टकतिस्वयं॥वकावंगुधववात्माकादधुकावदधुकावभावीववृपकंसैम्प

तिनादिचकंडतत्पागतिमहाजक॥काकनकनूपश्चवपलास्त्राक्षिनिर्मितंकर्मभास
नववृपंसदामावाविस्त्रुवकिमहास्त्रावाक॥००सर्वाचमहाहृतमीधवादिउदर्भन
वचलक्यंननागभनामाकर्षयत्संम्पक्वर्षापक्षुजावही॥दवानांसर्वरुतानांवाजान
लताहूयाउत्पलिस्त्रवदीपक॥प्रक्षपायसमापत्ताशून्यताकनूभात्मनांमायाएउ
कथाजिसाहस्रमहासाहस्रयुसंचवतप्रुठमकउद्यादधवखुपूक्षातिस्त्रवृपनाय
युतंभनपाउभभभनवष्टदलेभपारलेसैकाकितिकथतघादरेभवावाउंस
जकेवधूतिविहूयाभनार्धनकुकावकंभित्तिपंचाभतिस्त्रैम्पकश्रहावाउंसकुजनं
गुप्तसहताथेस्त्रहभनवइतीसमाख्यातामूडभजकिनीमिदीगोवचनीरुचनीश्र
याचयस्याधिवासंचसातस्पदभनस्त्रुटं॥वर्षुकनसमाश्रित्यविहवलीकामथागउ

यलावश्चतदश्रयागिन्यानकत्रपकं॥ कायिकासुखमाश्रित्यविविधंजायतकृयाऽन्यान
 ॥ १ ॥ पूर्ववीदसंस्थितादव्येनसिंहवृक्षकायमहाप्रसीममधुलश्चकस्वरावाश्चवावाही
 यतादवीवाहितालयमकावक॥ उत्पलि॥ पूष्पादिप्रचनादिकापाशवाहक॥ वाक्काव्यात्म
 ॥ १ ॥ कलालीचपंचमूलातिष्ठवती॥ सवायूयामूककं॥ प्रत्यालीरुपदान्वित॥ कपालमा
 ॥ १ ॥ मरुधमधुलस्थाय्याडुसफजिं॥ अष्टावक्र॥ चार्जिभाऊवृद्धदयंवावाहीसहस्रपूठ॥ ॐ
 ॥ स्वाहा॥ मधुलयाश्चदवीनांश्रुवृक्षवर्जिकंमगं॥ वावाकायकमथनीकूलनाडीप्रभस्य
 ॥ १ ॥ फजिं॥ अतिदवताकायंस्वरूविधाकायंरूयासिधनयागत॥ सफजिं॥ अतिरुद्रश्चउत्प
 ॥ १ ॥ यास्वामिकथमूत्सयतमम॥ तापयित्वाडुगवंवावाहीसुखदायक॥ ॐ॥ अष्टमिल्यथा
 ॥ १ ॥ यत्रपकंसीमकविषयजियत्रपकं॥ वाधिचिरुमहाविन्दुगुह॥ कावसंरूकं॥ व्याप्रा

तं॥ कर्मभासर्वधरुक्षांभातित्रपमहामति॥ नानामपूचत्ररुक्तवाचासहजवृक्षवृ
 दिगुदधन॥ ॐ॥ हपिजीलसुखाचउत्पयततदालयात्॥ ॐ॥ दत्तजकिनीनामकर्मता
 ॥ १ ॥ रूतानांवाजानांचमहर्षिका॥ व॥ अतिचात्रकंरुम्माव॥ आटनादिकं॥ सीचात्रका
 ॥ १ ॥ नां॥ याएगुप्रवक्तुचिरुभूआदिभूक्तुभक्तुयक्तुसुखार्थकूर्यास्वाधिपयाग
 ॥ १ ॥ तिस्रत्रपनायकीं॥ लयलाधिकाकालप्रसंचवक्तिमहधिका॥ विरूयास्वासचात्रकुद्वया
 ॥ १ ॥ मेवहावाजंस्यान्तमद्यादभति॥ कमात्॥ लग्नंचलावर्ककृत्वाकालहतीचसंचवत्॥
 ॥ १ ॥ वाजं॥ उज्जने॥ तचवर्षुसमाख्याताश्रुकावायाडुकाककी॥ गुह्यपूतयभादरेभेजि
 ॥ १ ॥ नीरुचनीश्रुपापातालेपूचवाहिनी॥ विविधादिप्रयागिन्याऊमकुसहजास्वयी॥
 ॥ १ ॥ तीकामयागजि॥ चवृचनप्रनंतप्रमहापभूक्तानत्रपिती॥ अरुक्तंरुक्तयलुचश्रुलकं

लङ्गयत्तुं लङ्गालङ्गप्रहीनचनप्रहीनाप्रहीनकांग्रनूयहनियहनकाचयायस्य
युंचस्थिवावावाकादियागिनीश्रुतिवापाधवायूनानसिद्धिजायतस्तुटं।वेवाचन
कालतठ।सीस्त्वातंचयथाविपतिचक्रुजार्चिक्रयथाकर्म॥अथवाश्रुतिधनपूचश्रुति
त्रिविलीपरधत्समवसीसर्वमधुली॥आकारभलुनितादवीसीचादयकिमप्रुडं॥वम
वरुडुसमवमूलसुवासुनवरुडुजिमम॥आनाहिश्रुमहसहिवाधाहिवरुहवाळक
समाहिश्रुश्रुडुडुभमजावहिडुमिपडुचउकडुवीथाश्रु॥उवतिचश्रुलिनिवध
जन्निहजन्नुंश्रुनन्दंजन्वधमवतपडिहासनहिसं॥००वाहिकावरुचिरु
नायथाविधि।यनविस्तृतमाश्रुधधिसिद्धिंक्रुजायत॥सगृहपूयफस्थानविजनच
नदीगममध्यग॥वरुयत्तुलंसीमपगनूरुवरुलमिरुता।वावाहीयागिवाचाय

नामात्वरधामवीनेलीहिश्रुवाचार्यमवचरकचिहिश्रुवाचार्यलोकिकीसाधनस्ति॥कनि
न॥आचार्यपूर्वगमंकत्वावरुयत्तुलंभुतं॥आचार्याहिषिक्तागुणिनालाकानांचश्रुही
रुश्चाल्पपिसंयत॥स्वात्कर्षस्थानकर्तव्यादाताववंक्रिमान्मदाभ्यागहंनैष्टिकात्ताका
पुरापत॥सर्वरुधजपावकठवीर्यवीर्यसम्यन्निवाहीनिवहंकती॥सत्त्वसांपडि
वामांचवामपार्ष्वप्रुष्ठापयचविचक्रुसधानवंगधमयाचार्य॥सर्वकर्मविचक्रु॥निम
लक्षंभुचो।पत्रकल्पितरुस्थानप्रवग्धचासनस्ति॥अष्टकनिष्ठतदनश्राचार्यप्रु
दासंनरथेवचनप्रवग्धतथासमयसाधकसिद्धिमिरुति॥नतपांयदिप्रवग्धसिद्धि
याह्वनानांइष्टवापपडुत॥वरुनीयांनथास्तत्तासंयहपूर्येणचवंअष्टकनिष्ठत
चार्यवलिमाकर्षध्रुवुंश्रुआहितं॥पूजयदवतावाध्वदानपतर्मनसप्तितं॥अकिप

नृस्यत्तमाधीरापीतथापोरीयथाप्राफक्तुमोकिर्तंभुवि४भातमतिर्दंरुसुक्ष्माहाविवि
 लंदंरिज्ञातथा॥उत्सङ्गयदानपत्रामभुलंचपूव४सवं॥पश्चाद्वसुसंचात्रकर्मचकीविचक्र
 नाप्यधिरयत्तुपी॥अपपी०३०समंत्यभमभानवाभिनी॥वीववीयभवीसर्वरुक्ति४प्र
 नहवयुनतांदव्याममानग्रहहहुरुता॥दानपतिंचपूवसुसुमभुलंचपूव४सवं॥ह
 संग॥४वमिवसकलहावंहावतावीक्षमाभा४गुवृत्तवकवृत्ताम्४स्त्रीतचिलाम्बनाथा॥कवृ
 द॥भगमननविभुद्धहं॥शीपी०म॥ध्ववमधुलचक्रनाथंवन्दसदागुवृववंसिन्नसाननन
 वनायिकां॥दव्यावलीरुषितदहवलावीयेसदावाजिक्तसर्वग॥जं॥चक्रपनाथंसहजामलं
 वनं॥तत्तमध्ववहंसकन्दधवलव्यत्यनसर्वात्मकंसर्वहं॥भुविभुद्धवृद्धनिलयंदव्याल
 त्ययथासुखंचप्रक्षामयत्तुयथासुखंचमनात्मानं॥किलिङ्गीलीमहासुखं॥नानाकसुमाच

यत्तवमानन्दंमजामकुक्षनायतपी॥०॥कृत्तपदेनृत्पटहे०मवृत्तादितंरुक्तारुक्ताकादितिर्ध
 र्ज्वाध्वज्जदातावभुत्तचिन्तितं॥यागिनीयागिसीमित्यश्राभिष्यनपयत्तु॥४॥सुखसंपल्लि
 स्तुवर्दीमधुलाकावंसंहार्यविधिनादितं॥उत्सृष्टवलिसंहार्यरुत्तुद्धमदापयत्तु॥प
 चमहासुखात्॥००॥दं॥त्वासहागीतंप्रवृद्धंवावाहिचक्रकं॥मायापमंजुगत्सर्वस्थावनादि
 सहजायानिर्मानिकै॥धर्मकार्यंचनिर्मादीश्रादिवृद्धस्वरूपकं॥वावाहीकल्पमासायथा
 भी०उमहामध्वमलङ्घनी॥सिद्धान्तरुचवान्मानंप्रति०॥श्राप्यरुचवं॥सिद्धान्तरुचकना
 बालजातीनविह्वनं॥श्रुगचवानिर्मानिकं॥००॥आहृत्तगवात्सामीवृत्तवावाहिमात्माका
 त्यमहात्तुवाज्जवावाही॥उत्पल्लितं॥४॥सुखसंचात्रकर्मरुत्तुविधिपटल४सफम४॥
 याप्रकाशयामि०मानकै॥वृत्तसंवत्तगवांवावाहीयागसम्ब४॥हं॥याया०उसमृदिष्ट

हृद्भावाविवर्जितश्चासर्वसाधनधीदृष्टिः कर्मवर्गोपकल्पयन्तुवानपानंतथापयंताम्
 कर्मवर्गविचक्रः ४१ प्रथमं समयं संचाददूःखं सहसंयुतं ४२ ततः समरूपनिर्मुक्तमाचार्य
 सर्वलक्षितं प्रथमास्यहं दयः प्रमादी समयः प्रमादी तद्वत्वावश्रपवंप्रमादी प्रतनसत्प्र
 वपुः ४३ सर्वं कृतां जलिहृदिसंधार्य प्रसिद्धनक्तुप्रधामिता ॥ त्वसमसमं गहनसंकल्प
 लम्बनाथा ॥ कृतकृतदव्यामकतीवानृकां पाठ ॥ यागमृते कवसपानविभुचिलंपी ॥ अदि
 वंसि वसानतन ॥ अथेत्पादिमहावाक्यं यस्यानक्तुसमापिमं ॥ वन्दनां वज्रवावाहं चकसंव
 नाथं सहजामलं च वन्दे सदा सत्त्वयागसायां ॥ एका वाकृति सा वशुक्लनिवयपद्मस्य गते
 निलयंदव्यालयसुन्दरं ॥ वन्दे हं सहजामलं वनवतिं सहजादयं नायकं ॥ शितिर्गर्भकृत् सैमु
 नानाकसूमाच्च नंदहंसगमालाविरूपितं ॥ मदिनात्स वसानन्दं वज्रगीतं दुर्प्रवितं ॥ नृस्य

॥ रूकादिदिर्घाघेर्ना नावायमनाहने ॥ श्रीहनुकसभावी नवामाचववयागिनी ॥ ततः पश्चा
 ॥ १ ॥ सुखसंपत्तिस्मन्नाश्रागधुतचतसा ॥ काममाक्रादिसंपाफ ॥ सिद्धिरुवति संपदं ॥
 मदापयन् ॥ पी ० ॥ अजनिर्वासनीयागिनी गलंपृच्छत्संतापत ॥ अगता सर्ववीजासांगकृत्
 सर्वस्थवनादिउजंगमं ॥ दृग्धमानं महाविम्बं लीनाकासस्य चकजं ॥ दयैव कमहाकाय
 कल्पमासाययागतं कृपूपत्यं ॥ आचार्याचिरुवज्रश्च मध्यमानयराचनं ॥ लघुतत्त्वपद
 दानप्रत्युक्तं नानां आत्मायश्चानूमानतः ॥ ह्यं गन्तुमूखात्सर्वसंपाप्तिरुवद्वराचवं ॥
 ॥ वाहिमात्माका सर्ववीवसमायाग ॥ यजुसत्त्वपवंसुखं ॥ ॥ ॥ तिथी वज्रवावाहिक
 ॥ १ ॥ सफम ॥ ॥ अथातः संपवक्रामिहां यायादुयथास्थितिः ॥ पूर्ववृद्धेर्यथादिष्टं
 यादुसमृद्धिं पद्मसंवकर्मकां ॥ वज्रवावाहियागिण्या तथा समयसम्बन्धं ॥ ॥ ॥ माहनी

१७
 रुचंममस्वामी वज्रसमयं तद्भागतं। पञ्चचक्रं तथा बलं वज्रवावाहिकं तद्वत्। पूजां कृत्वा
 कं। संवत् जिष्णु वज्र पूज्यादं वज्रसंवत्। समयं सर्वनाडीनां ह्ययं मार्गं न तापिनां। संवत्स
 वनकपूचकपूपञ्चसंवत् चतुर्विंशति सौगतमार्गपूज्यादृष्टमार्गकं। संवत्स पूमा
 गधविद्रं च बलसंवत्सरी मकं। व्यपदभा नतिर्जकि सफमा ह्यनिसेवने काकाभादिपू
 वधुली कालत विलंप्रतिनात्यवधूतिकिं। ह्यनजकं ततात्पकिं विष्वाका बहुविद्रुता
 गमगमना रुचं। अकस्मा ह्यननेवात्स्यं महामाया कुत्रपंकं। धागठस्वचिह्ना चिह्नं चथा
 मंरक्षे च जानि सर्ववृद्धकं। मीलनं वावा कालिकं ह्यनं वक्रुस्वहा वत४। समयसत्त्वके
 ।। सर्वमना अनामकुविधं सागतिमार्गयात्। नागमाया सदा वागं पञ्चक ४ स्वयं प
 वनकपञ्चककं। एवं सफविष्वाका कुसफविह्यनल कृती अष्टि ४ पर्वतधीपाश्च प्रविष्ट

तां प्रकृतिं पूज्यं तं भा। प्रहास्व वं सर्वनामं च धर्मभा कुस्वल कृती भां जं वृद्ध तथा ह्यनं वज्र
 वीवतत्वं श्रीवावाहिकत्वं कं। महाकचत्वा पंचनेवात्स्यं सर्वतत्त्वधूतं पून ४ स्वहा वकं। त
 सा ४ स्वयं न चले विकां कृ पूव्यथा पविश्रमं भुक्तं। वज्रनात्सर्वकल्याणं प्राप्तिमाया स्वल
 र्हा ववर्जना रुच्यं नामास्वभा कुचमहासमूहल कृती। त्वामास्वल कृती रुमियथा वद
 कस्पना जीमार्गं नृगमिनी। अथवा लानिमाया सामहामाया सुबुपिती ४। नागि वक्रुस्वचा
 मवधुनिहादवीर्यापञ्चकिनी संनिहं। रुद्रविदधहा वप्रसर्वतस्यापविह्यिता। वज्र
 त्वा ४। दयाय चक्रमखकुचिह्ना दिवर्षुषट्स्मृता ४। समतागचक्रनालख्या वज्रपम
 वध्वकर्माश्च मखवली च सर्वत ४। हां या रुचकला सलिया गिनी यथनायिका। यगन
 ती। तत्का वना ह्यया चे वविपत्या रुचधी पकं। लघूजम्बू पंचापि अ पिभा ककलानृग ४

॥ अथ पंच दीदीपानां तथागत कलकमात् ॥ तस्मात्तामाजगत्सर्ववृद्धकाटिपदाङ्गलां
 र्मकं ॥ अथानानामवायुश्च गतिश्च धुनाङ्गिकी ॥ अथ नवकाचारश्चेव धर्ममानं न न प
 त्यकिंचनयागिनीं ॥ सर्वनाडी समूहकुघाते उत्कर्षति क्रमात् ॥ सत्तावनकविह्वया
 समूहकुघातमूत्कर्षति क्रमात् ॥ यागिनः एकतावनकुहांथानिर्वातलक्ष्मीनिर्वात
 कं ॥ नवधानचवाधिस्थधर्मकोयादिवस्तुक ॥ ॐ डि यानां प्रसादप्रसर्वलक्ष्मिजाति
 पूरुषसंनिहं ॥ कृयातावत्सत्सं च मूत्सत्सं पूरुषाकृति ॥ ॐ वं मिदियसत्सं च सत्सं तहा
 यानादिसर्वसंहवं ॥ तदसत्सं न डंजी ॥ तत्तावत्संहिचकावयत् ॥ मत्तं चास्पृश्वक्कामिदं
 वज्रं च विविधपदं तं मत्तं ॥ मूत्तामविलामिन तथा मरधमध्वलामका ॥ ॐ वं ॐ ॐ
 ॐ रु ॐ ॐ ॥ ॐ निसफमिगतिहियागभवीरुताङ्गकमात्ताङ्गिकासंधिविह्वया मूत्तया

मूत्तप्रकालमधमहाहानां ॥ तस्मात्ति ॥ सर्ववृद्धानां यागिनो केकाङ्गसदा ॥ यदि क्रुधमत
 न्यत्पृष्टिचकलाहत्मापिहांथापना ॥ ॐ ह्यहत्तगवान्स्वामिथागिनो केकाङ्गव ॥
 ज्यासह ॥ कीङ्गकिविपूलं वाक्कं रवनिर्वातपध्वका ॥ अथात ॥ संकृपतावध्ववामहर्तु
 कुघात्तां सत्तागता रवत् ॥ क्रममूत्तां विजानीयाद्यामाहु ॥ छनिपी ॥ उयत् ॥ मूत्तामिकाकु
 नामिकां दर्भययमुयी वाकस्पदं भयत् ॥ पूटी च ॥ दर्भययमुविभूलं तस्पदं भयत् ॥ स
 भयत् ॥ रुक्टीं दर्भययमुमिखानस्पदं दर्भयत् ॥ ललाटं दर्भययमुकीङ्गनं न डंकी
 मड्डुपराकिनी ॥ स्त्री ॥ अं हत्तापरासी च समयीसाविहीतका ॥ स्त्री ॥ अं च पार्थिनं कूर्यात्कूल
 भिव ॥ क ॥ यनं कूर्यात्स्वभिनां वामयाभिनां ॥ स्वविद्यां समवर्धनस्पसाधकविषयहिता
 स्वविद्यां च निवी ॥ कयत् ॥ सत्तावं यागिन्यसमयं ॥ खल ॥ इत्ता ॥ कपालपत्र ॥ ख

मयमानप्रियानिहंलज्जाहयनाभिनीचयागवानाहीकूलसंरुतासहजामितिकथन
कृन्दाहापकृन्दाहमलांपकापमलापकं। भ्रमभ्रानंचापभ्रमभ्रानंचजम्बुद्वीपव्यवस्थि
वर्षपपी०स्पस्तथावामश्ववाक्यं। दवीकायाहिभनंचमालवंचपपी०कं। काम
पङ्कशकं। कलिङ्गलंपाकथाकृन्दाहचरुतथेवचकांचिका। अहपकृन्दाहहिमाल
लुद्धापचउपमलापकधयं। भ्रमभ्रानंपाटलीपुंभ्रमभ्रानंसिन्धूमवचममब्रूलताह
नगास्वदहनाठिकावृपपी०नामतिकीर्तिना। रुद्रपंदवताकावंतनाध्यात्मव्यवस्थि
पपी०विमलातथा। रुद्रपुताकवीरुमिबर्जिस्मपुपङ्कशकं। कृन्दाहहिमद्वीप
नसाधूमनीचवधर्ममधापभ्रमभ्रानका। रुमिपीभोदेसंशुद्धिकथयामियथाक्रमं। पी
विकल्पनधीमनाभनानावृपविबृपिष्ठाधालारुहसलकृयत्। साविदवतयागन

नंसर्भनंपापभीप्रसिद्धिप्रजायत। १००। हतगवान्स्वामीवज्रजकस्तथागतभासर्ववी
कुवाहंयाथापलिलकृत्तमकुयाभषडकस्वहावलकृत्तलपटल०श्रुष्टमभा।
चस्वयंप्रभुभाचउश्रुक्तावाजुप्रनाडीभर्तचावंभति। तप्रनायंयथानामवचनतत्
यीवंगपडवडीचकलिंगकीममाववीरुमहालक्ष्मीवचन्दीकामवृषिणी। जहलीरुविदभी
वीवंगमलीखाडीचहलिकलकीमस्वर्लुद्धीपिसिंगलीचजामडीचकर्तावकी। सिंधुहिमा
जालन्धवीश्रुर्षदीचकस्मीवीकीभलांकची। जयकीतिभक्तचहीब्रह्मीपुननवाहिकाम
पदलवी। स्मभ्राननीउपस्मभ्राननीमहादधिठतीरवली। श्रुद्धचसर्वदभकीदवीच
कृतथाश्रुद्धधृतिकासर्वगमिनी। प्रयागदवीकाठश्रुद्धयिविरूयादूलनाठिकाभका
कानसूक्तप्रितीमकचकंचदवीचश्वर्लुत्तववनायकी। पाउभेवमहालगजंरनांघा

गामितिकथनरदभदरभतिजायकथागिनीनांसवयत्सदापीरभपपी०कृतापकृ
 रक्षोपव्यवस्थितापी०जागंधवीतथा॥उडियानंतथापी०पी०सर्वदमवचममदा
 पी०कं॥कामवपीकयंकृजंकृजमाडातिथनकं॥विभक्तंरूपकृजंस्यात्काभलंचा
 द्वाहंहिमालयविभषन॥प्रताविवास्तनामलायांगुहदवतमवचमसावाइसुव
 मवृकलतादयस्थानंउपममानकथनवाकपी०तथाख्यानामध्यात्मंदहकथ
 ध्यात्मव्यवस्थितामननतसिद्धमयंदहंसर्ववृद्धसमाकृसापी०प्रमृदिनारुमित्र
 तिमिह्वीरुयापदुन्दारुसूडूयाइवंगमतिमलास्यादवलाख्यापमलकाभमभा
 नेयथाक्रमंपी०भपपीथसुवायांनिर्मलारुवतिमानवभाउवनानिमिरुसंनरुनि
 भदवतथाएगनहंकावसर्वनादितं॥सिंहवद्विचयथागीसर्वभंकाविवर्जित॥दभ

गतभासर्ववीवसमाथागाधजसत्त्वपवसूखं॥ ॥००तिथीवजवावाहिकलमसत
 मभा ॥श्रुतपवंप्रवक्षामिसत्त्वानांहितकाम्ययास्कीमाहनिपदस्थित्वावावाहिं
 मवक्षंततत्त्वज्ञानां॥मरधदभीकलिंगचउडाककुठकीसहस्रवासावाइमल
 हलीरुविदभीचरुजावाचमागधीगतिलसूरिदन्दनीनपालीवसमासिनीमानायक
 कीमसिंधूहिमालयांकगीकृतीजगन्धवीपथोभाजकृतीववृतीचउडियानलंपाकनी
 एनवाहिकाभूमनिकांताजकीचरुंगालिकीगृहदवनीप्रतपूवीवहनीचपलवचा
 मकीदवीचउषष्टिकमातनारुतिचकृष्यागिन्याविह्याकूलनाडिका॥ददयंच
 तनाडिका॥कालामूखीसिद्धेरुमिमाहनीकोमावीपोविकी॥उवंसर्वददिस्थानमाया
 रागजंरनांषादभेयूतभालकाभुकाभर्जस्वदाबंधचर्ममान्श्रुस्थिचलायूप्रया

अनाखयंरुचविघ्नविह्वलपिका॥वरुणादिपदेर्याहुनाहिसदवाहिनीमसूकप्रम
रुहकलालीविलुब्धनडिनीताविनायिका॥चामुलीधानवृपाश्चउमादेवीसवस्वत
जयनीधानवृनीच॥००डीचलीचरुपाथीप्रमवाहिनीबोडीकीकमाडीअवीचअली
वंताडिचकडुजीमाहनीपगमिनी॥कथयतुममस्वामीकिंमयाउअगमिनी॥५५उ
त्यकडुगववुवुगनकाउवथवादेभयानउगाउकालंअचिताकनअगर्हपुलकडा
मेजीमाहनीस्व॥हार्थमानंमहापापंमावरुणसर्व५५कं॥तेअसत्ताधिगशीवकीमा
यकालकुकामाखात्यकपनांस्वावनगमदावलीधीपमहाभागस्वतावनी॥नाहा
स्वमकुजां॥ॐवसुजर्वजीमावुधुधवावहिजकाजयकीरूनीरूयरूवूवूवूवूस्वाम
नकेकस्पदवीनांमरुधपूचकुअकजां॥उपायप्रहसकंसर्वधर्मादयदयप्रमधग

वनादिनादितं॥रुजीचककुलगमात्मजाकिनीदकिमान्मकं॥वानाहीसर्वमान्नीचसमयंस
यागिनिकल्पकंसयदिअरुनिकंमकुलिपरगतीवसंनितं॥नाडिकावधुवरुधपूस्वासाव
कुसंचानंमधदरुअपूचागतात॥रुफि॥कूप्यात्स्वयकुपूयठवसानपावयक॥यकुंरु
कुयतुनचवावधुपूवीजलावयचवीजादिना॥अथवासर्वनाडीप्रमकुन्यासमिहाक
सिजापकसिहिवरुजपजावउलंजाअकाकाकंजिद्वंलपूमकांरुप्रवपउस्मउम
नांअश्रयअस्वविमपिलन॥००मिक॥स्पच॥ककतीननीतिअरुधउसहमसूअउ
अथवाअतयादिनामकं॥गपूचायकनंसर्वादयंमसूकचकका॥००दंयसुमहाधीम
वाकावसर्वचपंचसूगालिपातयउरुअरुधउमचोषष्टिदाकिं॥कासुकेमरु॥का
मिवाचन॥यदिवाचवकुर्वीतमकुंशीपतिकालिका॥धनि॥धुलसमाकीकुनवना

हनीमसकप्रमहादवीचक्राणि॥ बालिकाहवाकमप्रसर्वजसर्वजसन्निमल्लुता॥
 तदवीसवस्वतीरुद्रकालीमहाकालीस्थूलकावीपवाजिना॥ जयाचविजयाश्रुजिता
 ॥ अवीचकुलीमातङ्गीशाम्भवीसूडीका॥ भाजप्रसीमहीदीपिदिव्यामदप्रविका॥ ॐ
 ममिनी॥ ॐ सर्वभवीरुद्राङ्गीमाहनीमंजुहावयारुद्रायेवजुजानीयाधमहिनाडु
 गत्पूलकृष्णातम्रावाप्यनयकुविहसनयादरुणायस्वधाउपूशालयंतविपानीयाक
 धगङ्गीरुद्राङ्गीमाहनीसर्वकर्मिकंनावकीववयागिनास्वसंकाकाधित्तीपनामीनचाद
 हावनी॥ नालवकावकीदवीश्रुधयापदमाश्रितासप्तसिंहात्मकमरुधउत्पद्यन्ति
 ॐ वरुद्रुस्वामीहायहंरुद्रुद्रुस्वहा॥ ॐ दंमकुप्रयागनमधुलंसर्वकामिकं
 दियप्रमधग॥ चक्रवावसमायुक्तंनावरुद्रनविदुषिकं॥ ध्यायमानंमहात्म्यचरं

तन्मैचसमयंसर्वथागत॥ मनुसर्वतास्तानमन्त्राङ्गववाचकी॥ सर्वसत्त्वप्रयदाकंतला
 ॥ वरुद्रुप्रस्वासाकावकसंरुक्तंमनुजातकुचिलंहिआपादाननिवाधनाग्नादरुद्रा
 ॥ वयंन॥ यकुंस्वासनल्लिखारुद्रामयघ्रातचक्र॥ चतमायाम्यमानकुमलेश्वरुद्रापो
 ॥ न्यासमिहाङ्गवे॥ मकरुद्रमसोमचक्रमामकाउरुद्रवामानिदनसवाटिवंवाहस
 ॥ प्रवपुस्मउमवह्म॥ ॐ तिनारि॥ प्रदपुद्रमजालिमाका॥ ॐ तिरुदयवस्मस्वभच
 ॥ सतमस्रुश्रुजाविश्रुजनाइ॥ चंचयात्रोकांठाचंमावास्फुना॥ ॐ निमस्रुवचक्रास्प
 ॥ दंयस्रुमहाधीर्माप्राप्तवायुविधार्यता॥ चक्रंक्रमस्रुयकाष्ठचक्रुपमदलाकृतिंभावकु
 ॥ सुकैमर्त॥ कर्तुकास्त्रनमासायुधमनंप्राप्तभक्तिरि॥ यावदवधूतीवायुस्त्वावयकु
 ॥ नाकीर्तुनवनाडीगवाधनात्मानचवागंकवापष्टनचक्रुसिपासकंसदा॥ प्रवमादिम

नंतश्चनव्याधिंमनवभाककांपंचमधुलनाचाथवाहयत्सर्वयत्तुकांभुडवायतनामादित
संप्रवक्ष्यामिभानिकादिप्रथागत४१यनलिखितमात्रंसाधकसिद्धिमवापनगांरुंक्रमे
जिनागावाक्कावजावलीवक्ष्यामिनामविदर्भितगानउभुचिकर्पटवाश्रयवास्तनामध
ह्युसितपूष्यसमर्चयतगापूत्रगश्रुमधुलापविष्टंसाध्वंदृष्टासितकललेभुडामन
भानिकिल्लयनंचक्रमेचदीर्घायर्तवकितकसं॥कावगवविषदंभवामहस्रपूताव
जायतकृत्४॥इवाममूत्रापिष्टुक्॥आहककुविभषत४॥पूर्वाहिमूखसाध्वंचथाजय
सन्निधंदोष्टिचक्रंउमालिखतुं॥सबवद्यलिख्यस्वाहाकावधनविदर्तयतगापीतसूत्रस
तगापीतमधुलचक्रंसाध्वंदृष्टाविचक्रं॥पीतावर्तुमने४॥संचलीतपूष्यसमर्चय
वाषल्लकुलविदर्तयतगाधनधान्यंसमृद्धिंचलक्रांचसमागमं॥उतलमर्मप्रथाएतनपो

रुर्जपुत्रवाद्यंचक्रंसमालिखतुं॥श्रामसूत्रावर्तचिन्महाकावधविदर्तयतगावकसूत्र
सौल्लि४॥पश्चिमाहिमूखंवकवस्तुवर्तुविहावयतगावकमधुलमरध्वसंसाध्वंवकं
या४॥पतिगंसिध्यतचविचिकयतुं॥यदावर्तनाद्धादिष्टुतमधूवहितंनमवमंरुंखादिवा
कवजस्वत्वाकर्पटवालाकावसमान्वितं॥द्ययचक्रंसमालिख्यज४जोकावविदर्तयतगा
ध्वलवाचयतगासाध्वस्यदृष्टयमर्द्धेभविध्वगलकपारधनवन्धयतगायस्पविचिकसाध
तकृत्समात्रं॥श्रमूकाकर्षतजो४४कावसाध्वमाकष्टिपादाकर्षतमूरुम४॥श्रथन
काष्ठकानामरध्वजयादशकाष्ठकुभूयंकूर्यादिचक्रस४॥कारणकारणनवकाष्ठचउ४
मकुंसमायाकलिख्यभभानककर्पट॥हविडंहवितालनसीमिधंद्ययचक्रसौलिख्य
वर्तपूठीकतं॥श्रमनापनिमाहृदमधुलचमरध्वसंलंकावंकुतंविहावयतगाविध्वव

गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ
 गायतनाद्यादिह क्रयदमृतागवान्भक्तवर्धुसंरूपाभाभायाकुञ्जवृपकांशमृथातठ

यत्तान्भक्तसूत्रसवस्थयित्वाभक्तप्रथेवर्चयच्चसम्यग्गतमधुमरुध्रकृत्वाश्राचार्य
 भक्तसंख्यंभक्तंविचिंतयत्तुपुत्रकुमविद्विन्नंसप्तारुवंसदादितंविद्वलीरुतपाद
 भवमंगुलदिवाज्ञावेलापयत्तुइहगठसूत्रगातवतियस्यकस्यचिन्नान्यथाभमभानचैल
 गंविदर्थयत्तुसन्नावंकुकिपालंवाविलिखच्चकंसिध्यातिभक्तसूत्रसवस्थित्वाभक्तप्र
 थविचिन्नसाध्वनागच्छतिकदाचनगवदिनानलकाष्ठाग्निनापययत्तुनियहंतन
 मरुमठश्रुथान्यतमहंवक्ष्यमृत्तुनंविधिमरुमंश्रुष्टाष्टलखासमाथाकउन्नयंचाभ
 नवकाष्ठचउठकाष्ठववस्तिगठचउठकाष्ठचसर्वचभूयंकाष्ठप्रकावयत्तुदिमृष्ट
 चक्रुर्सेलिखत्तुसाध्वनामकुबादायलंकावसविदर्थयत्तुश्रुष्टगठसमंभूक्तुसना
 वयत्तुविश्ववर्जतावपूर्वपीतसूत्रसवस्थयत्तुदिउज्जिदिमृष्टाकावमात्मदहंविद्व

वस्वचोदहर्कंभानिचउमभुलंनानीसांरुदयवधपोहिकगजपुष्टन॥मूकमक
उरुत्कर्मविषाकर्मसाधुनेवसिधतभुपदभंविनाकर्मनिरुलंतवतिभूतवत
त्वष्टस्वपवं॥ ॥६६॥तिथीवजवागहिकल्पमहानकुवाउरुजोमात्यहिकर्मप
वंमवजवागहिसंयागमहजोसंचावलीभुहं॥कायिकोमर्मसंधिचत्रपिनीमाथिनापूना
मंससर्व॥६॥पंचपंचहिविह्यादादशेषष्टिनाडिका॥मधुलपूचवाहिनासंकाको
रधपूनाहिमधुलधिपास्ययू॥जिकाधमकविह्यादिगुलपष्टिनाडिका॥सन्धिकुपंच
कलान॥६॥दयाव्यातथाप्राकानवनाजीयथागति॥६॥चइनादिउरुधुपूदावमाथित
वर्धुतावरुतकुका॥उवंद्रूपस्तितादवीसंचावलीविकल्पया॥लगवान्यद्वाम्पहंवि
यमार्गपूयाह॥रूपचाविधी॥वितनापापंरुसोव्यंधडियाकावयाजितभायस्यस्य

ति॥६॥तस्मात्संचानिकावाधसहजंसंचाधिमिषकांपीनवर्धुमहादवीरभघंहांथाविह
लकर्म॥६॥॥६॥वाकूलकर्मचमासनासास्वरावक॥प्रक्षापायासुखनापितिसुतम
रगपूविह्यात्रपनायकी॥॥६॥वहजउंसंचावपिमानोहिय॥॥६॥स्वाहंहाहंरु॥६॥
विधिपूर्वककर्म॥॥६॥वधूतीनखगागलाखासंविस्तनत्रपिकां॥॥६॥निखिलंप
नन॥६॥दंमायाखलकर्म॥॥६॥जिविधंरूपकायंचकायवाकिरुलकर्म॥॥६॥तत्कामत्रप
विन्धविन्धप्रतिविंवमसंखलाकधकुकांसंचावनीमाययास्त्रीचउपायप्रवृषकर्मना॥॥६॥
त्रपिनीगाधिलक्षलक्षयलक्षलक्षमात्रपलक्षका॥॥६॥नलक्षंरगचवसापिलक्षकासा
त्रपसाकवत्रपकां॥॥६॥सर्वसुत्रपकुवजसुत्रस्वयंमेममसलनयंचेवमहासमयस
वलक्ष्मी॥॥६॥कार्तिकानप्रजायकिमृगमंवालथागिनोयगिनीववलक्ष्मीजानकिहेव

सहस्रज्जहारिषानववज्जधन॥००दंगाहयासर्वकुचिउत्तामूर्कितावनोभ्यागिनीपतिन
॥००सुखसुखनिहाअनि००सलुधकुउसहा००निभाचनि॥००मिहसलुहृतउना००वी
रुवसयागनरुवितानायकीसुखान्॥वेवाचनादिनकुंचरुनयकुपूनमूखान्
गतकुकावेवाचनवत्संचनागामाघसिद्धिकं॥००ज्ञात्यवाचनाकुंमामकीपाधु
किनिगलखगर्तक॥००वज्जपातिलाक॥००वसर्वजीवनरुडकं॥००मंशुभीमेजीययंचयमस
संरुउछीषचकवर्किने॥००रुवूदीमर्तुभवनीचवज्जसत्वकु॥००मपकं॥००वृवंतजनाम
पाकिवधर्मपूअविनष्टपदानगम॥००कल्पदाहाहिकालपूगतमन्युसंस्त्रितं॥००खलुका
संरुवठ॥००संचानिगीपदमाधिसुवीनरुवनानिहंरुति॥००वृपावृपहवज्जपंनीयतसंव
॥००दवतात्मकं॥००गिनिगकनवज्जपूमहादधितठपूच॥००वज्जपूथमलुपल्लनभमभान

रुनासिद्धिभीघंरुवतिनायभागागकवज्जसंकीर्णमलुलंवरुयत्सदासाधयत्सकुम
सर्ववज्जजकिनीयहंरुंरुद्वारु॥००लक्रमकंरुपित्वाउदभांसनउहामयत्॥००लाकिक
त्सदासाधयत्सकुमविद्धिन्नंमूपरुदयंसदाजपत्त॥००उंजी॥००हहंरुद॥००जपल्लरुजय
कंजस्वरुजलाधयवरुयत्सकुलंभुतं॥००जपल्लकुमविद्धिन्नंचउर्मवमकुजापितं॥००उं
रुद॥००उंश्रानयरागवविद्यावाज्जहंरुद॥००चउल्लंक्रोधयथागीदभांसिनरुहामय
लंचप्रवरुयत्॥००जपचदवतीमकुवज्जकुविषाघनभाय॥००कविधिसंपूर्णदभांसव
चनीसर्वभवच॥००भमानमलुलंरुत्तापूर्वाकायथाकर्म॥००साधयत्सफाऊदंमकुंज
चातनंकर्ममानवर्चविषाघन॥००सिध्यतजापमाकुंभवज्जसत्ववचायथा॥००चउपूथ
सिध्यत॥००उंजकिनीयहंरुंरुद॥००दभांसनहामयत्सिद्धिरुतवज्जदसाधनीविहा

यत्कृष्णगसिद्धिरुत्पदं। जाकिनीतिप्रतिबन्धव्यानवायश्चसंस्तुता॥ प्रातोपा नस्तु
उत्तकास्यासकनास्याहुनामकर्मकिरुक्रमात्। दददरुधनंजयश्रींश्वीश्वरसदा
वर्मा॥ पूजांरुत्ताहुवावाहीवज्रसत्त्वस्पृश्यो। कथंशास्त्रादिवायुनांनामसंस्तुत्य
नप्रथमाध्यानमन्त्रं तन्मन्त्रं तावया। न्यस्यजापमंवायुश्चावाधत्वाधिलाक्य॥ प्र
मनागमं। समानजाति कांगत्वात्तत्रापूर्वकृत्यस्मृतिः॥ उत्तमं वर्यं तवाक्यं समकाप
षत्वात्पुनरेवपदंस्वयं॥ कर्ममासत्त्वावपूजदानस्यलक्ष्मी। कृतीवागसमानं
स्तनिकंरूपंनदनागस्यरूपिक॥ तस्माद्येष्टयत्कृत्याति॥ पात॥ सर्वात्मजंयम
हमिध्वंयत॥ नकर्मिस्ववाति॥ महावज्रधनीमतां। दानपात्रमितांयाहुसहज
चयत्किंचिरुत्तर्वगाधिनूपकां। पून॥ काकावदवीचतुका नभनृपिती॥ कावती

संस्तुसंस्तुतां। सप्तवंसथागनिधिं सर्वगुणमखात्तत्तत्। योसावययवशास्त्राकत्वाहुमत्त्व
व्याधिपर्यन्तलक्षतां॥ अथवज्रमिसर्वपञ्चकस्यस्यलक्ष्मीयनसंस्पृष्टविधानंनसि
द्यन्तिप्रष्टुत्तुल्लिङ्गिकाभक्तभक्तिकारुण्यंनंगुलिकप्रष्टिकर्मप्रभस्यतगा
कचन्दनवीजकां। पर्यकष्टिप्रथागपूपांचाभीगुटिकासदा॥ वृजकचितवीजकुन
रक्षाद्वनंथाकविद्वषभकृनियहयथकर्मविशेषतश्चकृत्यवयत्तागद
न्तितां। हयमहिषकाभनद्विधधाम्स्वस्वकां॥ भगवानकनसुखंस्वाननाममेमि
शयन्तिथद्वत्कर्मकां॥ भक्तिकर्तृनीत्यसंष्टिकसधमसदा॥ श्रुतामावधमिस्व
हन्तुल्लिङ्गिकासर्वधर्मकाहुस्ववृपत॥ समाहितंजापतावनश्चकृत्यविशेषतः॥ क
चदुर्गतीं। रूपंलक्ष्मविद्धिन्चत्वानामकुवृपत॥ प्रत्याहावमिदंजापमस्तुतादि

मकुजापस्यलक्षविधिमूयन॥ॐ ह्यहर्गवास्वामिवज्जकस्तथागतं सर्ववीन
लकुजापस्यलक्षविधिमूयन॥ॐ ह्यहर्गवास्वामिवज्जकस्तथागतं सर्ववीन
धिकं॥मिथर्वमिकिवंशुष्टमासथागेसमास्ति॥ॐ उलकाह्ननमासायनावीक्षिपथ
मायादवास्त्रादिजुक्तवान्काहुवर्गनगरुकिपादाहुं ह्यनकादधी॥ॐ उलकाह्नना
कामवृष्येवहसर्वकृत्रियंमतं॥सर्वकृत्रं हवत्सकृत्रिकाकावमृष्यकृत्रं॥सर्वकृत्रं
कृत्रं॥युक्तचसर्वनाडीनांयानिपंचावत्सकृत्राश्रुजुष्टदजानाकुजनायुओपण
संस्तितानायकवृषिनीमकुमालापपनाश्चसफटिभक्तिकात्मजां॥ॐ वमजहाडकल्
वा॥ॐ ह्यवमकुमत्वात्माप्रक्षपायस्वहावकं॥हवितवर्तुमहात्मानारभप्रंणचवाहितं
हन्तितासर्वणचवा॥ॐ दमाजीवसमाधिश्चप्रहास्ववाकावधर्मनाडचाटनकर्मच

गमापूर्य॥ॐ दंतकुपूरणचनं॥किलुतसर्वथागंचपिष्ठुपमिदंवचप्रहाहवस्तथाध्व
हानंदुकाकासाउलकाह्ननमिष्यत॥प्राप्तयामस्तितास्वानाधवधनायाकुसुकावा॥ॐ
॥सर्वहृत्तात्मजां॥संसावंमृचमानाकुविश्वमायाप्रमैस्वयैस्वाधिष्ठानमिदं॥ॐ वज्ज
नेर्दतिसममार्गयमप्रवृत्तिं सर्वमहायानमकुयानकुर्वत॥ॐ कियामस्तु॥ॐ हनानाकुर्या
पुनपभ्यतथात्मयागिति॥ॐ भवीनालक्ष्मीसैम्पुच्यतनाडिपंजवं॥ॐ उल्लिषामतिपर्यक्तं
ललाटायांच॥ॐ पादाहुंलीधयं॥नासिकाजानूत॥ॐ याजीघायांकवतोद्यो॥पादतला
गधुकपात्रकंचापिमकुचकृत्रकद्योहस्तसैविमुपार्थचवाहस्तविस्तनोद्यो॥सिंहा
धक॥ककुपुष्टचमूलकुवृक्षयसंधिमत॥ॐ आसनाच॥ॐ वृक्षचजिह्वायांनवनसिक॥ॐ
संधिमर्मप॥मीठयत्स्वचवापूवाधिचिरुमहात्मनांतत्त्वयागविधाननरायाणुवृषवा

कयागामासिमासितिथिर्मासुतंतिथिः मूलनाडिकाः शुक्रप्रतिपदाशुभ्यावत्कुरु
स्यतादृशः कुलिमुद्रिकाः स्वासकुतादृशः कुर्याच्छाकाचापिसिकर्मकाः अथवासर्वनाथान
लंमालीचकुमाम्पाकुसर्वदमाः तस्मादकावासर्वचवचनंकल्पकल्पितं तथागतास्वा
रुपछितानां वाक्यं अस्तिमात्रमहाप्रभुः कावर्धसर्वरुतानां वृक्षविविधजनवधः त
दमात्रयात्मा अथातः संप्रवक्ष्यामिदेवतामधुलादयं नहसंप्रवमवभ्यसर्वसिद्धि
नंदिरुजहं कथागवान् दिग्वन्धुपाका वंचुर्ममकुम्बवत् ॥ ॐ संतानिसंत
यहं हं रुद्र ॥ पश्चिमगात्रं नयहातुगवं विद्यावाजुहं रुद्र ॥ दक्षिण ॥ अष्टिकां दापय
तस्मावहायतः पूजनाय नृवक्ष्याश्ववन्दयन् पूष्यधूपादिवापूज्य कृसापददत्तुलनां
इहविविनाभकात्रितीकत्रुत्तापवसुखउल्लिखितापवसुखमृष्यकापका ॥ ॐ स्व

जां विलंतावहावनेभा ॐ भूत्यतां ह्यनवजस्वहावात्मकाहं आध्याधयभूयकुरुते वम
नंकावमग्निमधुलनूपतः वकवर्धुद्रिकाधैचवजाकिंतविभूचितं तथापविचवका
लुलपूचकुक्षारुद्रिभूचिकावजाकिंतं तथातस्यापविचसंकावंसमं नृचउवस
वकंविहावयत्ता तस्यापविहावयत्प्रमंकर्तुकावगवान् चितं तस्मात्स्वावयथा
लुलमध्वस्तुं श्रीहृत्कंविहावयत्ता जिम्वं प्ररुजं वी वंशालिहासनसंस्तुतं म
रुचिरुषितं ॥ तेनवाकावनाधिकुश्रोकम्पमहासुखं वज्रवेद्याचनीचालिंघकत्रु
जघयनगजचर्मवंधनं रुतायुग्मत्रुकीवायसर्वधर्मस्वहावकः वामरुतीयक
वजांरुतमूर्ध्विकलाधिपतिमस्तु कं विरुताननं तीमैः गायादित्रसान्वितं निवभूतं वा
चवसान्वितं तस्यालिंगितातंगवतीश्चिज्जामकवक्रावितं जामावधूकवधुनमच

25

भूयः कुरुते वक्रादिविचित्रयत्नः। यं का वं नी व व लु तं ध न्वा तं वायु म लु तं ग त स्था प नि च
 ता प नि च वं का वं भि न श्चा म्भ म लु तं ग त स्था प नि च लं का वं च उ न सं पी त व लु कं ॥ म
 मं नू च उ न सं पी त व लु कं ॥ च उ न ल म यं न म्भ म च्छ र्ग प र्णा ति कं ॥ त स्था प नि च रू का वं वि न्ध
 य हा व य धा गं श्चा लि उ स्रु ति त ४ ॥ त स्म र क्ष डू रू का वं व ज स त्व स्य न प कं ॥ न वि म
 सी स्ति तं ग म्भ न मूर्ध्व म हा कृ ष्णं द क्षि ण कृ न्द सं नि तं ॥ वा म न कं म हा ती र्म रू ण म क
 चालिं ग्ध क नू धा वा ग स हा त स वं ॥ व ज घ ष्ठा स मा प न्ना ता लिं ग ॥ उ ज घ यं ॥ द्वि ती य उ
 वा म रु ती य क नू धा व वां ग क पो न ध वं ॥ क पा ल मा ला लं कृ त म र्ध च न्द्र वि रू षि तं ॥ वि न्ध
 न नि व भू तं व्या ध च र्म र्ध ॥ त ४ ॥ न न भि न मा ला वि रू षि तं ॥ पं च मू णा व नं द व न व ना यं
 ॥ क व र्धु न म्भ च म लु म लु ति त म्भ व ली ॥ त्व धु म लु ति त म्भ व ली मू क क भो क ला ली च य व ति

नृधिवप्रिया। वामकुजालिङ्गितकपालाङ्गुलीमालायुग्मना। दक्षिणतर्जनीवर्जकल्याणि
 मावेष्टुनाहकुम्भिनी। नमस्तत्पद्मादिसंस्तुनसर्वसिद्धिः स इवादि यं। कृच्छ्रस्यामंचत्रकं
 क्रिलवज्रकर्लीचम्रालीरुपदननिका०। मूककभापंजरावदना० पंचमूजाविहृषिता०।
 तस्रवात्सवं। चरुर्धात्रिल्लितादवीहावयइवतासदा। पूर्वधात्रुकाकास्यानीलादि
 भात्रकापश्चिमधात्रसंस्तुता। मूकस्याङ्गीताहादक्षिणचमवासना। आर्ययचैवने
 निका। विदिकस्यतथादवीधोहिद्रूपोमनाहयो। प्रतासनमहाधात्रा० पंचमूजाविहृषि
 ० सर्वसिद्धिप्रदायका०। नत० कवचवक्ष्यंस्तत्वास्तनचक्रंविहावयत्। समयचक्रसमा
 हिसिन्मिस्त्राहंमिस्त्रायां। वाषट् हस्त्वध्वयं। हूं हूं हां० चरुध्वयं। रुद्रुद्रहं सर्वार
 म्। वलचक्रंथीहद्रुकाचन। पंचमवज्रसूर्यातिषष्ठमपवमाध्वेचषष्टि० कवचन

तीमरुंरुं सजावती। रुद्र रुद्र च लुकायां सर्वाः शिः श्रुम् । नाहो हृदि तथा वक्तुमि न भित्वा मु
 रुदयनस्य कमलवदिकारुम् । रुदयमूपादिद वस्य मन्तं गकिनी जालसम्बन्धं । जवं य
 धाजितं । चतुर्विंशतिना वीधं । भवी वंगमरुत्मा हितं । चतुर्विंशतिपी २० नद हसन्नि कुधा न
 न्यपददभनाग्निलानूकलयागमहावयस्य नमंपदं । ०० साह तगवां वजी वज्रजकस
 ऊवा नाहिकल्पमहातनु नाज हनुका दयनिर्द्युय संविधानात्यलिल कृतया दम ४ पटल
 अमयागिनी सिद्धमूलमां । स्यात्कुस्वसतियागिन्य ४ कमस्यात्कमति ४ स्वयं । सर्वकाल पूर
 गमन्तं हि दमाधिकं च निवृत्तिदं । पल कृत्यं । जवं । नल कृत्यं च विहृया सख दायकं । आसं
 स्पर्धं वक्राह वल्लभ वृष्यादिगन्धकं मन्तं । प्रियदर्शनमायादि सुन्दरी तां । उवाच कं । व
 मनादिना । रुफि ४ हाऊन ०० ४ उगुयवाक महासूतं । ननना वी पू ४ गवाहास्यलास्य

नीवर्जकल्यानिवत्सहासुर्वर्जघादयसमावष्टमहासुखवतासदा॥ठाकिनीउतथा
 हसामंचनकंचलोववर्जुनिनयजा॥विउजाउकवक्राहुवडाहिचकपालिनी॥द
 गविरुषिताधविदिइचचत्वावावाधिविलादितालुका॥प्रऊयत्यंचामृतंयूकंनृपगी
 तास्यानीलादिहुजहावत४॥उलकास्थारुवडावधमाचमूककंभिका॥श्वानास्याहित
 शरययवेवनेमस्यावायवधमातकाधक॥यमजादीयमइतीचयमउहिनीयममथ
 मंचमजाविरुषिता४॥वामकपावखडाजोदक्षिणवक्रकलिका४॥उतपांसर्वथागिध
 मयचकसमावधममजामकुंथयागिन४॥अथकवचवयंवध॥ॐहृदय॥नमः
 हृदहंसर्वार्हचक्र॥प्रथमंवक्रसत्यनदितीयवेवाचनस्तिता४॥रुनीयपमनृप
 महि४कवचनत्रिंता॥ॐवक्रवेवाचनीय॥हंथायामिनीमजोमामाहनीह॥जोसंचाव

कृमिचमिताकुमवचम॥ॐयाग४॥शुद्धा४सर्वधर्मायागशुद्धाहं॥वामदक्षिणपालिस्थांस्व
 तसम्बन्ध॥उवंयागवचसुदवतायागंविहावयन्धर्मसंतागनिर्माधमहासुखचक्र
 दहसन्धिकुधावयन्॥उवंपीडुमयंवीवंसर्ववक्रसमाकसो॥अध्याकात्रयागनअचि
 विजीवजुजकस्तथागत४सर्ववीन४समायाग॥धकसत्व४पत्रसुखं॥॥ॐनिधीव
 मकादम४पटल४॥॥अथनयंमहार्थवधस्नानास्याहउतदत४यनविस्तृतमा
 मसर्वकालप्रसूफाचजायनसोख्यमहागुली॥नानास्वनतागत्वाहुसुखंविन्दन्तिचात्मनां
 मदायकं॥आस्पृष्टसूलितंनंपूपमगतंसेवात्रहं॥आगंरुगंमहकुतंगीनंवाद्यंसुसपकं
 मंडवाककं॥वृद्धपूजादिसर्वप्रपिबानिस्नपानया॥उद्यानंवापिकातीवविश्रान्तंग
 मनाहासलास्यकियाचया॥पलितानाकुसंनमा॥ॐश्वत्रलकुजकव४॥वृद्धधर्मच

संघचरप्रज्जनावन्दनादिनास्तुब्रह्मोदवतासोख्यं दक्षिणादानवाङ्मेतामः ॥ ॐ स्वापत्थप्रधम
पानलाक्षकुक्कुलं कावच्छदन्महावनाहर्षमस्यायकद्वियमलनात्मजमदनादिपात्रा
हूनविह्वनवादंचमध्यमनयस्यपनाकमश्रासासदानसर्वप्रश्नपवादविवाचनमद
दर्भनाकमकामनित्रपङ्ककप्रग्रभग्रभनेवासिनां ॥ ॐ श्रवावस्थमककुद्धिमीयाकथ
थागिनीनां रुवासनं धर्मसंज्ञमहार्थप्रकालसंज्ञरुहावकीप्रज्जतिप्रहाससंज्ञगत्व
नानास्थकंपादिगमनात्सर्ककमस्कन्धपत्रित्यागमहनस्करन्धस्यात्यादनं प्रनमार्गिति
च ॥ ॐ द्रियाधामवेधूर्यस्वहावनार्यनप्रचमसहजसंतागनिर्मासधर्माकायकप्रचमस
तादिप्रमकृतयुरगस्वहावर्जसोख्यं वडकृतंचयासत्तां कप्रसूक्ष्मजांविद्यतप्रचसूक्ष्म
सिधने ॥ ॐ ला ॥ स्वयं नवं च सोख्यवस्काहि ॥ ॐ द्वात्रिंशच्चमहदुर्तं रुकीयावस्कासोख्यच

धीचतुर्विह्याहकिताश्चतुपावगभापमिनीसंखिनीचिडीहस्तिनोरुंगनामयाभचकीव
नकाचेकसर्पाङ्गिकांरूयाववमहोषधीं।सोख्यदानन्दकावेमुस्रयादिकवधकृत्तामम
नवागगत्तुतिच्यवगित्थेववचनानिघर्मतिस्फुभापटतिथवतिथगुचवतिश्चवत्थवच
ङ्गिकां।संम्यकस्मृतिपदंश्चवर्तकयस्यकस्यकु।संम्यगव्यायामपूस्तितास्वानमूत्वापू
स्याटायउमंरूकांरूणहयर्रूरूस्वाटठरूस्वाठहाहंरूटस्वाहा॥ॐतिसफाङ्गिंभात्मकंम
टंवल्लुस्याधिधायप्रवर्तकां।उपधीपिनिवासीचसर्वान्स्वस्वङ्गुकां।वध्यकर्मपदवीकुद
नारुष्यभ्रममंसर्वसंधिकां।वज्रनाविकाप्रथागनकलनामादिनादिता।कायावकादिम
थागिनिसेष्टकपी।उमनंनभक्त॥वात्राहोस्वगृहपूज्यपूर्वमवादितावयन।पूर्वमव
निमज्जयभाइचिरुनत्तानसोवादिपूकिदं।स्वगृहपूज्यइवांपूर्वातिमूखसंस्तिर्ग।वे

39

न्यासचक्रावली उपलं कान्दिनी पूजा ननु । वलाभात्तुल्यचपादाच्चन्द्रनाशकजांभ ।
 शङ्कताममवलाके पूजियामो न्यहावनायाकृत्तकगं । चतुर्थोऽवल्लवङ्गनश्रुसंघाश्चमा
 इवत्त्वच । एभर्याहृतिचयगित्थश्रवसासुइवहुना ॥ एवंचतुर्विधवल्लस्वानास्याचसे
 तानमूखापूजावकुभामकुसुहावभागत्माहावतामधमधुला ॥ ३ ॥ ववजनास्वानैकश्राक
 जिंभात्मकंमकुपूजापायकुसिद्धिदं । नकुवर्धुमहाधात्रांभवेवधुनाहायकुश्रापाठकक
 र्मपूदवीकुदवासनादिमकुवित् । पंचामृतंमहादीपपूजाचसर्वकर्मला ॥ छदिपभास
 यावकादिमकुपूश्रुधिल्लनकतेपूच ॥ अथागष्टसंपवक्ष्यामि वज्रयागिनीयाचिर्त । वाध
 यत्तु । पूर्वभवांविनाकर्मव्यथानस्पपनिधम ॥ ४ ॥ कृष्णपङ्कदधम्यांचक्षुक्पङ्कनयेवत्त ।
 वसंल्लिङ्ग । वीरुमंकर्जलंचेवसिधुने ॥ ४ ॥ वादमस्तक । हस्तपादमृद्वेवमपिपाखनत्वा

चयनग्राथामलवितंभीर्षरुद्रमंस्त्रिभुवनं। सगन्धसुधपितं चैवसदीपं दीपधूपनं॥ नव
 लभवाथपानं चपयं चमत्समानसमन्वितं॥ तावयन्मन्त्रमन्त्रां चवीनसंकतदर्भयत्। वज्र
 निगीतसमायकं वज्रवावाहिपूजनं। आसुप्रपन्नान्यतिपूजनीयामथैश्वर्यान्मन्त्रैः नपि वज्रद
 वयदाहवनितासांकवस्त्रनियताववाभिधीमद्वैकया। गननं ननु व्यक्तिमात्रवधनि
 र्वाङ्ग। दोहोमर्दितं यत्नमस्तु संतुष्टं न चकसा॥ तन्न वागपूतवृद्धिर्जायत इह त्वमापूय
 त्मुनसंभयः। वादयन्निपूजयद्यद्वर्दितं नयनद्वयं॥ कथं नमवर्धनीयां कंस्तव्यं साध
 कोमावीमृच्यत सदापृष्ठनिवीक्ष्ययानदकपूतवसंक्रियत्॥ पूतवृत्तिकर्माक्षिनरु
 त्यलिङ्गमुवाघाटमादिदं। गीतवातकृतं चदं हसितं चमूरुर्मूरु॥ वाज्रवीनरुह्यान्वाह
 तवर्तुषांपूजाकालपूलकयत्॥ तद्वाहायानिसर्वाङ्गिविद्विफंदिनिलाकयत्। अनाव

दि। क्रियाकिं उं सविहयाकोमावीसूचयत्तथा॥ उंजमानकृतं कर्दितं उतादवागसूचत
 यत्नपादं घर्षयत्तुमोस्त्रनन्वागमर्थकावर्धनी॥ पूजाकालमुवाधमन्त्रान्यां विग्रहमूच्य
 कालकृत्यत्सदा। पूजयं वज्रवावाधेः सर्वकामरुलप्रदा॥ गूण्याहगवां वजीवज्जवाक
 वावाहिकस्यमहातनुवाजसुखायवस्त्रवज्रवावाहीपूजाविधितिर्द्वैपटलजयादम
 पूनिर्वहितकृत्तुहिः। सुकवीसुक्तकर्मपूजानगिनिदालनं॥ सूचीवज्रमूखाचापिसू
 दिदुर्षगीतमनकृतं॥ अस्त्रकृतमष्टादवीगर्क्यत्तानलकृतं॥ प्रथमं काकवधीजं पति
 त्वाहुत्वानासासूचनान्॥ सुकवासाहुसावात्मादादीयानिधिक्षावत्तान्। इतीवावम
 यात्। संस्पगायान्। तत्तुम्भ्यादभमकृदिनान्॥ प्रवृत्तिं सर्वसहावानिवृत्तिं सर्वगान्नवा
 नसर्भनपिचपीतवर्धुमहावादी। एषं नृपिनिर्मातृता॥ वज्रमधुलमस्त्रकुपहापायस

स्वस्वज्ञापनविधी॥ अंबेदंजुसकनावालासाययमरुंहीरुद्रपट्टासुयनरुंस्वांहाह
मुलापिनायागमातनीं॥ सुद्वयंमहापात्यघातप्रतीकसुगानिउभाकासुद्वयंपात्यकी
गिकंघात्रंनारिपप्रकृतसमं॥ त्रिकाविकंचरुंयंकलिकादलपाभक्त॥ तदन्तलावीजिच
मरुध्वचहीनाधककुसूलकं॥ तस्मानिसर्वतादद्याद्यसुद्विषूचककी॥ तावतैजिउहीजिघा
पदिकासुवलाहावाडपदिका॥ कमभीषकुहर्दनश्रुतनीपनिकासुभामासुमाझीनिर्गत
कुंचसर्वप्रवतनकादिसमालिखित॥ विश्ववजावलीककुहालावलीकुमपत॥ तद्याक
गर्हपथस्यवाक्कासुवलावलिमसालिखित॥ भमभानासुकांलिखाउच॥ अथादिसमनत॥
मधुली॥ तथापिमटिकाकावे॥ बीजमधुलपा॥ अतपमदलपूकार॥ चपंचामृतकवाय
कुमचयीविका॥ मरुयुग्मंचकर॥ अष्टपंचवलादिनोषधीभाग॥ अदकपन्नावादिपंचामृत

उपालादिकाधवान्पंचामृतादिहव्येश्वसकर्पयद्याकादिकान्॥ निर्विघ्नंरवतसर्वश्रुतक
त्वासमाधिरयथागवान्॥ वासफतिकर्त्रीवोडीवनधरादलोयगांमूलमूर्खेसकनासा
नरुमायमर्कान्वाघसिंहकै॥ हीमंचदकिउवग॥ अथवंचेवयथाक्रमं॥ वाममहिर्वी
ककनाउ॥ अमूर्खेकपिवल्लक॥ गनुगुदकाककुउलकवकासनकी॥ महामलीचाव
उकलावेखतावेयस्यकाउपू॥ सफर्षिभक्तुआत्माचपकृतय॥ सैविधायन॥ तथापतिविंविम
ककुनूडंचवक्त्रादिभूमिवंकिर्क॥ अथवायश्चनेभयधनदसुयथाक्रमं॥ वामयमश्चकाम
कावंस्वसाजाकुनमसुकी॥ धार्यमानस्वचिह्ननदव्याचन॥ वज्रधकु॥ दक्षिणसक्तवृन्दचर
कादर्थचरिषिपालकी॥ सैखवालकी॥ दक्षिकामयत्रविपिकिका॥ कथा॥ काकपक्तकविकाच
रुनिगकु॥ अहतिइहर्षजालिका॥ कवधकालतैलंचतैववत्रपैकुमातू॥ वामधध्वाव

यत्कुरुंस्वाहं हाह उं ट ह् ट्वा हा ॥ ॐ तिस्रफुतिं भात्मकं नायकी वनय गिनीं मधुलसुतनाया
 रुद्रयं पात्यकीलकानि रुद्रमपयत् ॥ द्वाविंशद्वयपात्या च वक्रसुतस्य पार्श्वतः चक्रसुता
 तदन्तहा वा विचक्रं भूषलाया रुद्रावयत् ॥ कृतिता गिकी माली च वक्रपर्म उचक्रजं ॥ अलचक्रपू
 र्णैरुत्तरीयिद्याना निर्युहाद्यान तागिकां ॥ नदर्वन वदिका चारि ८ कपालपद्मका सुथा ॥ भवती
 सुमार्ज्ज निर्गता सुचो विभ्व वक्रमहायुतिं ॥ किंकिरी जालवस्त्रे पणका घट्ट नादितां ॥ तद्याका
 पतः ॥ तद्याक चक्रवाठुरुद्रम्या नूतनपता रुवत् ॥ कर्षुका वली यथा सुमधुपाना नरथे वच
 मदि समकतः ॥ वीजविं न्यासकै र्युक्ता कर्षुका सर्वसंहर्त्रा ॥ अथवा कार्यादिके श्रुते सर्व
 पंचामृतक वाठका ॥ कल आ पत्रिदया रुद्रसफुतिं भानिका नयत् ॥ कालसुत वरिहंतु लया
 वादि पंचामृतक पूत्रयत् ॥ वलि ४ सर्वभूकर्म पूता वनादि समकतः ॥ दापय द्रुद वीनां रु

वरु सर्वश्रुत कर्म समालत रुद्राना नानि र्युक्ता द्वाव वीसफुतिं भानि नृपिका ॥ कर्म वजी विहाव
 रुद्रैरुक्ता नास्या नवनवनि पार्श्वतः ॥ तथा पत्रि सफसफ पंचादिकं रुद्रा पयत् ॥ दक्षिण स्वा
 वाममहिर्वीज वक्ररूपामक वक्रमध्याग लुचमत्रमूर्त उचयथा कर्म पूलकृतं ॥ अहिनाल
 महामन्त्री चाक वाठं मयूना ता सुचूठकी ॥ पात्राय रुद्र सर्वपां स्वता ववर्तु मिष्यतीं मधुलसुत
 त्या प्रतिविं विमूर्ख गतिं काधिकृतात्मनां ॥ च वरु प्ररुद्र वृद्धं च श्रुता न वं किमध्यगं ॥ दक्षिण
 गमय मश्रु कामं च चद्रव नूतनवा ॥ भुक्ति ४ भदिनी गता पत्रिमुकाय चक्र पवर्तनं ॥ ववमष्टादश
 तसु वृद्ध च वक्रा सिक्त सुलकी ॥ पत्र भुक्ति वाती च भूलहि न च मूर्त ॥ चक्र मत्रु कृति
 पद्मका विकाच ॥ अग्नि कृष्टी रुपर्वतः ॥ लगुठ दर्पण वीणा गुल्फा लिकुद्र सुर्ष ॥ अरुना
 तमिध ४ वृद्ध कै मूषल पाणकपालकै ॥ धनी रवचाङ्ग प्रसूकै रुपिद्यानि रुद्रनी वचनं घ

यमालाष्ट्रवर्तनिलासमानधूलिकीर्ताकैशुक्लाउचर्मचरलंविनवअत्रिकागवादनविकचीन
कैचवीजप्रवंकनपशुसुचिकुकायकर्मचरमघवृद्धिवृत्तासिकै।।नवंकमस्तुविरूयाद्यासफ
रैहाडिताविघ्ननाशनंसर्ववर्धुस्वहावाउअथवानायकवर्धुवत्।।मधुमालादिसर्वचवस्तु
निसुप्रपलावतदादिपदात्मिकांसमाधिकात्मपूर्यप्रहास्वसर्वलीनतागत्वावृद्धस्व
अव३।००जमदिअ३।४सहजसहाय००कुरुसनापूषुसैतावह३४ध्वनहा।।जिपसुभा००
००मननभक्तनगाअथारुहगवान्स्वामिपातलकधमरुमै।।मन्मयीकर्मजैचैवकांसर्वताम
काचसंतवं।।००ए।।हृवैचकाष्टायंपाषाणैचविषाषत४।।नकवर्धुविरुधुचरिचरुपंचम
वर्धुकजा।।स्वतनकभितभामपीगधिगनमवच।।हस्मवर्धुविवर्धुचनानावर्धुचकीर्ति
देतथा।।स्यामदनीचपीतंचहिनजऊऊविर्ततथा।।नकस्तर्वेनिवीधुनपनीकानककावय

तयपतनंतसलक्रयगगादक्षिणाहिमुखवक्रघ्रंणघ्रयलुतिनेभान्ताववृक्षवर्धुहीनंचवान
अवीचआनयीषापहोचकैचोवश्वाधमखंचेवकीघानीउन्मवेस्वितं।।पा००वपनतिचा
साधकसिद्धिमरुसिसिद्धिचरुचलं।।भानिपूष्टिकुपंचमप्रऊर्तेकैकैरुयैसफवधु
उंक्रुधियाहवत्गादि।।अगुंवेभविह्याचरु४।।अगुंउसुध्या।।अ।।अगुंवह।।अगवावर्ज
दकाअअय।।काचसहासव।।भामदकवरुक्कभकलिकाचपदनचविपूठनहवदिस
नाद्यार्निष्ठाचिकामतिमितिस्मृतं।।भीवव।।धुनवर्धुहंसनिधचावदर्शनंसिद्धिदंसर्व
भक्तपोष्टिकपाकंधनंसमालिसिद्धि।।अक्रवर्धुकुयत्यअथवावक्तविद्रलंकिं।।व
क्रिकाहवत्गामाव।।चातनाविषप्रभतकुविषाषत४।।विषाषंपातसंपापीसर्वकामरु
पापत०।००।।हृगवान्स्वामीवरुजकस्तथागत४।।सर्ववीव४समाथाग।।ध्रुसत्व४प

34

अवलुहीनं च वायुमकुरुत दनं । उलूयाहिमुखे वेधय्य ॥ ॐ ॥ नमः सकुसिद्धिदं ॥ आघाती वर
 पाथर्वपततिचाभालं विहया पातलकृत् ॥ १ ॥ कश्चिन्नपी ॥ स्याद्विह्वलं मधुलम्बनं । विह्वलं
 नयं । सफरवधुर्वेधकश्चरवधुर्नथावर्जसिद्धिसाधकनिष्कूलं । १ ॥ कार्त्तुं हवधमाद्विध
 कृत् ॥ आगवावर्जयीयाविचक्र ॥ ४ ॥ श्रीकपालनगृहीयादर्थं कृत्विष्टाध ॥ ४ ॥ हीनदत्तावि
 वपूठनहवद्विस्तागउपृष्टव्याधिजं तथा । कामधर्तृचक्र ४ निम्नमध्वदल्लुहृद्वधतं । पूजस्त
 नं । सिद्धिदं सर्वमन्त्राणां साधकः सिद्धिसाध्यान् ॥ पीतवर्धुवृहस्पतिपमतं पमलीकृतं । प्र
 विन्दलं किं । वध्माहृष्टिमहाकालसिद्धिदं पातलकृत् ॥ १ ॥ गमस्वस्पातुकाविश्वसूक्तम्
 गार्ग्यसर्वकामरूपदं । यत्साधकादविपी ० कृत् चपर्वतं । १ ॥ गल्लकृत् संपूर्णं गृहीयात्सिद्धि
 ॥ कुरु सत्त्व ४ पत्रं सत्त्व ४ ॥ ॥ ॐ ॥ ति श्रीवज्रवाही कल्पमहाकलुवा ऊपायनिर्भुयसीवि

NE

मन्त्रादिकर्मधासुरवंपितृपूजागतानास्थकम्पौवादिगमनात्सकं॥क्रोधस्तन्धपविश्याम
तेगृहस्थाकामकल्पिकांवन॥ॐदियाधामवेधूर्यस्वतावनाकनपूचसहजसंहाग
धचत्वात्रिकंशोख्यंप्रतिधनकतादिपूजकृतयूरास्वतावजंशोख्यंवज्रकृतंचया॥सत्त्वांतज
सर्ववृद्धयथाप्राप्तप्रतिधने॥रुला॥स्वयं॥नवंचशोख्यवस्त्राहि॥द्वारिंभञ्जमहादुतं॥रु
दूट॥३॥अधिविचदुविरूयातुक्तिताश्मृत्तपावग॥४॥पमिनीसंखिनीचिहीहक्तिनीरुंगनाम
न्दनार्कजां॥नकाचैवसर्पाङ्गिकांरूयावनमहोषधीं॥शोख्यदानन्दकालंदुसूच्यादिक
कंश्रष्टसंख्याचमानवां॥गरुतिचावतिश्चैववनतिधूर्मकंरुथा॥पततिथवतिथ्यच
वश्मवावाकाकल्पसंगितां॥संमकस्मृतिपदंश्रुवर्तयस्यकस्यदु॥संमकव्यायाम
वज्रजटास्वाननकृकाकस्यायउकहूँकाहूँगहयट्कूँकूँखाट्टरुत्वाट्टहाहूँ॥टम्बाल॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीमद्भागवतस्य प्रथमोऽध्यायः ॥
 वन्द्यकर्मपूदवीकुदवासुनादिमनुवितापंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 गत्वाब्रह्मत्वमाप्नोति नानानिर्वादिजनकं यो स्वस्वतापयाधर्मचदभयनित्स्वर्गप्रज्ञा ॥ १ ॥
 डिपससा ॐ ब्रह्मरूपनामा अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 नंनामप्रख्यातासिद्धिसंमता ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 यपाननसंप्रकर्मधंदत्वाविचक्षण ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 यतनश्रदिपूष्यप्रभक्तुस्याजकीर्तिप्रकीर्तितारासमयी यदि संप्राप्यमानंगासवयत्स
 ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 माख्यातंवक्ष्ये सत्त्ववचायथा ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि

तत्कृत्वा ननु संप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 च ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 पत्र ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 कृतं प्रवृत्तिस्तु सर्वसत्त्वार्थपूर्णवृत्तिस्तु तद्वत्कृत्वा ननु संप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 कालाश्च तद्वत्कृत्वा ननु संप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 पञ्चात्मकत्वात् संप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 धनी वाच्यं श्रीमद्भागवतस्य सर्वसिद्धिरुलोदयात् संप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 ॥ १ ॥ अथानुसंप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि
 पञ्चात्मकत्वात् संप्रवक्ष्यामि पंचामनामहादीपपूजाचसर्वकर्मलक्षणमहादि

माहायजुः श्रावणं कर्कटं बहुस्वाधिका प्रवर्तु कां उपधीपनिवासी च सर्वास्वस्वस्य क्रुज्जां
मर्मणां हृदि पथा समाकृष्य अमृतं सर्वसन्धिजां समाधिजास्तमा पूर्य प्रहास्य बली न ता
गज्जां सुखं ॥ ७ ॥ अमुदि अउ ॥ ४ ॥ सहस्रसहा ॥ ७ ॥ कुरुत वा ॥ १ ॥ सुसंसा न ह ॥ ४ ॥ वनहा ॥
विधानं नमसर्वसिद्धि रूलादयं ॥ बाम्ना र्धगर्भं सजातं गृह्य द्धिधिगमिर्तं ॥ तस्माद्देवा च
तस्या बलकूली प्राप्ता साधयत्सु प्रगापि च ॥ संपूर्णं कुरुत गजं सुतो र्गातं ब्रह्मपमिनी ॥ खा
महयत् ॥ तस्मान्नटकूली नाम व्यापिता बलु आगता ॥ ४ ॥ पूर्वा कच विधानं नमसंपूर्णं सिद्धिजा
गी सवयत्सु दानमात्ममयं तथा वक्तुं महयत्सु विचक्रुत ॥ ४ ॥ पंचाक्षं यथा प्रापं हतं
मांसं च हस्ति मांसं तथैव च ॥ न वमान्सीकृत् ॥ ती मांसं सी अहय द्धिचक्रुत ॥ ४ ॥ पंचप्रदीप
गन्धानि धितं कार्प्यं न हस्य न तु का वयत् ॥ उडिकी का वयत्सं मक्त्वा धय न तु र्गमिर्वी

मालहृत् ॥ मरुजापंत आध्यानं सर्वकर्म रूलादयं ॥ वसाय नं ॥ वी वस्य सिद्धिदं वनमा ॥
च श्रीपदं ॥ ७ ॥ हृत् गवांस्वामी वज्रवा नाहिनायकी ॥ सर्वथाग समाचा न वज्रसत्त्वसूखा
तम सुला च ता वनादि पंचदश पटल ॥ ॥ अथान्यतः का वास्या उ कथं तल म्प्रवि
मूलन गि विरानली ॥ को वज्र मुखे ॥ पिसू वत्सर्वगमिनी ॥ वाधिचिरु महानंदार्त्त
दिवी गर्वा यत्साद लरूलां ॥ प्रथमं का क वधी जं पति तं मा रुपमक ॥ एकत्रा नि पूत द न
मेष च साखात्मा दा दी धानि धिवा न ता ॥ इती वाल म्पश्चा दुष्टिनी कर्म स्पर्धना ॥ ७ ॥ म
मरुदि न ॥ प्रवर्तु सर्वसहा वान्नि र्दलित रूला वरा च वां ॥ धिपद च रुद्रा दा दी नां व्यायामा
अष्टका वसं नितं ॥ वज्रम सुल मरुदु प्रहा पाय सु न पि किं ॥ सिंह आ वल म क वा म पदी
क क वा ना ला स्या यथ मरुत्वा रूती रूत्ता हयत् रूत्वा रू हा ह उं ट रूत्वा हा ॥ ७ ॥ तिस्र

जिंभत्सकं नायकी वज्रवावाहिं गमलसूतनायकतापितायागमातनीसूतद्वयं महापा
 जिंभद्वयपायसुवक्रसूतश्वपार्श्वतः ४॥ चक्राष्टागिकं दानं ताहिपमं कृतस्ममं ॥ जितागि
 भतकितागिकं मात्स्यं च वज्रपमं कृतं चक्रं ॥ शालचक्रं कुम्भसूतचक्रं नादकं कृतं लकं ॥ त
 तागिकां नददं नदीदिताहि ३ कपा नपक कस्तुभा ॥ धनशीपत्रिका कृतं नलहा नदीप
 श्ववज्रमहायतिं ॥ किंकिनी जालवक्त्रे श्वपदाकाघशनादि ततश्चाकाशं च सर्वेष्वनय
 कवाकुरु रूपान् रूपगालिखकं ॥ कर्लिका वलीयदद्याम् मधुपाना नथे वचनगर्हपयस्य
 बीजविद्यासर्कक्यार्ककर्लिका सर्वसूतं वा ॥ मृथवाकार्यादिकाश्चेव श्रुतं च सर्वमधुलं
 याटका ४ ॥ कवरापविदयकुसुमफणिं ॥ निकावयत् ॥ कालसूतं यहि तं चलं वाष्टमच
 नतपूषवयत् ॥ वलि ४ सर्वेष्वकर्मपूलावनादिसमकतः ४ ॥ दापयद्वज्रं देवीनां कृतपा

सम्यक्पश्चात्कर्मसमालतं नानानिर्गम्य कर्मवादवीसफणिं ॥ नित्यपिका ॥ कर्मवजीवि
 मूलमखं कालास्यानवनवति ४ द्विपार्श्वयोः ४ ॥ तथापि निसफसफ ४ पंचालिकं कृतं पयत्
 यथाक्रमं ॥ वाममहिषाक्षी वक्ररूपामकना भष ॥ गधुचक्रं च यथाक्रमं पूलकृतं
 कवकसनकं ॥ महामली चक्रावाकं मय नताम चक्रं ॥ पात्रावकसूतं सर्वेषां स्वताववर्तुमि
 य ४ संविध्यते ॥ तथापि विन्मूलांगतिं वाधिकतात्मनां च न ॥ पूतं च न चक्राकां
 नेमसूधनदसूयथाक्रमं ॥ वामयमश्चकामश्च चक्रं वज्रसूतवाशुकिधामं दनीगधपतिमु
 चिकुनदवाचनवज्रधुक् ॥ दक्षिणसूतं च वज्रासिद्धकमूलकं ॥ पत्रशुकरि नवा
 नंकदलिकामय नपिठिका तथा ॥ काकपत्रं च विकाचं श्रुतिपर्वत ४ ॥ लघुधर्म
 कवर्धकालं तलं च तं ववर्पुं कृत्वा ॥ वामधध्याष्टदंतं मूलपाभकपालकं ॥ धन

चर्कद्विगुणितादीर्घघानविंशतिरुगिकां गजिजठकात्रे मन्त्रार्थनालो धार्यन्ति मन्त्रिना यस्
उधसूत्रयथा ४३ श्रीसहजादयमधुलैः। अर्धहस्तासमावृत्य भग्नहस्तं उयावतं प्रथमं
पूर्वालुब्धदिकस्तु नभिष्यन्तिष्ठ समाहितः। आदौ च कुर्यात्ताननसूत्रयदवकाष्ठकान्त
नूनतश्च द्विगुलनेवकाष्ठभक्तुसूत्रयत। ततश्च कुर्यात्तानकाष्ठं उसूत्रयत ४४।
लुत्तयत ततश्च कुर्यात्तानेवकाष्ठभक्तुविश्वेध्यातदर्थविप्रमलत्वं ०० निति मधुलसूत्रकं
दितं पंचवत्तमयेष्टं नथवागधुलादिदिशि ४५। स्वतं पीतं तथा च कर्कहविर्तं कुरु भवचरे
माहितं यावन्मात्राक वपपापातनीयात्पत्रसर्वं स्थलमात्राध्याधिकाधननाभन
तसंतर्वं लाहितं पश्चिमं तार्गमवगतारुत्तसंयुक्तं। मध्यमाहमितागकु ०० उकीलप्र
वत्समाहितं वज्रपंजलमधु ०० मभानाष्टक हृषितं च दध्यागकल ०० ववजका

उभात्यां लक्ष्मीवल्लभासुतं धावा शकात्रे मन्त्रां वायूयां किलिकलालजठ ४६। पूर्वाभि शोष
उधनद ०० वनागउधनाधिप ४७। उभात्यं मथरुतासनया ०० उनिनाधिप ४८। वासुकी
गर्जिता प्रार्थिता धावा शवर्लाघन उवच ४९। पूवा धसुथा वर्षश्च नभुमघाधिपा ०० म
हव्याधुमरवधावाभि सूर्यगमूख ४९ वदलाविचमवत्काके ४९। कंकालभूलहिनाल
नकसिधविषाधवे ४९ समयाचावयागयागिनी गले ४९ यज्वतात्रा ४९ सादिदि ४९ महावि
रुया ४९। ०० स्याह गवान्नामी वज्रवात्राहिनायकी ४९ सर्वथागमहावी ४९ वज्रसत्त्व ४९ सुखा
वस्त्रा ४९ लक्ष्मी ४९ धाद ४९ पटल ४९। ॥ अथ वज्रवात्राकावकथनमन्यु वभीगत ४९
लीयमस्य सुन्दरी सा ४९ मन्त्रं वचनवक्रया ४९। दध्याकात्रमहाचक्रपविर्लक्ष्मीलिकात्र
कश्च संवत्समं। नित्यं निश्चिन्तामासा शक्तिधिदिर्भक्त्या ०० प्र ४९। विवधवास्तव ४९ कमात्प ४९

दिक्कमाश्चसफजिंभात्मकंरूढं। प्राणभाकिमुजानीयादकासविंभात्मात्मकाभाजकाधविं
कालसमाप्तातिप्रवत्तानवहत्सदाभ्रकनालदिनायचपाठभवउसंख्यया। वर्षकमस
नादिन्ययप्राप्तमिंवाहयदिसंमतां। उर्ध्वसावापूर्वमलंचस्वांसंकत्वाकुपकांसर्वपू
र्ध्वयकंकत्वातीववंद्रिस्तुप्रकलत्वाभागाविचवक्रपायाविनस्पनिकाम्मास्वयंभायानंद
कंचपिवरुमायकन्यापियवडा। रुद्रयत्कीवडाकुलंममकंकृत्पादिकंभायदिपा
थवारुम्पालयवधंयावदनिष्टरुयंगतठ। कीवाहावंकंकसोत्वंश्रथवाभाप्रवलानिच
चसत। उच्छादकंपिवत्राकुशाहावंस्वल्पस्वल्पकां। तावययमइतीकुसफजिंभात्मकास्व
नयत। सहस्रसंवाधितावपूनात्स्रक्षककालगम। मिलन्मन्यान्मनं। धूमरुनाप्राप्तम
लंपूर्वरागिकं। दिवतीवर्षुतठपूर्वकनादिद्रुपितीयतभा। उ। अपरुत्रयभमपाइपातीयय

यात्मकंमहामायास्वरूपिकांसर्वेषांयागिनीनाकुश्रुतंकृयलावयतुगतपूरुदयस्थतंचस
जप्रतिवत्स्रापिनालिकांतावयतुसघपत्तावकीचंचपंचामतंस्येकुना। पिवक्षजायत
यमइतीरूयासंमकुहासधर्मतां। वंऊं। पीत्वापाकाकुविविधकर्मतामतां। एकवाकंसमा
सचानंधवंपातठपिवत्स्रधववावती। पंचामतादिदयत्किंचित्प्रविष्टंतस्यमध्वकां। पीत्वा
त०००श्रुजनामवृपावरुप्रसि०००मवहनया०००वादिश्रुतुरु०३०००निपापनपू००००
कृवंमतां। इतीपकृयंहेसश्रुवइतीव्ययंपदं। एवंवरुप्रकावाकुलकृयदृष्टवृद्धिमान
कृताचनं। यायमस्यर्थयत्संमकनपूर्वेदापयकृतभाश्रुतातसंप्रवक्षामिवजाचार्यवि
श्रुयाविदधामाधर्मवाकंसर्वपूसर्वसत्त्वपूश्रुववक्तुदानादितिप्रतानिस्स्यागध्वनाति
नाथरुतकेभासत्तासयविभाषंचश्रुनाथनहुवान्धव००००दियदहसंप्रसुप्रियदर्शन

26

[illegible]

चार्यमहिधीयतः। आचार्यसंश्रयकलिनाधर्मउत्सवधनिः। रूपंकाधनं कृतं नष्टल
यजुन्मसदा॥ धीवाविनीतामतिर्माक्रमावानार्जनाभभादभाकमलपवित्रागीसत्त्वानां
सुधर्मदर्भनात्सवं॥ दानादितिवतानि संप्रबलाकाहिकांदि॥ तेषांभिष्यप्रभातपदी
वीवयगिनीववसंप्रद॥ ॐ कृष्णहं महानाथमहावाधिनयं दृष्टं। दहिभसमयं तत्त्वं वा
अद्विकथयादहसंस्त्रितं॥ दूधधर्मचसंघंचदहिभभवभुयं। प्रवभयस्वमानाथमह
संम्यक्ताजनस्त्वमहानया। संप्राफाह्ननमकुलं वज्रमकुप्रतावने॥ तस्मान्मतिमिमां
पनिष्कसूलापलिं विवर्जयत्॥ सत्वस्यावाधनं कार्यहानयानं न भवयत्॥ अतीर्ण
स्वसागवात्॥ तस्यांभिष्यसमायुक्तंभिष्यासांचधिवास्तयत्॥ दद्यादिदं तवाष्टं च भुवि
कावमकुसंयुक्तं कर्मात्मस्य प्रदापयत्॥ कायवाचिरुसंवनेदद्याधुताधुतं स्वप्नतजसर्व

गृह्यदहसहसंयुक्तं। पूर्वजन्मादिपापस्य निर्वाप्यमभुलदर्शनं। कस्त्वं तां ॐ तिष्ठत्स
तकुतलुलं तविष्मति॥ उदकमकुटं वज्रघातनामाहिषककं। पंचतथागतात्मिकं। अ
चविद्यादिवज्रघादिसंयुते। आचार्याहिषकसंपूर्णं। द्वितीयं गृह्यमूलमं प्रह्लादनां रु
तिष्ठासमयं ब्रह्मलुममभुलं। सर्वपापैर्विनिर्मुक्तं वकाथे वसुस्त्रित॥ अयंचभक्तं
गुग्वाभिष्यश्चरत्। किंवत्सवं। इत्यादवंकविष्मामियथाह्लापयसि विता॥ ततमुग्ब
प्रहर्षितावददवं पूनः पृष्ठस्य प्रवयत्॥ अष्टाहिषकलातकलातनकतकथामहाय
सांप्रतं। होमंच पूवयत्। उदयात्संपयतो जनां। गतचक्रं ततादयादीनानाथंच तर्पयत्
वनाक्रमे॥ संम्यग्भगमसंपन्नसिद्धिरवतिनात्यथा॥ ॐ ग्राहतां स्वाभि वज्रवावा
वज्रवावाहिकलमहातकुवाज अहिषकात्परिमुक्त्वं चनादिचक्रावनापदभसपाद

69

ॐ तिष्ठतु सदा ॥ ॐ तिष्ठतु सदा ॥ समयादकपथे च मधुलक्षणां पनं स्य यत्सुखं पति
तात्त्विकं लभं वत व्याकथयामेव च ॥ मृनूलास्वासेवेवर्णादयात्कलभसंरुवान् ॥ ॐ श्रुयीं
प्रह्लादं नरुतीयरुचकुर्थं दुपूनसुभा ॥ उतातिप्रकसेपनासमयीसाविधीयते ॥ ६ द्दुष्ट
यं च भगवतं वक्रा ॥ ४ तिष्ठ समयसं वक्र ॥ सर्ववृक्षे समं धाका मृदुपत्रमभास्वति ॥ प्रक्षिप
॥ ततस्तु गृहदवत्वा तथागता कदक्रिंता ॥ नानालंकात्रवक्रादीं स्वभावी च विभषत ॥
कथामहायभा ॥ मृयमसरुलज्जन्मसरुलं जीवितचम ॥ मृयवृक्षकूलजाता वृक्षपूजास्मि
थं च तर्पयन्त्ययथापदं भगवत्पश्चात्समयाचावतस्य ॥ लाजने कृतिसनान चक्रादिरा
मिव ऊवावाहिनायकी ॥ सर्ववी ॥ ४ समायाग ॥ वृजसत्त्व ॥ पत्रसूत्र ॥ ॥ ॐ तिष्ठ
पदं भस्मादभपठल ॥ ॥ अथत ॥ ४ संप्रवक्ष्यामि कथं नृधसां प्रतं ॥ सत्वानां वास

नीतिधर्माभियुक्तशक्तिरिति च। प्रमत्तकार्यचिन्तामध्यमलक्ष्मीं। अमुतामृत्युसं
 गतमदाविद्याधीयतनाशसंभयः। पादकस्य तालकां विद्यादिना हि च विध्यति। द्विती
 ति। तदामासुयनापि रूतकस्य वसंतगतः। पादस्य तालकां विद्यानां भिन्नां यदि विध्य
 ते त्वयि। तस्यानवदुवलायां वर्षे धर्मीयत ध्रुवं। पूर्वाक्षिपंच वासवं मध्यक्षिपंच दधकं त
 यदि पूर्ववत्। कालनियमनजीवरुवननाशसंभयः। जिह्वायादधर्ननंदवीज्याहमव
 धननदुदधर्नने। सफाहनतदामृत्युः कथितं पूर्वजन्मनि। अक्षुप्रतिपदानि र्थे अक्षुप्र
 पूरं हितस्य वसंतगतः। यदि त्वं रुदायानि पंचत्वमासमवच। घट्टनादं निर्मितं पूर्वक
 नरुयदि च उदिवाक्यो। विद्यनियस्य सत्वस्य मासमकं सजीवति। हस्तचक्राचक्रसंभी
 नित्यदि सामर्थ्यं हंततः। चक्राक्षुष्टयाद्या वंजकृतां वनत्रयं गच्छिना जीवतं याचदं प

सर्वमाशपिकः। एतच्च वं। विपक्व न त्वं वत्सु। नाशविचारणच वं। पूनर्विध्यति। तीर्षास्य
 तथविध्यसधामृत्युविनिर्दिष्टः। त्वं मरुधच तथा विध्यतः। त्वं मरुधच त्वं वत्सु। नासास्य
 यस्मिं कालं त्वं वं धतस्मिं कालं ०० दंतं वत्सु। वधः स्तनं स्तुटं लक्ष्मं मर्दय दधमलया।
 मन्त्रितः सूर्यवर्णिन विष्णुजीवमरुधकुने गृहः। तावयथा गिनीत च प्रयागं तु वं महा
 वं सर्वसिद्धिकं। वं विध्यकं विद्यानदधुदः। रुतः कः। टलटलायमानं रुपूकं वं रु
 नमो वतिष्ठति। च वं। रुदयं धातुं रुदिका वसंतं रुया। समाधिना मतः रुतः रुता वतः रु
 ता तावयत्सुदनवाहिनी। सातं रु सर्वना नीत्याय मस्य हस्तिपातनी। नीका वं रु चितकन
 वं रु सवधुना स रुया गिनी। वरुमधुलमरुध रुतः फिं। त्मिका म्बवाठ। उं या रु प्रम
 प्रह्मपायस्व ता वं च तावय रुतः मधुमठ। अस्वमायुः मासं च वं च रुतः रुतः रुता वयः।

टं अन्यवंचनमृत्तुचविहयाभननक्रकाठकिं दुसर्वभन्यपदं कत्वागुवाधिननडु॥
 श्री॥ पादयातालकाविद्यानालोवधयदाहवत्तुयदिवसपवाहर्धपंचत्वंगकृततदा॥
 नभतिभतगलिंगसमायागमध्वलधचहं दिका॥ स्माच्चतुल्यंतदामासठमवर्षेत्तवति
 यायदिधनंनसंवयत्तु॥ वामाजिपूरुवीर्यायांथानपभतिदप्य॥ सफाहामयतनूनय
 धगतवध॥ सद्यमृत्तुदाहवत्तु॥ अकस्माज्जायतस्कूल॥ कप॥ कृ॥ धा॥ रुया॥ क॥ ल॥ य॥
 र॥ थो॥ ष॥ हि॥ मा॥ स॥ क॥ दा॥ मृ॥ ल॥ हि॥ तं॥ व्या॥ धि॥ सू॥ च॥ कं॥ च॥ इ॥ षी॥ ध॥ व॥ तं॥ नि॥ स्यं॥ दृ॥ ष्ट॥ नृ॥ पा॥ पि॥ वि॥ म॥
 य॥ म॥ धु॥ ल॥ अ॥ म॥ ध॥ वि॥ य॥ त॥ प॥ र॥ ध॥ त्स्व॥ व॥ की॥ द॥ क्रि॥ क्षा॥ धि॥ ता॥ ॥ दि॥ वा॥ ह्य॥ या॥ प॥ र्थ॥ प॥ र॥ ध॥ इ॥ ल्का॥ या॥
 णि॥ या॥ क॥ ल॥ न॥ त॥ था॥ ग॥ भ॥ र्च॥ न॥ ग॥ वं॥ प॥ र॥ ध॥ दृ॥ ज्ञा॥ य॥ मि॥ त्व॥ व॥ गि॥ वो॥ ॥ प॥ र॥ ध॥ य॥ त॥ पि॥ भा॥ चा॥ घा॥ दृ॥
 के॥ क॥ भ॥ क॥ स्त॥ मृ॥ त्स्व॥ मा॥ सा॥ व॥ र॥ ध॥ त॥ व॥ त्त्वं॥ क॥ वं॥ क॥ न॥ हि॥ तं॥ च॥ न॥ सूर्य॥ व॥ मि॥ वि॥ व॥ र्जि॥ तं॥ वा॥ यो॥ सूर्य॥

श्रीया॥ शु॥ क॥ तु॥ ल्य॥ का॥ लं॥ प॥ न॥ कि॥ व॥ त्त्वं॥ प॥ क॥ म॥ कं॥ त्व॥ त्व॥ सूर्य॥ यदि॥ धर्म॥ न॥ स॥ व॥ य॥ त्त्वं॥ त॥ जा॥ पि॥ दि॥ व॥ स॥
 दृ॥ त्वा॥ र्या॥ वि॥ ना॥ भ॥ णा॥ धा॥ म॥ पार॥ ध्व॥ च॥ द॥ र्भ॥ ना॥ त्त्वं॥ द॥ क्रि॥ क्षा॥ द॥ र्भ॥ ना॥ सि॥ रु॥ ता॥ र्या॥ दी॥ नां॥ म॥ ही॥ य॥ सां॥ ॥ पं॥
 पा॥ स॥ म॥ ध्व॥ त॥ ॥ वा॥ ल॥ का॥ रु॥ स्म॥ वा॥ मि॥ च॥ वि॥ हा॥ न॥ य॥ द्दि॥ म॥ व॥ च॥ ॥ स्व॥ प्रा॥ क॥ था॥ नि॥ वा॥ ह॥ कि॥ म॥ व॥ र्षे॥ त॥
 वा॥ न॥ द॥ क्रि॥ क्षा॥ दि॥ मि॥ नी॥ य॥ तां॥ ॥ क॥ र्त्वा॥ व॥ क॥ सु॥ थाना॥ वी॥ का॥ म॥ य॥ तं॥ न॥ व॥ ध॥ का॥ ल॥ वा॥ दि॥ दु॥ सा॥ न॥
 ॥ क॥ न॥ स्व॥ प्र॥ प॥ र॥ ध॥ द॥ वा॥ च॥ क॥ व॥ धा॥ च॥ नि॥ श्रि॥ तं॥ ॥ व॥ क॥ व॥ क॥ प्र॥ लि॥ फा॥ र्जं॥ व॥ क॥ मा॥ ल्या॥ वि॥ रु॥ ष॥ र्षे॥
 ॥ ने॥ मृ॥ त्स्व॥ वंच॥ क॥ ॥ क॥ त्व॥ न॥ वी॥ य॥ तं॥ मृ॥ त्स्व॥ म॥ न॥ जी॥ य॥ तं॥ त॥ स्मा॥ धर्म॥ प॥ वा॥ चि॥ का॥ सं॥ वा॥
 ॥ कं॥ या॥ गं॥ ॥ ध॥ य॥ दृ॥ ह॥ म॥ धु॥ लं॥ ॥ ना॥ ना॥ नि॥ मि॥ रु॥ सं॥ प्रा॥ फ॥ ॥ स्वा॥ स॥ दि॥ ॥ क्रि॥ ति॥ क्रि॥ ति॥ ॥ मृ॥ त्स्व॥ का॥
 ॥ मृ॥ कं॥ न॥ स॥ मृ॥ य॥ धा॥ वं॥ धा॥ व॥ न॥ ॥ स॥ सा॥ धनं॥ ॥ वंच॥ कं॥ न॥ वंच॥ च॥ न॥ य॥ धि॥ ॥ प्र॥ भा॥ क॥ मा॥ व॥ ह॥ त्त्वं॥
 ॥ वि॥ च॥ क॥ ॥ ॥ रु॥ द॥ य॥ कं॥ वा॥ व॥ सं॥ था॥ क॥ घ॥ ट॥ क॥ व॥ म॥ पार्श्व॥ दु॥ ल्य॥ प॥ य॥ त्त्वं॥ वा॥ य॥ वी॥ र्जं॥ त॥ द॥ र॥ धा॥ ता॥

गतदरभमस्वी। वायवीजदयंकायंसंपूर्णकृतयागवान्। उच्चावयघटनंमकुभकविं
किमाङ्गसिद्धिप्रदायकं। उक्तमाधर्मतदनकथनं॥४॥ गुह्यका॥ नातिकामिकस्वर्ग
वतिमासानां कर्तुं। किन्नराकथा। चतुर्थायदिगतदवीनवनाश्चरविषयति। वक्रधात्र
उत्क्रान्तिकालसंप्राप्तमकालदवघाटनं। दवताघाटमात्रं। नवकपतति। तत्त्वं। तस्मात्
सुनिमित्तमृष्वंचनादिप्रयोगवता॥४॥ अष्टादशपटल॥४॥ ॥ अथान्यसंप्रवक्ष्यामि
नंकिमककुशलापानमपुत्रुभकोउहत्रं। वृंहंसाभायस्यदं॥४॥ वज्रधक॥४॥ मायाव
री। वक्षतनवतयासिजालचन्द्रसिवाश्पनं। स्वस्वहावश्चनयन्तयागी। तत्त्वधवि। का
चनं। भवदविष्कालकुनाभयकाभमधुलविधार्यमानवायं चमवहीकालवंचनं। प्र
तववात्रपष्ठितमूर्खकुवर्धितानानिकापिसामानसानात्रीप्रकथनं॥४॥ दंचममलकृदी। प्र

मानतां। कथंचेवमहाप्राप्ते वजापमंचरुधने। मन्दमन्दगतात्मानस्त्वयंसर्वपूसाधिना।
पदागजकंगुलविभिष्टपूत्रद्विभलकृत्तान्। महाधनपदंप्राप्ति॥४॥ संमक्प्रहासलकृत्तान्।
सदाभकदाचिरुपूस्ववसायाक्रायागिनीनांसमाभनं। कर्तंतपूमहानद्यात्सादनामृ
महावज्रधनपदं। अयंनयनियामृ॥४॥ सिद्धिंरस्यवचारुमा॥४॥ श्रीवादिमहानवकार
रुक्मि॥४॥ धर्ममूर्खमादिना। वर्युधयंडुदवीनांरुवनिर्वाहस्वरूपका। मधुलपूनमा
रुसदापायनसरुजयागमद्वज्रधक। उं। वमरुहाधममामंथकानीवयवंरूपूरुषारुद
कचक्रपूयशमनसंयुक्त। कंन्योक्मंचमासंचरुदवतापदीपिनी। सत्त्वार्थकृत्तकउं
महापाणप्रविष्टेसर्वदवगां। महाचक्रवर्तिरावनिर्मितं सर्वसर्वकं। सहजंरुवकितदासं
दंसर्वनमायानवभूयतां। संप्रगमात्मकं। तावंब्रह्मस्वामीसमीपसे। कृष्णादिउहावत्वं

नमस्तुभवाविंशतिपत्रिकामेव विहृतवायुचक्रसंवायुवाचक्रवत्सामायनयनहिग
हेकामिकस्वर्गस्वविन्दनायपदहिनः उर्ध्वनायपदादुश्चक्षुर्नमपतिहृदिर्नयकार
यतिरावकुशावस्यपुनानामुक्तमतिर्यक्तस्यमश्रुयाननवर्क्यानिभाक्काङ्गानिबन्धन
तत्तत्त्वंतस्मात्तत्त्वंचिन्तानिस्तयतकुविचक्रः॥४॥ ॥ॐतिथीवज्रवावाहिकल्पम
न्यसंप्रवक्ष्यामिवावाहिकल्पकथनमथागिनीहिःसमाज्जचक्रत्वात्पृष्ठेनपत्रांशवक्रा
॥॥ॐधमायावतात्रचक्षुसंस्तस्यात्वात्तवान्॥ॐकुजालंबदद्वीकुरुमथात्वाचावतान
स्वधविश्वकायमवततावचकर्मसावचनोमहः॥पात्रंगच्छति संसावात्मवर्त्तनापि वं
लवंचनं॥प्रकृतीभक्तकविंभक्तुसहस्राणिदृष्टासिनं॥प्रवर्तिताश्रवधूमीमर्थनीसावधी
ममलक्ष्मी॥पूजयन्प्राहसाद्वीयायाच्चेकार्थसूचनात्॥यंयं समाधिमात्मलम्पसं समाधिस

पूसाधिना॥समर्थविपश्चनात्वांचवाधिमरुत्रणचनं॥नीयनरुमिवज्ज्वालापवधनी
महालक्ष्मीपादसंचावलीकृत्वा मर्दनासर्वकाचकठ॥पञ्चकडुसदाधृष्टंमवर्त्तयगिति
गत्वा दनामृत्वंचनं॥तस्माच्चथागिति॥कर्त्तव्यंथागिनीनामुपूजनं॥ताहिमुद्रपूल्यन
महानवकारवक्रवृष्टमन्त्रग॥किंकननक्तं पूज्यं किंजनीयासिक्तं पञ्चागिनीनांसदा
धुलेपूनमरुद्रुतावयचिन्तयामन॥स्वमज्ज्वालावरागनसफ्रिं॥तिथ्यागिनां॥उत्पत्ति
पूज्यारुद्रहंरुद्रहंरुद्रहंरुद्रहंरुद्रहं॥उत्पत्ति॥नवंसर्वपमाश्रवयंविनूतमध्वकां॥रुद्रयादि
र्थंरुद्रकुरुवेसमतागधिका लनां॥वावाक्कानिर्मितायाकुत्पन्नवनाभनी॥रुद्रवां वजी
वक्तिरदासं वृक्षत्वमात्मसंस्कृष्ट॥संराववलरुद्रहंरुद्रहंरुद्रहं॥उत्पत्ति॥मायाजालमि
दिउत्पत्तिवत्स्वत्वावपूलक्ष्मी॥व्यवस्थामाश्रुताकावालावालावत्स्वत्वावकां॥विकल्पकल्प

आयं तावत्तु सीपस्थं संपद्युतं सत्प्रियं अनापाननिवाधमुज्ज्वलनादिदुपर्ययत्तानानाग
 मम॥ चिरं कस्य दगकुश्च कथितं बह्वृत्तं क॥ शिष्याय उपवृत्तं अनापाननिवाधेन वायुना अ
 गक॥ तस्मात्सुखवतानाकुलं न वदस्यतां च न॥ दीर्घकालताकवृत्तं सवयनिककल्पितां
 रभाषं नाशविद्यते वक्तुं वाधनाद्व्याहृतं दसुवाधिसत्त्वक॥ ॐ विना ॐ सकृज्जनविस्
 तृतगममहाश्रमवृत्ता ॐ सकृध्वं क॥ नृणां श्रवणं ॐ श्रुत्वा सति जिज्ञापयतु श्रवक॥ स
 मर्जिता॥ सर्वलोकप्रदं प्रपन्नादिनवकास्ययं यमादिकारधप्रयत्नमथनी पूर्ववासनात्
 ल्पकुल्ययनं अष्टविंशत्सहस्राभिलक्षं सप्तदशानि च॥ कृतमानसमाख्यातामनघां कल्प
 तित्वसहस्रकं यतकल्पसमाख्यातास्तत्त्वानि विचक्ष्णन् भाषन्तं द्यापयथासंभित्सहस्र
 पत्रकल्पसंख्यया॥ द्यापयकालिसंधिश्च चत्वारिंशत्सहस्रमवच॥ द्वाविंशत्सहस्रातिचत्वारि

तावत्सिद्ध्यते नाशुर्भय॥ कथयिष्यामि ते नाथ चत्वारिंशदीपतावनाम्॥ पूर्वविदहउल्लवक
 ॥ प्रथमतः जानसिद्धिरुमी विधीयते॥ अथ दीपसंज्ञा तस्य प्रथमीर्थरुलोदयं॥ अथ दीपसंज्ञा
 तगवान्स्वामी वावाही वज्रनायकी॥ सर्ववीजसमायागाद्वज्रसत्त्वपत्रसंख्यया॥ ॥ ॐ
 पूर्वचनादिउ न विंशति ४ पटल ४॥ ॥ अथ तावत्सहस्रं वक्तुं संप्रकृमाधिलक्ष्मीं श्री
 ॥ अं मूटं॥ धर्मसंहागादीध्यायसर्वपिष्ठिकं तं हवत्॥ प्रथमं स्नानमासाद्य विज्जनपर्वता
 एवं सोचादिपूर्वकं॥ तगवान्स्वर्ल्लितावम्पतादितावनाकवान्॥ प्रतासनमहाध्यानां ता
 त्त्वानां वाक्चत्वारिंशत्सहस्रकर्मिकं॥ एतसं वृत्तिपंचनिवृत्तियन्मूलाककां॥ एकमासाद्य
 प्रयत्निकध्यानापवनात्सर्वसंस्कृतान्॥ सभ्यसहस्रात्मकं च न हत्वा आत्मकत्वेनात्मा स्व
 र्मभागा॥ नकात्रपुण्यात्मचसंस्कृतापगतर्ममाक ४ पूनर्वा दमविल्लीहनादि न प्रयाम

पावनकविदलितं यस्मात्कृष्णार्ककावर्कतथा। नहावपुष्पभूयं च वक्रमाश्रय रूपकं। श्री
 अर्चित्रस्मयन्नानावर्धुमाकाभाप्रवितं। स्तनजकिनी वृषिनी कुजालकष्यदवतंभा गगर
 लज्जा। पापादिदभनांकलाकवृक्षाघामनस्मयत्। भूयताचस्य तावंचयागश्चाविलाव
 पविस्सूटं। स्वतवर्षचउवासंजिनं कुंजकुजादभी। प्रहसं पूटयागमाचा नातवतसी
 र्धचउधक। हवरा विसमाकांतमालिरूपदसंरुत॥ वज्रघर्षं च दकि चर्म दमवृकति
 सूचत्वा विगेष्टयपदी कुं विध्ववर्षुकुचकं च द्वादभात्मक। धादभवा नात्मकवम्भम
 वंचमृषुकं कालमीदृभीपाभास्याचाईभीरुयंपङ्क्ति काचकचक्रका। नके कं ध्वकिगवचरकज
 काध्वनितिष्ठसदा॥ ॥ जगत्मननूविहिपङ्ककडमिभुनपवस॥ ३०॥ कृत्वा मना
 मरुवाश्रमवला॥ ३॥ विश्रुतिश्रुपम्काममजातिमलाश्रसहस्रदरुता। वमवममां वज्र

ॐ कावनसहधम्महंमि०० कं अरुसिहजसत्रश्रवण०० कामरुम्पवमाषा०० किम
 आठकायवाक्किरुवज्रहंरुट्स्वाहा॥ उच्चावर्ष०० दंमकुं साटिप्पाका वयागवान्मटिप्पामकु
 सुवठभरुगं कायंकुरुहविकाइर्धर्धकंपिगसफति। रुजाश्रयाकुसुफदभाजिनं कुंचचकुम
 सदापापीनवकृष्णमनरुसंगाडुलंगसीनिता॥ ३॥ ज्वाकलालहीषभासव्याश्वव्यक्तवसनक॥
 पवातुवजासिद्धद्विभूलंचदक्ति। ययं यथाकामान्। पवर्षी कर्हिवासेचभूलंतित्तनुमरुजं
 कातभाभाकाकपङ्कं चिकाचश्रुतिरुधीरुपवर्तं॥ लंगुदादर्पदीवाभागुल्लुपातिमुद्रुट्
 मातु। वाभयधधर्मसीधंभूलं पाभकपालकं। धनूखवाङ्गपुष्पकं। धर्ममाला॥ ३॥ वला
 लिकासीचगहारुनिमसर्ककं कालत्राहिकाचेवनकुडकं। उवर्हिकाभनिश्चवकीलककुव
 ह्याद्यासफतिकवारुकां। पंचमृडाकृताहवर्षेष्टमजायनरूपसीभतंचमृमालाचेवकाय

तावेष्टसविस्त्रुनकंवितावयत्पदमालाकुसर्वघांभितानांकावयद्वतीपमदलप्रपूर्वादिना
दिन्यायाघट्कंनथा॥उरुनाथापश्चिमारुवामायाघट्कंपूनपश्चिमायादक्रिभानंरवधुवाह
तादुपवावता॥सवालिकाश्नूवर्लचक्रुर्धकादुनीलार्धकी॥वामायायस्वनीरुडाकृष्ण
मनीचविधंउरुवृक्षलोवचनूदकीमतिमाव्यातंनकार्धंउपीनार्धउभूपिस्थितेववीमखी
चपंचामृतककाप्रग्यालीरुपदंवेवकपात्रमालाधात्रिहि॥वामावरुषूविह्यासूमत्रपवि
हउत्रपितीप्रचउचक्रुतीचेवप्रतावतीमहानभमवीवमतीवर्वनीचलेकभ्वनीरुम
रुहडिका॥हयकर्धुवग्नननाचक्रवग्नखुवाहिका॥सौष्ठिनीचक्रवर्मिनीस्वीनाडुमहाव
सत्रभ्वती॥०००सिद्धिमहाकालावर्धुचक्रप्रयादभीचउरुजाउकवर्ककपालवद्याईधवा
रुषिताप्रतासनामहाधात्रासर्वचक्रप्रयागिनी॥नानाहययकाश्चप्रह्लापायादिकनथा॥

विश्व॥उकलमिप्रमरधचदादभरुमिनिष्पता॥उवंसर्वप्रह्लातव्यउकधाउप्रसर्वकी॥प्रकिं
क॥चक्रवाउप्रसत्त्वानांउपपायमधुलंकमात्॥कचपून०प्रकिंभताहिनादरभदभरुकमाय
वावाहीकल्पप्रमातेचक्रधन०॥रुमकामावावाहीकल्पमाव्याता०धाउभकाटिसंखया
मिनानयभवच॥उकानिसर्वासिउकानिमूनिजानिजिकायप्रवान्॥अर्थतदाकतावध्रु
हउवेवाचनीचक्रपिका॥पमनस्रमायाचवाचनीमामकीचउप्रधुलातावाप्रपंवज्रभद
रनाथोउसर्वनीसमनउप्रता॥वलालकीनेवात्माचरुकटीपलुसाविकोयमाककीप्रह्ला
०षास्रुवाहीचवर्धुचक्रुयामभा॥अधंचवज्रचक्रप्रवक्रादिसर्वलक्रुर्मी॥उपपी००प्रद
मउविमलायांचदीपंप्रथमकंमंगनायकीकुविजानीयालघहवकीमिष्यतपमहवकी
मकालहवकीचम्रमजवहवकी॥नवमस्रनहवकीचरुदभमविशहवकी॥उकादरभ

स्मनंयादृशं तपूठविचक्रयागिति हनुकी ॥ वर्धुचस्वस्वचक्रपलङ्गयद्विमान्नवभनानासुखा
पूरुष्मानिसत्वातांदव्यात्मकंचदभनां ॥ धर्मसंहागनिर्मात्महासुखविहावनापुष्पायागुम
भान्नममसैवक्षुण्डचक्रंविधियतांपूर्याकलङ्कसापठमृचार्यपत्रिकल्पयन्नानघाक्ष
लीकृतिवीवेभीभूडीचभालिनासूची ॥ आम्बीनर्तिकपालिनीकेकलीकुवधनदी ॥ भंवि
टिभी ॥ रुडगागविचक्रलवात्रीकुपनी ॥ नाऊरुदिगदिकीचक्रम्भात्रविक्रयोवडासुवर्तु
गोन् ॥ चर्मकात्रीनीयागिनीचवर्धुचक्रपूजपूच्या ॥ अर्षेसर्वदुष्टद्वयायथाहृदयपूचक्रकं
यायात्मकंस्वकंप्रहाकवीरुमिचैवपूजनीयागुवृक्षयं ॥ स्वनामात्रक्षमके ॥ ३३ प्रलवायाप
वेलपाकृष्टनीलकंभ्यानानात्रधवधीचहावार्धहात्रआहिताभा ॥ पूर्ववात्रपूस्कनास्या
दाहमीयमडडीपुष्टीमथनीयथाक्रमात् ॥ धोदोवर्धुसनाकाव्यामृत्वा नूतनपुनक्रमा

धुक्कात्रयत्तुसममक्षचक्राकास्याजकितीदक्रिधमथा ॥ उरुवडलकास्यादिपश्चिमखा
भान्नूर्यायथेक्रमं ॥ द्वितीयचक्रंजिलखंरुमीयंचकुलखकं ॥ चतुर्थपंचलखासाभमभा
मकंचक्रंचकुक्षाक्षसमूहलं ॥ तत्रसहस्रचक्रस्यभमानानिचक्रथनगचरुग्रगकन
टहासुष्ठाभासांलक्ष्मीवक्ररूतासनठ ॥ धालान्धकात्रनेमृषांवायव्यांकिलिकिलाव
तक्षुत्तुक्षुभमानानिच ॥ वक्रदिकपालनागदुष्टमधडाश्रपनकमात्तभिलीखाश्र
॥ ७३ डाधनदशैवनागडाश्रयमोषिपठ ॥ ७४ भानाश्रयरूतासनंचत्राक्रेषडांनिला
तभीखपालक ॥ गर्जिनाघर्निनाघात्रश्रवलोपत्रमवच ॥ प्रनासवर्षधचरुभामघाधि
व्यावाकात्यकयंमत्तं ॥ घटितसंस्कृतप्रतिमादीनां बहिवाकार्थरुमिष्ठावनं ॥ विमानं
प्रनतठस्तिठ ॥ आकाभस्ममहाचक्रं पंचापचात्रेसंपूज्यतायथाहितसर्वसंवृक्षाभमुषि

कहिउसंस्क्रिता ॥ समयस्त्वसमयाहंजित्तिवृत्तावयलुक्त ॥ अननकथागतविवास्वमु
 अथवावाक्काकाभवकंतीलपदीरुसंतिहंषर्जिभावनामध्वश्रवर्वरीयागिनीमिदं
 गनीकांसासलाडिकीगीताकनगमगापवाप्तन्यालाभ्यङ्कातालीसावभाउइ
 र्पदापनमभवीरुतिकीघञ्चिकितीघरघूनीरथाङ्काकालिकास्वर्यस्तालीधाघ
 कंउनिवासीचरुतीयंचापिकापवा॥ १६ चवीरुलमायातिसंस्क्रितामरुघीपकभा
 यश्रुगापिचरस्यस्वचिंकाहितयाश्रकावयस्वयथावृचिभमूक्तसर्वचकानांस्वाधिप
 थापूर्वमात्रादिकंवरु॥ १७ नगसर्वचकगदिगन्धबंधवामिति॥ अननकथागत
 गसुराधनंलनवल्कनमुस्त्रापयत्समापयम्॥ पूनपयकलसंनप्रतिमांस्त्रापयत्स
 म्मकनकार्यव्यवहारादिकंयावत्॥ अङ्गिणीउन्मीलयद्वजचक्रमधितिष्ठत्॥ प्रप्यधर्म

वाअग्निमत्वा सर्वप्रतिष्ठाकावयद्वधप्रतिष्ठा लक्ष्मसंप्राप्तमुक्तिमाङ्गल्यकावयत्तम
 स्त्रिकं॥ प्रसिद्धजनसीलागंधसमाङ्गल्याच्चभक्तिकंभक्तिकंरूपसंभांगनानाश्रवाश्रपदवं
 रुडुक्त॥ निर्विकल्पकपुष्पप्रतिष्ठादेवस्वरूपनं॥ देवतालाकपालांश्चतिष्ठन्भान्वतंयथा
 म॥ ॥ नवाधवायूचक्रचवर्धुवननीलकं॥ वज्रालमध्वतादयाथगिनीनांयथक्रम
 लीतिलिविकारमयवीनामुचुडीचयुदवृलिकाकामला॥ पालावनीवृहत्काकीसठिनी
 वाकी॥ वृद्धावली॥ कर्कवी॥ उलकाकी॥ कविलाडीनी॥ लयीविडुमलिका॥ सनाई॥ कमला
 नाहिचक्रंचवर्धुचक्रयादृ॥ ॥ अथवास्त्रास्वताहूयाहुजायाश्चैवपूर्ववत्॥ प्रक्षपायात्म
 जाश्च॥ दं॥ चक्रं॥ यंगलतंदकां॥ आत्मकं॥ विरुयचक्रं॥ संखदजवृपकं॥ चउर्थे॥ जनावृजं॥ नाम
 समाप्रसठयावदसुसस्त्रकं॥ अष्टाङ्गं॥ निप्रयातं॥ उदभाङ्गुलपाष्टिकं॥ तथा॥ दादभाङ्गुल

कावयन्मदहर्षनिर्धारिषेयथा लालं दुपूजयन्मालाजतनदानदाक्रिधंजरा उष्टिंचपू
भवायपदवं॥ श्रुपतिष्ठयथादवंपतिष्ठाकर्तुमकृतांगिष्वास्पाध्वपत्ताभार्धकव्यापूथ
भाभवंतंयथाभवाचसनिष्ठइवपूजापूयसमचिन्त॥ ॥००॥ तिश्नाकाभचक्रपथ
तीनांयथाक्रमंश्रुकाभगर्भमपत्रं नामसंस्तुवृद्धिमान्भागवतीहंसीचिरीचकाकीव
तीकीसठिनीउकपिछुलीभाभीकीमकीसानसाचगृध्राकुलकीचचटिकाबाह्वचकीचक
नाईकुमलाचवाटिनीकाकजंघकी॥ सामालंहरिष्ठाचैवदइतिउभयगविशीनचवंवा
पूजापायात्मकासर्वरूपाहवासनीपना॥ हरिमिसूइर्जयाहूयाधुर्धापिनिमता॥ श्रु
वावृजं नामचक्रंशात्मकंमृतं॥ हरिमि॥ भावनमकुंभश्रुगिहूआनिकावयन्मश्रुष्टाहुंल
॥ दादभाहुंलवभाकृष्टोचकुर्दभभाकिमवचामादभीउलिकरधुनकूलवृष्टारिकाल

ना॥ अथ कथा दुर्लभाननदभरणमूलवर्धनं विभदं उल्लसु नमनकात्रागभानिका॥
 आकाशमिहिलिहिलगं विलागं वानिर्गंतु वक्तुं सर्वाधिकातिरुक्षुसामान्यभाननलक्ष्मी॥
 बहिर्भूतमीचरुत्थत्यक्तयमवचनं दद्याच्चर्वादि कार्यं यथा उच्यते प्रमानतथा ब्रह्ममरुदुव
 भाननवृक्षानां वर्धुलक्ष्मीं किं तु सार्वकर्मिकरुक्षुसामानिकरुक्षुसदृशं उच्यते तथा उच्यते
 निकवर्धलाकात्राधुक्त्वात्तनंतवक्तुं च उच्यते पार्थिवं पीतं उक्तं वा भनं उच्यते नमो हिव
 छिदिवदीचनक्तवर्धुलिकाधर्मात्तनं भाहनं कर्म नमो भानननक्तवक्तुं उच्यते नमो भूत
 सनवर्धुकरूपं गहावयक्तुं कात्राकृतियागनदिरुजाकात्रं विलावयक्तुं भानितामृ
 वधश्च नूनागचिरुतनकोधचिरुतनमात्रं विरुतानोपचिरुतनाच्चाटनाहिवानवर्तव
 सत्वं विलावयक्तुं ॥ निवायचकंदितीयं ॥ अथ वाक्कतं वधचक्रं

नीनारुहवनीतां यथाक्रमं सिंधीवाद्याहिकाधर्माप्रीमृगामार्जविकीरगवोमहीपीडु
 सुकरोरुहकीचउल्लसीमुखी तथा विसवाउविलाषीचमृवलीवहस्वानिकाभाषिका
 उवंवर्धुयथाचक्रस्ववर्धुं उवापूनं प्रहृतायात्मकाद्वीउपहृदाहवासिनी॥ रमीवलि
 गीवद्याकाननूपवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं
 उकिन्यादिवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं
 स्मभानानिहिपयक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं
 वंभानादिपूर्वाभाचवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं
 रूतिनीभाषी वाक्सीवायुलक्ष्मीचदापयक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं
 कर्मान्नूपवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं प्रवर्धुलक्ष्मीवक्तुं

भक्तिका। नानियमवृत्तिनिहव्यपमाधतः। कर्मानुपगत्कार्यजानीयाच्चविचरतः।
निलकृषी। वृत्तस्यास्यरागानुष्ठानेवकावर्धनी। अष्टस्यार्धरागानममीकृतवयाजयता। यथा
गुमरुदुवजानांमयतकुविशेषतः। अथनपीतंनरीचकृष्टाहनिमवच। यथाकर्मानु
प्रतथा। अष्टपञ्चाकनानमीकृतवलीवसितं। तद्यथावदिकादयाचकुवधाष्टपमाधतः। अथ
जाटनमहिचानच। अर्धचउपस्थिमाननै। विधप्रमानवैकर्मदक्षिणाननयिकाधर्मावस्थाक
इच्छातनमवर्धुचवायव्याननमवच। कलराधसिक्तकर्ममाश्रयाननंसदादवता। अ
भक्तिताम्जावयत्तुंमदिकादवतात्मकांस्वष्टप्रपेष्टिकंरूप्यात्सानविरुनभक्तिकै
हिचानवैकृतवतः। अर्धयाडादिकंस्थाप्य। अथमंवाहयत्तु। स्वदयांताऊरुकाववज
तंवधचक्रभादिनिनामतः। पनीकवर्धुस्वरावष्टपकिंभालेर्विरुषितं। अकिंभायागि

महीपीडुङ्गनगीजन्मकागलीचमवी। मखीगर्दवोहदीचअजाकीउडकीकमातु। भानी
कामाडाधकाकीसाईलीचव्यागविजसिद्धिका। नरुलीककीगुहाकुयामनिवासिनीपना।
नी। रमीवहिमखेचेवपस्तपावमिताचसा। पंचदीपनिवासीचअस्य। अदिषूपूर्ववतः। अ
वक्रासीमाहव्यवीचकोमावीवेष्टवीतथा। वावाही००डीचडीचमहालम्बीकार। अष्टतः।
। वमिताकुसा। दरग्यादिवहूयादिनखापिक्क। कायवाकिरुधर्मधर्मचसू। अतनै।
कवठ। योडसमभानकीचेववामावरुष्विन्यस। उच्चाटनंविधप्रतीसूकनैसूकनैपूनठ।
विल्वकाकृतः। अमलविकालनूडयथाकमा। अविन्यसतु। ००डीयमनूडचयकृषी
सर्वादापयत्तुसर्वदातु। एवंमधुलचकाखीकावयत्तुसर्वसंपदा। रावयचायकैतज
अथागिनीवीर्जनकवर्धुशुताननै। दधुतकृष्टिकावामनदक्षिणाश्रुमालारुतः।

गच्छपथः। अथ पूज्यं सा चर्ममार्घ्यं च दद्यात्। सुपूज्यपथः। समयसत्त्वसमाभीनयागिनी च
 नीयचर्ममार्घ्यं ४ सहस्रं दद्यात्। ॥ अथ वाक्कलापनवज्जग्निचक्रं वदाम्यहं।
 वां दवीनागिनी यस्तीरुती च तत्रमाजुर्वी। किं कस्तु सर्वमिच्छा ह कथं तदव कलाहर्वी
 गति यिका। विदुर्गुणिनी श्रूपासा च मातुनस्य तार्थको। तार्थो र्गुणिनी माता च तस्मै वापि दु
 वरुगीनी रागनयिका। स्वमातुमाता र्गुणिनी रागीनयी संप्रजिका। पिदुर्माता पिताम
 स्वपिदुर्गुणिनी पूज्यी तस्मै वदुर्गम कृपा। आताया तार्थया पूज्यी च पूज्यस्मै वदुर्गमार्थका।
 गतिरुत्तिका। नक्तवर्षु समाख्याता आयुधादि च पूर्ववत्। तस्मिन् इतंगमा चैव प्रच्छदी
 तदा कप्रविहं या स्वातस्तदनी। वज्रचक्रादिसर्वं च अनूला मविला मतः। पूज्यं तं क
 ना। पभावः सर्वश्रुतानि दापयत्सर्वसंगतः। अथ यं नामा विधं दद्यात्। एवं नाना

नं घादरूपं च। अथ ४ संप्रवक्ष्यामि अग्निचक्रं सप्तलङ्करी। जानूनखक बहसोपाशी भवं
 तां अमृतास्य भाकिं कृत्वा हमातः ४ समाहिता मकी वरुगस्वस्वना कलां लङ्करी चित्रं
 गतिनी। विभिवा मध्यमं रुयानिष्पुकां पातमृकल ४ च उर्भिवा समाकाला प्रसृति विहिलि
 एण कृच्छ्रिकृत्। चउकाना माविप्रज्यमुसा वं कवकापमं पूष्य वागनिहा वापि सर्वपापकुन
 च संपदं। चम्पका कात्यलाभी चमालती भीतगन्धवान्। कर्पू वा वृक्षगन्धिश्च ४ तं स्काना
 श्रुतिश्चैव सखावहः। श्रीवत्स रुद्रसंवाङ्गुलिभूलकलभो कृमिध्वज चाकलसंघज स्वस्ति
 प्रलिनाय वा वाग्धसंपदं। चंचला विमृषा काला विभिवा वरुधूमला ४ रुमनि सस्कृलिंग
 त्वामनमृ ४ स्य भक्तिमदिनी कुरु विदुचितो वा सो वकि एण कुरु यं ध्वं गान्ठपानां च वरु
 ता भर्तृ लाम् ४०० सितार्धं विना सकृत्। स्वामगारम्भ इर्ग। लज्जलज्जपाभिगन्धवान् प्रधान

विपदं द्रुतयदिभ्यदीहृआनत्र॥ चयचटतिनादायश्च मरु मतिधाप्रवान्। हिनिमसिमा
 सातयानकाकावठकथयन्तिमहत्तयं। ययसफरुतंदयादनि संताप्रयलुतठ। प्रपताम्वल
 ॐ नित्यामपूटश्चिचकप्रथमथा ॥ अथतवाकताड्मजलचकंमहर्षिकं। एवतव
 का। सूचीगजनीमीलीचजलगुहाकीमूवाहटिझीककदीभूचीमखिकापिपटीमूवा। ज
 ॥ लीसिहर्षनीकर्षुटीहाटकीवर्ककीकता। रूषीदंसकीकलादवतानायकीवली। ॥ ५ वं
 त्म। उपमलापकीचिवरुमीचलश्चापनाठ। सफमदीपनिवासीचविहूयायधनपूर्ववतु।
 येतठ। जम्बूदीपमिदंननदादभवधुवलिगं। ज्ञानामसमूहकुतुकि सर्वजकवानु।
 नायजं। सर्वलक्ष्मसंपर्षुप्रक्षपायात्मकस्वकथा ॥ ॐ वाधिवृक्षपलाहा। अथस्थ
 कूवनायस्वाहा। श्रीनवक्राभां। ॐ सर्वपापदहनवजायस्वाहा। तिलांतां। ॐ वज्रपूरयस

हर्वाया। ॐ अप्रतिहतवजायस्वाहा। कूभां। ॥ कठठकमलासनस्वदवतावीजनिष्पन्न
 वंभयलुतठ। अरुमाजतत्तमएडुमटिताकात्रंडुवितावयतु। प्राज्ञताचमनादिकंप्रजा
 न्धकेदवतांदयाप्रश्रयथयुयाश्रूयातु। ययसफधिकांयावतुभतसहस्रमवचयथ
 क्मासमित्कभादिप्रलामधुलरुक्ताचमनादिकन। कसमभिबसिक्तालाधूपंगन्धदिप
 विधननठविस्फुर्यदग्निचकमधुली। कोकिकश्चिचकंसंपूर्णलोकारुयहामययदि
 पानंविष्ठाप्रतठ। किलकीलीमहात्साहंगीकनृप्रसूवात्सहेठ। कालमूवीदवीथारग
 यालाकपालाश्रयानिदवाधविधिक्षिया॥ ॥ ॐ तिउदकचकंदितीयं। ॥ अथ
 कमा। तिलातिमाशतिसूवाचश्चसवसामहावता। वतिवतावापमिनीचसंविनीचिजि
 लात्पनाडुसूदनी। नागभुमहावागभवामाण्यामहाकमकं। मर्दनामदनप्रियाचकामिन

42

तावीजनिष्पन्नचिंक्रवीजपविनतंमधुलचक्रंविहावथन्॥समयचक्रंरुतचक्रंमाकृष्यप्र
ननादिकंपूजास्तुति॥अर्घपायकूपूजयन्॥स्वदेवतावीजजापसहामयदविसंकिन्त॥प्र
समवन्नयथापद्यान्त्रूपसमग्निचक्रंविचक्र॥४॥तथाहिसर्वद्वयपूज्यमग्निचक्रदद्या
पंगुन्मंरुदिष्टाकृत्तगमरुपादोपायं॥दीपमर्घनिवयंचपूजदद्यायथाक्रमं॥यथापूर्वाकिन
रहामययदि॥दिनचल्लोकिकमग्निचक्रं॥त्राकोलाकारुचक्रं॥वावाहीकल्पमपूर्युपाय
वीदवीथारगनग्निचक्रं॥५॥हामयन्॥प्रार्थयदहिमतंकार्यं॥सिध्यतनाउसंश्रय॥वक्रा
॥अथातद्वाक्कीवच्चसंरुतचक्रंसमकत॥विश्ववर्भुषकिं॥आत्रमास्त्रीधंरुल
नंविनीचिजिगीगजासमहात्रपासत्रपाचक्राकीविलासिनीसखा॥पूषकामीकूमदीचनी
याचक्राकामिनीचमहाकामिका॥सुगौरुवासरवपियाचसुखमतिमाउपमका॥सोताग्धमती

सोलागममहाकाउप्रमसूखीगयातिवृषीसमाख्याताकालमुखीवचनायिकाप्रह्लापायात्मकास
हयस्यंरुसककावकातस्मात्सोलागकायंचमधुलकुषदीवितीचउठलषादिकासंचप्र
चयस्मयीविमसुत्पूनकाशवासीचउदवीपूकसीसवमीतथाचअलीअम्बिनीकमागुठ
हृत्कंधानायधंसवदंभवंवामावर्लादिपूर्वादिचिकथवेमहाकूपं॥धूमाधकावमनिंचह
चकून्चदवदात्रकं॥दिकमालादिहलकूचविभीतलहृत्वे॥अभिद्वयवृत्तेश्वेवग
लिकाचकूतवमिलालथाविहूनानाभक्तुपारुंकर्यात्मभानमध्यतथावज्ञांजनउडि
तमसंवक्षसर्वहामाङ्गंरुलंगंउद्विकनीरुमि८८॥अहविवद्विकृतासर्वसंप
कन८८॥अभानिकृत्सिदार्थप्रवृत्तकृत्तुलामन८॥तिलपापहंविद्याद्यानधम
नागनाभनं॥प्रह्लापदमधूकीप्रदंभनंसर्वसोव्यदे॥००॥सार्थसिद्धिदावंक्रि८८॥मूर्तिंदयात

पायासुकुंषश्चयलावनातताविनिर्गर्गसर्पिमहाह्वनामत्तमतं॥नसकूप्ययदग्निच
वज्रवावाहिकत्तनचकंरुतीयपूठ॥ ॥अथतथाकतावक्षचिकूचकंमिदंरु
कावीचिनीपातकीअनूरुवीचकूकीनयमजियासुथा॥कालसूदीकूलीचतपनी
गीचमदमत्सवीरुमिका॥भीतकीसवनाचैवकन्दनीउडर्हिङ्गका॥वागकाकवीभक्त
उमहादवीवर्षुचकूपयाठ॥उजायधंप्रवैवतूयाप्रह्लापायसुत्रपका८॥दीपस्म
भास्वरावविषाकनेनात्मचक्रककूवावहिंसर्वधामवविहूयचकानांहियथाक्रम
नताचविचक्रधभाह्वानविह्वनतावत्वात्सुभानतागवस्वर्य॥००॥मंनिर्मासचकपू
दिप्रदामंउठननावर्षुकलादयं॥३॥नमः८८॥अनवासीमहाकावान्कावाय॥मय
सवायूतंरुत्वातावकूपंयावदागकृतिपिअकृष्टि८॥३॥चामरुधप्रकनिविद्यकिं

43

मयि दग्नि चक्रमात्मानसंचनं॥ एवं कथातिथारूपं चर्कसोलागधसंपद॥ ॥००॥ ति
 चक्रं मिदं सूटं॥ वक्तव्यं प्रक्रिकां सर्वस्वतावर्जपत्रं॥ नागिनी चक्री रूरी प्रतीना च
 ली चरुपनी उपतापनी॥ शिववीचमहावीरवीरलपाकी द्विपर्वती॥ क्षीमाहीषाया
 ताकवी भक्तचपानीथपूकाकीविका॥ असिनवीवेगवशीरूवीचचक्रिका॥ कृष्णाक्षी
 ॥४॥ दीपस्मभानकैतुरुमिधर्ममयकन॥ चिरुस्वतावर्जदत्त॥ सर्वगंचक्रकर्मत
 हियथाक्रम॥ छात्रपालीचसर्वपांचक॥ स्थाननिष्ठाद॥ ॥५॥ एवं धातुभविहृया
 र्मासचक्रपूजय॥ काश्मिरीप्रनाम॥ अन्यसर्वमिदं पञ्चाक्षकद्वयंकुक्थ॥ नानासि
 नाय॥ गद्य॥ ॥०॥ चलप्रचललललालथदेवलिङ्गं स्त्राहा॥ सवायुतंकुत्वाश्रुर्धवा
 भविद्युक्तिरुहन॥ पच॥ २६॥ वदरुमान्यस्त्राहा॥ वामचत्रशकलश्रुनक्तनसमर्प

लिंगवित्ता तस्यास्य नवकारः ॥ गजो ८ कावच दुष्टर्यै लिखितमरुपदं लिखितं ॥
 यथास्मादयमावयं हं हं ॥ वालीकं मया पंचगव्य सहितं याचि न किमात्रकं वा शुक्तिं क
 प्राह नादक धावापातयति ॥ यदि न च यत्किं सफ मदि वसव भुव भुक्त्वा घट के पत्रि
 भश्च न नाप्रकालित मूत्रवलाष्टं सफ जापं कृत्वा कस्य विद्वि न द्वा व द्वा स्थपयत् ॥ मूत्रव व
 नां मूत्र पूवीष स द व द रु स मूत्र व व ध नि ८ स्वाहा ॥ वाली व र्द स्यापति न च ह्यया दिष्टं क
 ॥ तेन वाय चिलि र किला न नृप त मूषिका धीं दुर्धु व धा मि ॥ मर्कटा ८ ग व स र्प म ज्ञा
 उ क विं भ ति वा नं प नि ज म गृ ह कृ उ वा टि का यां च उ क्ता ॥ ला ष्ट के कं प य न ॥ नि नृ
 उ म हा का न वी जं वा ॥ उ तं षां व सु सं या ध म ही ष स क व ८ ग व स र्प म ज्ञा
 न म हा का ला नृ का ला य ॥ ॥ न य ॥ ॐ च ल प च ल ल लाल य द वं लिं ग स्वा हा ॥ स वा

मूत्रधूपकं भीविष्कृतिं क ह न र प च र द व द रु मा न य स्वा हा ॥ वा म च व ल ल श्र व क न स म
 मूत्रधूपकं भीविष्कृतिं क ह न र प च र द व द रु मा न य स्वा हा ॥ वा म च व ल ल श्र व क न स म
 मात्रकं वा शुक्तिं कृत्वा कनवीन न च दुर्विभक्तिं नृपय नृभी मां प्रा का न व व ध क मा र व ति ॥ ॐ
 प ह धि वि न स्य ति नृ नृ नृ प य नृ क ॥ ॐ व व क स्वा मि व र्ज ला क धि प न या व नृ र ग क २
 ॐ नृ नृ र हं हं हं स्वा हा ॥ उ द कं प वि ज प न नृ प क्रा व य न ॥ नृ नृ ग ना म य ति ॥ व ला मू त
 म य ति ॥ स फ प र्दु का रं गृ ही त्वा द्वा व मू ल मा र्गं वा ध च य ते म यं वि न भ ति ॥ उ क्त मा क ८
 नृ च र वा क्ता वी उ क थ त न व क मं डि ह व र्धु व ध किं ॥ त्म के वि डं ॥ पू जारु क्ता नि डाल स्या द
 हि ष का च क्ष ना उ म रु जा पि का स्त्री का च मा न स का पा स त्वा र्थ क वृ ला य मां भ्रा ज चि का प न
 सि का श्रे व गृ वृ चि का ग म नि का ॥ कृ मा चा कृ मा भा का वि श का उ धि कि ता प वा ८ सर्व क

तवित्वाश्रयकम्पजपतु वधी कनकमूलमंतां वज्रका रुवलावलहनदहपचविधं
 कंवाभुकिं कृत्वा कनवी वज्रका दकनसचयं कुपुन धूपं मविदि नं पि भुक्त वलिंदयात्स
 घटकं प्रक्रियनयां प्रवाहयं क॥ वर्षकिं वर्षां प्रनय न विधिः ॥ अंगगराश्रविगमः स्वाहा
 त॥ मूत्रववध कृता हवति ॥ अं मेकातिष्ठ किमुकागच्छ किमुकः कादं नित्यौ गले मूका
 र्यादिष्टं पथं क॥ यस्य कस्य चित्का र्यं मूत्रववध व्यवहार पठित सिद्धिः ॥ अं नमः नि
 वसर्पमं ज्ञा वना हो दिनां ॥ अं भिवा विनि रस्वाहा ॥ उक्त नमः कुं ॥ उक्त हस्त नला सुकं का
 यं क॥ निरूप प्रवाह वति ॥ अथ वा विषल वत नाजि का सूर्य पमल वीज धन कनवी
 लायं चे उद्भं पि पूष्य धूपं वलिंदया रुतय आद किं व हस्त नसं गच्छ वामन गऊ नी जो धू वा उ
 मस्वाहा ॥ सवायं कं कृत्वा अर्ध वा उलिं गं कृत्वा ना वज्र पथा वदा गच्छ निपि भुक्त सिद्धिः ॥ अं वा

अथ कनसमं वलिं वित्तस्या सुकनका ॥ अहं गजोऽका वच कुट्टयं लिख्य मखम कुपदं लिखित्वा
 हपचविधं भयथास्मा कंदयमाना मा वयं कुरु ॥ वाल्मीकीं मया पंचगव्य हसितया विरुक्ति
 ता हवति ॥ अं जीं जीं कुरु विद रस्वाहा ॥ अत नमः कुं ॥ मय मरि मला पानी यस्थ न प्रक्रि
 वरु रगच्छ रतु य रन कुं नाग भि नि रना भय रं कुरु जीं स्वाहा ॥ ननु नाग कुमार्ज नमः कुं ॥
 मि ॥ वलामूलं सफ वधुं कृत्वा हस्त नव द्वा क वं ना भयति ॥ अथ मार्ग मल वधा च कुरु र्थ क वं ना
 उक्त मा कुरु ॥ ॥ अं मिवज्जवा ना हि कल्प चिह्न च कं प्रथम ॥ ॥ अथ वा कना अ
 नि डाल स्या धर्म चिका कृता वयं कुरु ह चिका कृति चिका न अर्थ चिका विथा गका ॥ पूरु चिका
 वाज चिका पत्रा हा हस्त नला ता रुपं धिनी ॥ कना च मन रं चिका सूखा च उवा भुता ॥ अस्ति चना
 वा ॥ सर्व कर्म क नाद वी प्र कृति च कदं म हस्त स्व च क वधु मा र्वा गं सत्व मर्क उ पूर्व वत ॥

प्रह्लापायासकादवीप्रह्लादायमधुलंचउपी१० प्रवचनकनकदादशसहस्रकाननजावि
 नादिकायाकंजलाग्निवासाकाभकी। वलयचक्रनामंचविरूपावत्रयागिनी॥ ॥ ॐ
 ॥ गुणवृत्तचनवंकनवीजंनरथेवच॥ नतपांधपयउतथाजिगंधपायंसर्वताभुन
 नकश्रमूकवसमानयखाहा॥ ॐ उजववचाकृष्टेगंगसर्षपंतथा॥ भ्रमलानागपूष्यच
 ढंकलानाममरध्वनियजयत्तु॥ उजकपयसंथाकृष्टपयपूष्यालिध्वगु॥ काकपकृष्टवा
 विजुमावातयागनश्रमपांगभनकदिन॥ नयांपवाहयलुउउचाठरवकविपू॥ उकलिं
 रगमयनप्रकतिकुतिंकलाधाउभांगुलंकावयत्तु॥ भ्रमभनकपटनामालित्वीतइतल
 सफजफनमवलनप्रहनात्तु॥ कृष्णदद्यास्तंतिनातवेति॥ मनभिलायां वामहस्तपूरुवीकी
 पउदवदरुस्यनामैलित्वीतकापिरुमरध्वपुक्तिपवहकाकंदचातिमच्चातयनि॥ कृष्ण

नृत्वारभनस्थपयकुमस्ति॥ वातवति॥ अथभर्गुमात्रयकुमिद्वि॥ सिद्धकनवापिष्ठकनवा
 दावसंयावपादकलसूयकांकावयत्तु॥ तइपविहसंदत्वातंनामंविदतिंतं॥ मरुभकानस
 जप्येकृष्टपूजयदिनभति॥ पंचसर्वपवृधिवाकानांरुत्ताटकीकृतेलनाकानांरुत्ताटक
 यतिवृधिनंद्ययति॥ कवतवावृधिनंभवामयति॥ भ्रमभनरुस्मनाभजाप्रतिकुतिंक
 रुत्तंरुत्तायात्तु॥ सद्यभर्गुनयति॥ वकनिलप्रियंगुयताकानांरुत्तसहस्रंरुत्तायात्तुवम
 नधन्यसमृद्धिर्भवति॥ सर्वगुनरुत्तकिंतकर्मठ॥ कनवीवपूष्यालिध्वचचन्दनंतथा॥ क
 भतपूष्यंचस्वकसिधार्थकंतथा॥ निर्गुहीरुतकभलवाचनतिकुत्तकंवानवीवीजमवच
 टकंतथा॥ पंचविंभक्तिमत्तानिस्मरतागभनिकावयत्तु॥ यथदंगुटिकांकलाश्रादिथुवय
 पंचगव्यनपीषयत्तु॥ स्वददवताचाउजपदसहस्रकां॥ उवंपूर्वविधाननप्रतिष्ठाहा

4E

त्वया उरुधगम्भारिका पश्चिमं वज्रनदी च दक्षिणं वरुवाम्भवाका सहा राच उर्दवी ॥
 श्रीचक्रं दिशु पूर्ववत् ॥ महाबोजकनाम्भमा कालामाला विवाजिता ॥ वीनानां वधुर्नृप
 कूटश्चतवीना सर्वाः ॥ तस्मै गन्धना ॥ उन्नतपीनाथा गिन्य कटं च चूडमसिक्तं ॥ सर्वलङ्का
 वं ॥ वज्रवा नाहिनां विश्वे प्रमथानिकं च नलकै ॥ त्वधु कपाली महाचक्रं कं कालं च कालकै ॥
 कीर्तथा ॥ महाथा गिनी वज्रवा नाके ॥ ४ सुतडी वज्र तडकी ॥ महादेवी विवृपा क्री महावलनल
 नाके ॥ र्जनजकिनी ॥ ॥ धैर्य ॥ ४ भाङ्गु रूना उपायं चिरु वज्रकी ॥ १ ॥ भर्षे नामयथा देवी कुलि
 वीनां स्वामि वल्लानय सुर् ॥ किरु स्वाम्यादि पूचकं तडकल्पयथा जिना ॥ तच सर्वविलाय
 ॥ चक्राया उथा गिनी प्रथमाङ्गीती ॥ तथा द्वा दश विरूया सेचा नीपी ० प्रपीठकी ॥ १ ॥ भषा उ
 लकी ॥ वीवीश्वरी गीं तथा चैव भमभानवासिकथ्यत ॥ दग्धं च प्रथमं रूयं द्वितीयं चाप्यद

ग्वकी॥ हतीयं वली तं चापि चतुर्थं चाप्यवलिनी॥ पंचमं रोष धी पात्री षष्ठं चापि रयंकनी॥
कंसदाग सामान्यसाक वक्रा श्रपालिजातामनी तथा॥ उम्वनी कुगलावी ललितकी चापि
सापिमहर्षिका॥ तपि नृत्पनिसानन्दामहा समाधिकान्ताग कवच चरधवकायाहि
मरधपिकावयन्नक्रादिकं॥ नानावर्तुतां रूयावाहनं यस्मयसेकु निष्पन्नं मनुली लाव्य
श्रीनीतातिर्यग्मवा श्रदवमी॥ कारु दन्दं समाहृष्य विघ्नमूढ दयसनात्॥ वसमाहृय
विल्लतमात्रमसा विमोयायल कर्मा॥ सामसिक्त ककलुनी रूषकपी तचन्दनं॥ पृथक्
सामान्यमूली हवहीन वृक्षरूत्रै विवर्जयन् त्रिकवर्तुस्तृजंगि॥ कुरुपन्नवजस्ववा
लिसुनसिद्धिदं॥ शुक्रपन्नपसर्पापादप्रभर्तुजनादिकुत्॥ श्रायना उवाच शुद्धरूति
संयुक्तं तेष्वसंग्रहं॥ कावादिहाजनात्पन्नपी तचन्दनसंग्रहं॥ भार्गवजं नालि कार

धमं माससंग्रहं नरायन विरुम्भं॥ वपुषप्रसिद्धं चन्द्रं नृक्षसर्वलक्ष्मणा व्याधि
॥ चन्द्रं च वतिपातयं चन्द्रं च वतितापिनि॥ सूर्यसूर्ये पातयं सूर्या वहति सासु वि॥ उमं ध
॥ वामेन स्वीप्रदानेन पविशुधन कर्मणा॥ जीवनि वृजं सर्वं शुक्रपन्नं मभीयथा॥ निवृज
सन्नं निर्मलं स्वयं किञ्चिदुत्कृष्टिकसं तवं॥ शुद्धरूटिक तवं दवं पिशुवन्धनमृत्तमं॥ मत्त
यत्॥ सार्धं गिष्पं समायुक्तं गृहाकस्य प्रवभयम्॥ देवता नाधनं कार्यं श्रुतिवलि समन्ति
ष्यं सैकावकावयत्॥ निर्मालस्थानसं प्राप्तिरिच्छन्निविष्टीकृतं॥ सुखमाप्तं न संप्राप्तं
यत्कर्म द्रवर्षादितावत्॥ वर्षद्वयं च सं वक्रं॥ सिद्धिकावसूधी सदा॥ द्वादशसिद्धि
सुवमनूष्या लंकी लं वतिवत्तत्॥ पंचवहिवसुनां नित्यं बाधकुरु कुरुयत्सदा॥ नतव
वृक्षांगी वृष्टकाले तु निर्गुणी चाववसुजे॥ ध्रुवपञ्चनिर्यासकमुनी चन्दनान्विते॥ उन

पसंत वलिर्जनायुजा ॥ ४ ॥ हिरुलाचन्दनचूर्णं कम्बुनीसहस्रवयुक्तं प्रत्नासमायुक्तं सव्यं दीर्घा
 नतं पीतं सत वलिर्जनायुजा ॥ ५ ॥ चतुर्भुजकषायाय प्रभासं रुद्रयत्न ४१ यत्नस्य जायतमि
 त्तकायमखिलं यामिनी विधिरावना ॥ ॥ ॐ ति श्री वज्रवा नाहिकल्पिकायात्मक
 यथाविधि ॥ ॥ १ ॥ साधकप्रवक्ष्यामि मूढादवगुन्मुख्यं ॥ चं विकचरुथा नामाजाकिनीयुधि
 र्थयथागतदिनां ॥ ॥ २ ॥ विविधमेकस्य दुवीनाश्च विविधार्थकां ॥ ॥ ३ ॥ तथागतं वज्रसूर्यं शालासि
 तापाशुनाचननात्मिका ॥ ॥ ४ ॥ वज्रधन्वी श्वशरं याषद्यामितासुथा ॥ ॥ ५ ॥ एवं विविधं ह्युपाय
 र्गतादवी श्रुत्वा लीपू र्गतागती ॥ ॥ ६ ॥ अक्षसत्त्वमथादवी मलहस्तं तथागती ॥ ॥ ७ ॥ नवगुकी न
 यायस्याधिपतित्वं दुर्गस्य न स्पेवलक्ष्यं ॥ ॥ ८ ॥ सूत्राह क्रिप्रथा गतकोमिकं नाभिकाग्रती ॥
 र्वकालकां ॥ ॥ ९ ॥ नाहका नाभिसूर्यास्तु ग्रहनासोय संतथा ॥ ॥ १० ॥ रुद्रयित्वा विषयांच सुक्राद्यं च

तपस्य प्रसहस्यवी ॥ ॥ ११ ॥ कादः शुभ्रगतं चितं मातासंविश्वप्रकी ॥ ॥ १२ ॥ समन्वसास्वाद नंच कीयत
 गलस्यतवी नद्यमया प्रविभक्तिवाधिचक्रं सानन्दपू ॥ ॥ १३ ॥ साधकनात्यापायसि संसाय
 प्रहचक्रमकारु मं रुसाधकी ॥ ॥ १४ ॥ अंसमकुहानि विसृज्य न भामिकवा नाही विय ॥ ॥ १५ ॥ हं हं हं हं
 निरुत न ह विष्पति ॥ ॥ १६ ॥ हिसंहावक नाउ दं दं प्रदं मूडा रुता ॥ ॥ १७ ॥ प्रह्लासायामितादवी वरुसं
 तसिहाहियागिनी पून ॥ ॥ १८ ॥ नवकादिनुगमनं व्यारुचो वादिमादिता ॥ ॥ १९ ॥ नानागमधवावीना
 तसिधितावपः कीयत नान्यथावच ॥ ॥ २० ॥ तस्य सादना मूकिस्तु विह्वली कुरु विश्व ॥ ॥ २१ ॥ अमुच
 ॥ ॥ २२ ॥ अथ वा सर्वगु ॥ ॥ २३ ॥ अमुच वा सर्वसर्वकं ॥ ॥ २४ ॥ नान्नायच महान्नायकाती न र्गचनं कायच
 ॥ ॥ २५ ॥ ति श्री वज्रवा नाहिकल्पिकाय चक्रप्रथम ॥ ॥ २६ ॥ ग्राहगवास्वामि श्रा
 हादवी पूजां कृत्वा यथाविधि ॥ ॥ २७ ॥ साधकप्रवक्ष्यामि मूढादवगुन्मुख्यं ॥ ॥ २८ ॥ चं विकचरुथी

यागिनी त्रिपिनी वत्पत्रावतान्वर्त्तनी वावाहीषथागिनी तथा॥ वामहस्तुषत्यवंचद
 श्रालालिकपत्रमाश्वकं हनुकी वामहस्तायां द्विसंप्रथगागं विदुः॥ सा च नामामकी तावाप
 धंरुयास्तुद्वी सर्वजगत्पती॥ विविगर्हादिकं कुरु कुरु॥ अकिं निनायकी॥ प्रकाशयत्स
 सर्वथागस्तु याकिदवादिकं तथा॥ प्रथमं वज्रवा वाक्का मूलमकुंचकर्मक॥ श्रालापयमि
 सफुलिं भात्मकं मरुत्तावयपत्रमश्वी॥ वीजा कुरु वज्रुत्पन्ना लुधिपदमूलमकुंचकं न
 यरुं कुरु द्वास्वामाहावल्याकवर्त्तिनं कुरुं कुरुं कुरुं द्वास्वामाहावल्याकवर्त्तिनं कुरुं
 वयं जापयन्त नमः॥ वज्रवा वाही श्रद्धेयी मूलमकुंचकर्मक॥ वज्रस्व वाक्का मूलमकुंचकं न
 वयाधूपनाननमस्तु॥ वाक्का मानास्वयं मय वज्रस्व वाक्का मूलमकुंचकं न
 चकनृत्तायागद्वी मध्वमयस्तु॥ कास्तुवंकस्तुवं तादृकं पत्रमार्थेण च नालिप्यमान

पालसंप्रदं वक्ष्यते भोहामं विधीयत॥ एतं दुस्तु समाख्यातं समयं प्रतिपास्यत॥ यागिनी प्र
 रणमानं सुवयालायु वामहस्तं नहामयत्त॥ सर्वदवसनं कुरु तागादिदिदरभसह॥ द
 दुरुं तं तथा॥ नाम्नामया कुरु भन सर्वलाकवसमानयत्त॥ वज्रस्व वाया वकनं कुरु मं
 र्त्तुं स्वकं रणे॥ हामयद्वध॥ निम्बकाष्ठानि संदिफस्य विधेयं न पवं काकपकुरुं तं हाम
 कुरुं च अति चाना जाऊमा प्रयात्त॥ याश्रुहाति श्रुतीमाश्रुतं न कंच त॥ कस्तमानुत्त
 एकविंशतिनाश्रुतिश्च तनाय संभय॥ अतः कुरु विवाक्की ति॥ सिध्यतं मदनात्सुव
 काटि ति॥ पविच ग॥ श्री वज्रवा वाही कल्याणो हनुकस्तमाथागं॥ वजाचार्य पवंक
 मकृतं सिद्धि॥ पूर्वा कथागथागित॥ नयागस्तु पत्रा कर्म न कर्मथागेर्विना॥ संज्ञा नि
 लनात्त॥ चिनाति प्रमलाया श्रु सर्वसन्धि प्रकं पून॥ तस्मिन्काले उ विरुया मकुंचकं

दुष्टत्वं च दभयजागरुदकीं विविधमकेकस्याहुवी वा श्रुतिविधेर्दकीं ॥ तथागतं वज्रसूर्य
 नामकीतावाप्राधुलाचनेयात्मका ४१ वज्रधत्वी भववीरूयाप्रधागिनीपनिदत्ता ॥ एवं विवि
 प्रकाशयत्सहावज्रकर्मचयागनायकी ॥ वज्रामिकर्मकं दिव्यं सर्वसत्त्वापकायकं ॥ यिन
 ॥ श्रुताप्रयतिदवी दुस्सामाहि ४ कलिंगक १ तत्कलप्रुहिउत्पन ४ श्रुतामीय ४ श्रुता
 मूलमकु क १ नचननविनाभी च ०० हलाकपत्रक १ ॐ सति तसासहस्रसममहाख्यासा
 किं वलिं नरुं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वज्रवावाहियं रुद्र स्वाहा ॥ ०० दं मलुलचक्राय ल
 व ३ म नदिग्धं च नं रुद्र हि तं गार्गतस्य विष्टया रुद्र पादयं सिद्धि कां क्रिया ॥ सविधानं तग
 छाचरे लावक रूनामिभि रं धूपजायत १ माऊ नवविर्ग चिह्नं काका व ०० दं वचन वावा
 व १ ॥ लिप्यमानं महायागविह्वलं १ ॥ प्रकर्म रं १ गमना सर्वसंधी पूजना सर्वमहात्मना १ क

त १ थागिनी पूजयन्निस्सामपानं दिनदिन ॥ १ वं कतकुमकुरु ४ सर्वसिद्धिप्रदायक ४
 येद १ सह १ वृक्षापि वसमा ४ याति किं पून ४ इन्द्रमा नृपा ४ निष्ठी वनंदक का संस्वदहा
 किं नरु कर्मंगी र्मुताजनं संयुक्ते र्मानृषे ४ क १ मे ४ सशमाकर्ष भीप्रवं १ स्वकायाद्युगमजी
 प ४ क १ हामं धूकृवाग्निसमाहित ४ ॥ क १ ते लन संयुक्ते सथाच्चा तनमायती १ नवसहस्र
 ॥ तस्यमान्ततया इर्द्ध दविर्धनं धर्तं कृत्वा १ ॥ भतं तं सार्प तयसु स्रुवकु नवन्नरु ४ ॥
 तिमदनात्सुको ४ ॥ काविफललाकानां श्रवन्द्यासु रं च ४ ॥ जीउतं रुद्रयसिद्धिम् ॥
 ॥ चार्यपवंश ४ सर्ववीजनमस्तु तं ॥ सिद्धिदं विप्रलाका प्रसमयाचा ववक्ति रं ॥ १ वं हा
 र्ना १ संक्रान्तिद्याद १ मे ४ कर्म वायवीहनतागत ४ ॥ हामकृन्दाक वप्रष्य उरयसकिमी
 यामकु चवक्रमक्रमं १ ऊपित्वाधुल १ ॥ गुफं कृत्वा सिद्धिसमं कत ४ ॥ कली भयर्तुप्रक

यदि कानपंचाशततठकाद्यानिष्ठापयहूमोसुम्नवाजस्यमकीसां॥तत्रवेवाचनप्रथमसम
नकाविंभतिहंप्रनठनकविंभक्तुकावंदयाकुपतिंभगुकावकंसफरिंभगुकावंदयाकु
भक्तुसुकावंदामयलुथा॥यचत्वाविंभक्तुसुनवीर्जनियाजयत॥नकानपंचाभमय
सुतथासुप्रवर्तैसर्वकावकभदभमगुकावंदयाद्यादभपकावैततठ॥श्रुदादभम
चोचत्वाविंभक्तुभक्तुगुकावंदामयलुनठ॥श्रुचत्वाविंभक्तुहंकावभहंतसय
कावकंभविंभक्तुकावकंकुचैविंभक्तुकावकं॥षडिंभनपुनर्दयाकुंभमवांनियाजय
यकुसमासतठ॥द्यादभचर्जसमालिख्यवधदधुरुमीगलावधद्वेसमालिख्ययकु
चामुहंतिपातनाभक्तुभक्तुहमनक्तुवामकुनायकी॥॥श्रुथकर्मवचवध
नाश्रवश्रवधूतीसर्वनाजोचसाधकी॥पिभचमलमखंप्रक्षिपयावदिदुग्नि॥तावर्हि

पक्रुत॥तस्मिंरुगवतीविश्रं सर्वकालेनर्षीविश्र॥पाथाकउकवाहिधीश्रुधगभालिच
तनावर्हिगलिगकं॥यत्समाभमिदुतिचक्रुप्रमाधैतवदिति॥भीप्रमृष्टादकनप्रज्ञात
मूलंमधूनासहंततठ॥पिष्टानातिलपंदत्वातावर्हिगंनपतंति॥वजनीधर्यसगुष्टगभव
वसतिष्ठादयप्रसायनं॥नवंयागवचं॥धर्मेसम्पकीवपूलापितं॥वानवधरुलंगहीत्व
जापमानाभययजापिवस्ति॥सफरुफनतर्जन्यामवसधनूलाजनंभयंयंचिरुयति॥
प्रयासकीरुहृहीचापविपूत्रयत॥श्रुविकावकवर्कचक्रुकीरुत्वाकुसाधकं॥विश्रयासप
विश्रतसकृत्कफनोदकभाक्तं॥नवंचयस्ययस्यकुसुत्वस्यवक्तुधिवसकु॥तावितंसुव
द्वसुत्रपाहुनाजानांचमहीपतिं॥श्राकषयकितांसर्वासदृष्टा॥पिसाधकी॥सफाति॥
नवंकुत्वाकतंसर्वकर्मवजिसतिगता॥स्वयंवधनयागभत्मासिधनहानपावग॥यकु

चनप्रथमसप्तमचरन८सच। नवमसकावंदशाकथाद। अष्टकावर्क। सप्तद। अष्टकावर्क
 अष्टकावंदशाकथयिंभनिकावर्क। सप्तयिंभगमदशाककावंधाजयध४। एकचत्वारिं
 नपैचाभमदशाककावर्कसर्वसंस्कृती। द्वितीयकाश्चपूतर्दशाधदानामादिस्वभाषका
 ॥ अष्टाद। अष्टकावर्क। अष्टयिंभ। अष्टपत्रमाकृवं। अष्टयिंभ। अष्टकावर्कचत्वारिंभ। अष्टकावर्क।
 नवमहर्तंसदा। अष्टममरुथाकृत्सर्ववर्धुस्वयंपूत४। चतुर्द। अष्टकावर्क। अष्टयिंभ। अष्टकावर्क
 मवांनियोजयत। चतुर्द। अष्टपदंयाकृत्प्रकिंभनाकावर्ककथा। अष्टचत्वारिंभ। अष्टदशाधज
 मालिष्ययर्कवर्कसमाह्वं। अष्टगच्छतिरुदाशीर्ध्ववर्कध्वंमिवा। समयंकरुव्याप४
 कर्मवर्कवर्कवोवसाधयथागत४। यागिनीगुच्छपूजाचसदालिङ्गवर्कप्रदागपूजयर्क
 द्धमि। नावर्हिर्गैकर्म। अष्टवर्तिनायथाप्रवदाम्यहं। ह्रीं लीलातिलनलेनपचंसादतला

ध्वगन्धालिचतानिच। समरागभनिकानिकावयद्विधिवेप्रमहाकृष४। अर्कज्ञावर्क। अपिष्ठाकृ
 दकनप्रज्ञालयसर्वप्रमार्त्त। अष्टममर्कभर्तच। अष्टकतिलेनथाप्रवं। नवनीर्गैकवीवस्य
 यैसगृध्रगन्धामन्त्रितंसमा। प्रकृष्यंक्वथितंचयावत्प्रकृष्यंरुवति। एवंपीत्वासफदि
 प्रकृलंगुहीत्वांच्चक्रचर्धुकावयगन्ध। अष्टकदियसमायुक्तं वधीकवधमरुमं। वज्रवावाही
 यंचिकयति४ सर्वतर्हि सर्वप्रदापयते। अष्टनवमसर्ववर्धुचरुक्ताकांनपानकं। नत्सर्वमा
 ॥ विद्ययासफजभनसंस्तु। अष्टनवमसर्ववर्धुचरुक्ताकांनपानकं। अष्टनया
 गवितंस्त्रुवध्वकृत्पनप्रपधात्रित४। सर्वधाम्दकभाकृत्तवर्तनाकृत्तय४। अष्टयिंभ
 शीसफाति४ मन्त्रितंरुत्वातिसायागच्छतिस्व। अष्टनवनसंप्राह। अष्टगच्छतिनसं४य४
 तावग४। यकुंधाकुंधाकृत्तनालिकाकृत्तपिका४। अष्टवध्वमहावायुदंतासर्वगमि

वासोमपूपको॥ चिरुपुपं समाख्यातं कस्मात्सुखं नामं॥ सर्वाधिपस्यार्गवद्वेवताकीय
 रानजायतं कृया॥ सत्त्वानां वासहादावाश्चमघाश्चपभ्यति॥ वासनाञ्जयकालेनम
 निसमाधागमकृजसत्त्वसर्वपत्रं॥ ॥००॥ तिथीवज्रवावाहिकल्पमहायागिनीरु
 श्रथातापूनवपिचद्वीपूजां कृत्वा तु॥ वावाकावागयकनडुष्टादवप्रकाभयत॥ जीम
 ॥ हकावनादसर्वाङ्गि हृदिमध्यास्थितान्वयकावाहवक्षःप्राप्तप्रवितावज्रवायनाकमि
 ददलपूच॥ वादभेनाहिपथदुष्किंभयागिनीसदा॥ तस्मै न के कल्याणहि वक्तव्या
 माङ्गनपादकर्मकां॥ श्रकावाचवनधर्माम्बुकि सर्वविदकनात्॥ सफर्तिभामकम
 हकं वापिरुथापंचानकर्यादिक॥ विषवाजिकालवसधूरुवाभृगवस्यभानके॥ स्व
 वच॥ पूर्वार्त्तकाष्टकं सत्त्वामकुमालांमिमांसावेवाचनं पथमडुद्धिनीयम्विधीयत॥

मपन॥ श्रममधिहंकावंचनवमरुत्कानंतथा॥ दभमनिकावंचेवहादभमहंकावंप
 वंषाजभचडु॥ सफदभसूकावंचहंकावेकानविंभक॥ विंभमहंकावंदयातक्रकाव
 जिंभवेवाचनं चडुमिंभश्रकावंचतुयाजयत॥ पंचजिंभययश्चत्वाविंभेत्तगहि
 विंभमृकं॥ सफचत्वाविंभमडुवाजभदं निजाजेयत॥ विद्याभदं परनर्मनीकाष्टाष्ट
 नामविदर्हिं॥ यममृद्वसर्वकारप्रहसपादादिसंनसेत॥ रुदययमरुमि कुतस्यमध
 वागकत॥ रुलकर्मा नूपकुश्रहं सर्वसत्त्वान्य॥ ते॥ केर्मधवसादुद्धवाधिसत्त्वा
 याकर्मनंविश्र॥ सनादिप्रमहारुभोदर्थनायाविचक्रले॥ कर्तव्यादयसर्वात्मा तस्मात्मा
 न्यत्वनसिचति॥ तस्मात्पूर्वकर्मचवीक्रयित्वाविचक्रले॥ धादुवीचत्वावाडुतुत
 मानर्षीकीयतं क्वं॥ कृपाहीनानसिचकं॥ हलाकपवच॥ ॥००॥ तिथीवज्र

देवताकीयनरुभानान्यदवसमाख्यामं वाक्स्वाध्यात्मिकं पूनः नन सर्वाहिधाननया
 कालेनमघनागमश्चपधति॥००॥ आह हगवान्स्वामिवज्जवावाहिकभगवत्तथासर्वथागि
 यागिनीतकुवाज्जयकुदभरुलनागकर्मविधिल्लक्षविचकविंशतिपटलः॥ ॥
 भयम्॥ जीभाहनीप्रयागनकाभांसर्वप्रकालकठसमाधिसंवाध्वंचरुदयसमवस्थितं
 वायनाकमिमात्रतासानन्ददलदलत्रितिरुपूतः॥ कायवाक्किरुधर्मात्माचतुर्विंश
 तिवक्तव्याहयादिकाधनकावानचसादवीव्यक्राव्यक्रसूत्रपिका॥ कामधत्तुसंपन्ना
 जिंभात्मकमरुधत्तावयत्मावकर्मक॥ ययमानवकर्मातिरुकीयतगुदहकं॥ मासतडा
 यमानक॥ स्वतर्ज्यानुधिवंचचकुलव्यप्रयत्नतः॥ यमयकुसदाकस्मैक्रियतनान्यथा
 म्रंविधीयत॥ रुमीयंरुकावंदद्यासंचमव्यदायंतथा॥ षष्ठ्युवावकंचैवक्रकावंसप्त

मरुभरुंकावंपूतः॥ गुयादभरुकावंचरुकावंचरुदभनतः॥ रूकावंपंचदरुभरुतका
 ह्यातक्रकावंचैकविंशक॥ वेवाचनेकानकानशिंभमपूतः॥ एकत्रिभक्राकावंचरुय
 ताविंशेत्तुगदिको॥ प्रयचत्वाविंशदुपयकामोद्विचक्रको॥ चरुचत्वाविंशमक्रापंचचत्वा
 र्क्रीकाह्यचत्वाविंशम॥ वाकावंचपूतदयादकानपंचाभक॥ भाषाभीकवचामकुसाध
 मेकुतस्यमधुलावयत॥ हनविह्वानन्दहमपनयकु॥ आहयप्रतिर्वज्जभधनिकिवि
 वाधिसत्त्वाधयप्रकी॥ हकुललस्वतावांचकीरुतालप्रथे॥ सहकुसर्वतावाधंप्रय
 वात्मातस्मात्मावसंतवभा॥ आत्ममावववृद्धत्वेनपत्रसर्वजकवाकवाचित्कालवसकुर्म
 तावाकुतकुतकुदह्ययत॥ ननमानिकमात्मानसत्त्वकाकुप्रसेवच॥ रुपामृत्पाययत्नन
 ००॥ तिथीवज्जवावाहिकभयथागिनीमहातकुवाज्जकवचमलमकुसमावसकर्मपटल

काविंभक्तिः॥ अथ उन्मलिकवर्षप्रयागं सर्वत्र हर्षः कथं यागिनी समाप्त नवगमन
रक्षपूलावयच्चक्रनायकीं॥ रवद्रुपमात्मना इतीतालवजात्ममात्मकी॥ अकिंपंसववगन
यागीस्थितपत्रमाक्रवं नवलतिवायुविक्रानं यावयागीनचक्रमि॥ नसाप्रधपारस
मतिउन्मलिकुविक्रानं वायुना सह॥ तथा कालगमत्मा च यः परम्भत्सर्ववस्तु कं॥ सत्वं
कभया॥ ॐ दं कर्म प्रयागं नवद्रुपमात्मना इतीतालवजात्ममात्मकी॥ अकिंपंसववगन
नस्वयं वीरपूलावयच्चक्रनायकीं॥ माचाक्रवं सत्वं यत्मा कावपदे स्थितं॥ लयतागमकालवृषाजाय
लावयत्कर्म यागिनी॥ वर्धुन प्रयथा पूर्वमनुयागमसमूहवा॥ अं अस्मत्तुर्वमाना लागम
स्वाहा॥ उं रवगमन नरुं रुरुं रखाहा॥ ॐ तिमनुयागमा प्रक्षपायस्वहावकी॥ यत्तु च
सत्॥ प्रथमवैवाचनं च द्वितीयं त्रिजगजयत्तु रतीयं सत्तदद्यात्तु पंचमवदमादिव

मसेवदापयत्तु दशमं विद्यात्तु द्वादशगुका च पूनः॥ इयादशमक्रका वंच च उर्द्व
रुं का वं पाठसत्यसत्तु॥ रुं का वं विंशमदद्यात्तु का वं चैकविंशकं॥ वैवाचने का वं विंशकं
यहा च चैकविंशकं वा ज्ञेयं॥ गुका वं प्रकिंशदद्यात्तु वस्तु सप्रविंशकं॥ अष्टविंशकं रुं
त्वा विंशकं पयश्च रुचत्वा विंशकं सत्तु पंचचत्वा विंशकं रुं रुद्रगसफचत्वा विंशकं॥ अ
विदर्ति तं॥ प्रतं सर्वतलिवित्वा मूर्ध्वपयत्तु का वं सत्तु पूयका वं कृत्वा स्मभान कर्पत वस्तु
तुद्रस॥ अर्धचम्पनस्तु नष्टु लोभी सा वधिना॥ नागगतिमहा यानां स्वहा वं सर्वय
र्वकर्मिकां॥ अथार्गं चक्रवर्धु चक्रवर्ग प्रयागं तथैव नष्टु वी प्रवाधर्षी प्रीतिनामस
लावयदलकमिधिरुं॥ चलनिसर्वकालतुना स्यादप्रसार्धयं॥ तदा वाका वृषात्म
विरुत्सु रवपूजा निसर्वात्मकी विद्म॥ वपनत्रहवरुम्प सर्वकालवर्धमात्॥ क्रिया सत्

कांयंयंतावस्मयथागीतंनचतंतयधनाप्रवितंकनकर्मलतास्यकर्मवसूत्र४।तुतु
वतिवागीमयानकृतवसर्वपूजकवांगवाध्वीतीतिऊकचखतावतुसंतवांगवचस
संस्कानधर्मात्मासंतवकितदालयंग।उंकासूधमविनूयकरमध्यपितरतनायदाहूय
दंमकुमहादवीप्रह्लातायात्मिकास्यवा।चक्रंचपूर्वतावाच्यमकाशपंचाभात्मकांग।प्र
तथागार्पचमसीकावंदद्याम्नकावंप्रमपून४।हूकावंसफमंदयावायवीजकुश्रुम
वंपून४।उकादलपदंदयाद्वादलयकावंतथागहूकावंदयादभमचदुर्दभहूकावकां
रभपून४।उकानविंभमवाजविंभमहून्मसत्पून४।सेववेकविंभदयाकाकावविंभन्यस
कावंसफविंभकंग।श्रुविंभरुकावेकानजिसकतत४।विंभमरुकावकुलुकजिंभ
उंपंचविंभन्यसत्पकिंभसेवंदयाहासफजिंभतथाभयकावाष्टाजिंभकुनेकानचत्

विचत्वाविंभरुद्वयसत्तगाहूकावंचकुश्रुत्वाविंभहूंपंचन्यसत्तगासफमिंभात्मकम
काकाटिससतिहलप्रकाकुमलनमिहूपाहूंदरुटनारुद्वयसोहूताहूंदरुद्वस्वा
गानकानपंचमात्मककासूहांयायामकुलयो।वेवाचनंप्रथमकुचितीयसेवदापयग
श्रुमकुद्वयकानंचनवमभुकावंतथागदभमवेवाचनकुगकावेकादलयन्यसत्तगा।द्या
पाठभरुकावंचसफदभवेवाचनंग।श्रुदलयकावंचनकानविंभरुन्यसत्तगाविं
द्वयसत्तगाहूकावंप्रविंभदयात्सफविंभयथाजयगगाहूकावेकानजिंभकुजकावां
क्रकावंचयविंभकचकुमिंभकगकावंदयागहूपंचविंभमन्यसत्तगा।प्रविंभमवा
हूंचेकचत्वाविंभक।रुकावंचाचत्वाविंभनिजेयचत्वाविंभम।याचेरुचत्वाविंभ
यातपंचाभरुवताउयंउमादि।भत्तपंचमकाश्रुप्रसाधस्यप्रधागिन्माकांचे४सह

23

[illegible]

महाकपः वज्रवा नाविजानी वा इच्छा न विचक्षत ॥ अपका भी महागुह्ये सिद्धिर्ही वज्र
कविह वत्सु ४१ तस्मात्स वयित्वा उगु न नाधयत्प्रहसति ४१ तन उद्ध न लस्य न क
नीयान्नान्यकालं प्रसिद्धतः ॥ ०० ह्यहं गवा च दवा वाक्का वी वनायकी ४१ सर्ववी व
ऊ मरुच क म्चा टन कर्म कुरु प्रयथा विंभीती क म पटल ४॥ ॥ अथा तस्यै पवक्का
कमा उत भिर्धु कल्प कुर्याय त ॥ अष्टविंभत्स ह्या तिलैः स प्रद भानि च ॥ क म मान सम
वाधिसै भयमा प्राप्ति विहू यागु क कामिका ॥ क न द क क त स धि व शो स ह स म व च ॥ सै व
क म र्ध प च या क कि ग त्वा व ज म र्ध क नो ॥ समा त्य लि जा य मा न दु ग क का च लि का स्व र्ग ॥
चि तं ॥ द ॥ भानि च ल कानि प्र कृ व ति च स ह स के ॥ उ त सो वी व समा त्या ता क्ता ता न मु नि
शो व क्त ॥ सो छि क ॥ पि छि ता सर्व भ म्भु प्र सो ना श क ल्प सै व्य या ॥ सो वी व क लि सै व्य ॥

या संधिश्च चरुषष्टि म व च ॥ न त्वां सो ना श्च र्ति द त ना उ सै भ य ४॥ क वि ष्या मि त ना र्थ सो
य दी पा सो ना श्च र्ति म व क स्थि ता ४॥ ऊ च दी प ४॥ त जा क ति द र्मी वि धी य त ॥ उप दी प
भी म रु कं पी त्वा म क्ता क्त व प्र स चि तं ॥ वि द प्र ती त दा क प्र य र्ध क र्वा कि मा न स ॥ सो का व न
अ स द व्या पि म रु क वि द र्ध पा र्त्ता पा न कै ॥ ह्य प य ति न भ द ता क्ता का वं सर्व स भि ग ४॥ अ
०० द्रियं विषयं सर्वं विषं प ना क्ता लो कि कं ॥ क प या मा वि तं त ति ना त्म ना म्भु कि रु रु क ॥ वा
यु कं ॥ त स्मिं काले च सं र्ता स फ ल्तिं ॥ अ क्त व प्र च ॥ प्र ह्य पा या त्म वृ पा उ वि हू या च क ना
स्वा हा हा ॥ उं सो छि ना य र्द र्द र्द र्द स्वा हा ॥ ता वि ता त्मा महा या गी क र्म कुर्या द्ध थ पि
स म वा उ ना च क पूर्व ता वा च का श्च च का न पं चा भ कं ॥ अ न्या न्य य ग मं म रु म क्त वं च न
प्र च उ क्ता श्च प्र य था क र्म ॥ क्त सं र्ता व ज स त क्ता वि ती य स फ का श्च क ॥ अ क्त मा ग ट प हा क

॥ कुरु वदवकं ॥ मरुधपा ॥ धिदि वरुच २३ २८ ॥ यानद्यावा वाक्कापय न ॥ प्रष्टप नीष
हुकं ॥ सफमकाष्टपूचा कं धाव पूर्वर्जितं कमातु ॥ दापय हं हं चमकुं सर्वमेहामहं ॥ मरुध
सह ॥ वताउयुधमानं चयुगलीका वयद्व ८ ॥ गम्पतयनसिद्धानं साधकी सिद्धिहउ
॥ तानां चवतारुमं ॥ धुनं वरुत वंमलासु वं पर्यपासितं गु वृदाह्ययथा कल्पं पाप्मनं
यमस्वामला चवी सदाह वं ॥ कफविं वामहात्साही सत्यवाक्क वती तथा ॥ पूर्वा वमन्य
र्जय नः ॥ दिक्का वाष्वा सदा ल्यमला तां संग्रहं कथा ॥ भो चसौर्य पवित्रं च दया दयेन
निष्ठसंगानि स्यहा सदा ॥ नमो हान च पूजां च नजा पंचाङ्ग मालया ॥ दिवसे वा वनं
अकाम्पमा च वं सर्वे काम किंच नमा च वं ॥ निवभनं व्याघ्र चर्म च पंचमूत्रा विरुषि
वत्सुखमान संभा ॥ अम्भक वा विरुत लपं च श्रावय रुत सत् ॥ नाना नू कलया रान

नि निरुं ॥ काको ॥ एकमास नं ॥ उद्यानय कुव कुभ इत्त कुय कुमा धितं ॥ अम्भान नक
गानरु यव पवापासा दभू न्य वं मरु ॥ चरुष्यथ पूर्ववा ववाज वा वमथापि वा ॥
नमर्त्ति प्रपूजय तं ॥ अग्दामनं वयत्कार ॥ अमरु विरुषत ८ ॥ भवला वधय क
र्वकल्प विथारान विह वधा गिसदा सखं ॥ सिंह वदि च वधा गिसर्व संका विरुदनं ॥
नक्यम मरुक्ति नं गृह ॥ विह वभो नथा रानया वइ पलं धि नं तथा ॥ सफग रुत दानी न
॥ दाविह वं क वप रुत रुत नं ॥ निर्विकल्प क रूप नसिद्यत नाय संभय ॥ नतपां सो वा
॥ सो वा दानं दया पश्चात्त कुं समा वरु ॥ वताउा पर्यया गियो निर्मल रु वति निश्चयं ॥
॥ कल्प नं रु वा रु सो वा रु प्रद ॥ अविष प्रम ल रुयीय रु चं नाम च उर्वि भानि पट ल ॥
॥ ती कथनं ॥ अमा दसा रु ॥ अथ दं वी प्रजा कला प्रलि पत्तु भवमाह ॥ ताप स्रुत गवन्वा

मिथागरुसमानिचमृगुक्कप्रवक्षामिवरुनायिकीप्रथागरुधायागिनीरुक्प्रमा
पादुयानात्रीवाधिरुस्पृंभकंमहायानस्पृथक्कानुमभीतिवाटिमृचनपा
कायधरुगुविस्वरुयागीसंववंसत्वयाचकं।वाग्भवागीविमिश्रचनायकीऊगड
पिच।नानासुगुनमहागुपीवाधिसत्वस्पृदभनायागिनीयागीरुक्स्पृवहस्पृवृक्षमचने
यभमग्भमानंयदाचिरुमिवमृपूलीनगा।सहउकायमाप्रतिस्वसंवधात्मवाधयन्नाय
पुष्पापायात्मकंयागीभीपुंवृक्षत्वमाप्रयात्मानसमाधिद्वर्षदवींतिरुयंयस्पलीनगा।सादय
मस्यहावाश्वसंववंनकथ्यमालरुक्षेसर्वयूकंचमालिकात्पादिवर्ग।आदिवर्धुकाच
श्रयनागमआदिप्रादियहासुपमयागिनीनामादिकंकृत्वामातवासांपकीर्तिता।उत्पटि
पाशचानपूविरुपूनवनागीनिशाधत॥मृशकचटकश्रयभवर्गनवाङ्ग॥६०००॥व

कुरुधरुश्रवहवर्गश्रुर्थकंभाउ।उमृ॥४॥रुगुलश्रनमश्रवूनवात्मकंचत्वाविस
भनमहामायाजीववृपाकलास्मता॥वाभयसुसमाख्यातासर्वविद्वसमचिता॥च
तं॥उज्यगानथाव्यातंदीर्घसूजयाज्ये।उर्ध्वसूजयंपाकंस।धमृससममं।
किधायरु॥प्राध्दयसमायकसुगव्यंसर्ववाभय॥कर्कटमिहकंन्याश्रुक्कषक
रुक्समान्विता॥पंचकलाप्रमाननउदयनियहाचिता॥सबमषकथचैवस्कन्द
नामसमन्वितं।कृष्णादिकृषित्यरुउचउर्विभपविक्रमात॥रुलकपूचविरुयायाद
विरुयाभषाहावासमासदा॥आत्मनासर्वकार्यपूषवंपांचैवयाज्यत।सत्याभुताभुत
कृत्ववायुयस्यवाक्चवाभय॥स्वववाभिसुथामऊंसूत्रपाणिचपभको।संयागन
निशवंतवमिश्रगत्वानांपूषहउना।दवानांमृकिहउत्वावजवानाहितावयमसफजि

सुवादवदानवाश्चवेवीर्षचक्रसंवर्गो॥ अथानकनववक्त्रहंप्रतिष्ठाविधियाचनानां॥ पूर्वांकवक्त्र
आकाशमधुलंचक्रंपंचापचावपूजकं॥ वितानंधजपताकंच॥ अहितिंतरूपविक्रमं॥ समर्थ
मायादव्यायथा॥ इहोक्तदलिसुदुमागतान् अग्रस्थंसततं नाथरूत्वा प्रप्यादियामिकां॥ गुरु
विचक्रसं॥ निमर्जनं सर्वपानं शिवानं चक्षामयं॥ सृगन्धगन्धतेलनकल्लं कुचस्त्राप
धुलं॥ प्रतिमादिषु सर्वदयागी मरुप्रवणयत्नादभकर्मकर्मकार्ययाचं ध्यावहनादिकं
भवचा॥ सर्वकर्मप्रतपश्चात्तुहामकर्मपूजयेत्॥ अदवाग्निमूखा सर्वप्रतिष्ठाकावयद्व
थात्तातैरुपूजयेत्॥ ताज्जनदानदाक्रिधंजनकुष्ठिंचप्रष्टिकं॥ प्रष्टिकुजनसोतागंधसमागल
प्रतिष्ठाकर्तुं सत्कृतां॥ भिष्यस्यध्वपक्षाकर्तुं कर्तव्या प्रष्टिकुत॥ निर्विकल्पकवपश्चप्रति
नवपूजाप्रष्टिसमन्वितं॥ ००॥ ग्राहलगवान्देववीरसकजयगिनी॥ सर्ववीरसमापत्त्यावज

ह्युल्लङ्घयदवनाप्रतिष्ठाविधिप्रकृत्यपंचविंशतिः पठन्तः ॥ अथ सर्ववीजयागिनः
 वर्कभास्मासंश्रितिकर्मभुक्ताभुक्तं अथ सतगवान्दवीहामंसत्त्वप्रदायकभास्तिचसंभ
 मान्सावधसत्त्वानांदवनयकीं स्वरूपताममनासिद्धिवाधिविरुमहाडवात् ॥ स्वस्व
 प्रयात् ॥ अथ दवाप्रवक्ष्यामिहामकर्मादिलङ्घनीरुमिच्छाधितमकुंशमृनिवृद्धानिका
 लपाष्टितंतथा ॥ द्वादशाङ्गुलवशाकृष्टोच्चदुर्दभभाकिमवचपाठभगलिक ॥ धुनक
 मलकात्रागभानिका ॥ तानिचयमकृष्टानिहव्यड्यं प्रमानतः ॥ कर्मतामृदपतत्का
 तानिचकस्यसामान्यं पानलङ्घनीकृष्टुस्याहलागनगद्वैतवेवकावथत् ॥ उलिष्टस्या
 वदिकाकार्ययथाउष्टप्रमाद्यतः ॥ द्रष्टुमरव्यड्यजानां अलंकनकुविशेषतः ॥ स्वतर्प
 किंउसर्वकर्मिककृष्टुस्यसठभविशेषतः ॥ भानिकवदुलाकालाद्यपूर्वानिवंतवत् ॥

६८

सर्ववीत्रायागिनीतिष्ठसमाजं कृत्वा पृथुति दिवदानवसन्तानां कथं सूक्ष्मचदायकीयायदिस
 ॥ ॐ तिचसंभयं मक्तिश्रुपनयतुहप्रता ॥ ॐ दद्वीमहामायावावाकामनकधा ॥ स्वस्वहा
 ॥ इवाह ॥ स्वस्वलावण्यसाधकवशुक्रया तहामसंतव ॥ तस्मादुतातुतं वीक्ष्यामं संकल्पमा
 ॥ निवृद्धानिकावय ॥ अष्टांगुलसमावश्येयावतुहसुसहस्रक ॥ अष्टाङ्गुलनिवत्यातंतथांगु
 ॥ लिक ॥ पुनरुलवृद्धाहिकावसात ॥ अष्टांगुलमाजुं दधनाकलवर्धनं ॥ विंशदंगुलवृद्धुन
 ॥ नृपतत्कार्ययौनीया ॥ चविचक्रं ॥ अक्रान्तस्पतिहिराणोर्द्विहागं त्वलितं रवतु ॥ सर्व
 ॥ ॥ उलिष्टस्याहागननमीतुं वयाजयतु ॥ यथावाहननमीचतथास्पतवमवच ॥ गदाश्र
 ॥ ॥ ॥ स्वतपीतंचवकीचक्रुहाहवितमवच ॥ यथाकर्मनूभाजनकृत्तानां वसुलक्रसे ॥
 ॥ पूर्वातनं रवतु ॥ चक्रुषीपाष्टिकंगीतं उरुगासनमवच ॥ उच्चातनमलिचायं अर्धचन्द्रपश्चि

[illegible][illegible]

हवर्षु विकारकं स्फुरन्माहृतं कर्मनेमिग्याननंतवत् उच्चाटनम् वर्षु च वायव्याननम
 वथलदाहं कावहतिधागनदिउरुकावकुहावयकमहावलप्रयागनसर्वधरुहिवा
 टितादवतात्मकं स्वष्टुपोष्टिकं कृत्वा भक्तचिह्ननभानिकं वाग्धनवागचिह्ननकोध
 नूनतिसदिह्यकं अमिविधमिदं यागिमर्तुप्रकृतिलङ्घनी अर्घपादादिकं स्फुर्य
 माव्याताभालिजंतुलंयत ४१ दधनंचसदामध्वाहकं हिवाधिचिह्नकी शङ्खवाहपुवा
 ४२ अङ्गुलितावामदक्षिणाङ्गमालातथायथामयटिर्नलंबादर्वसर्वाववतारुषितं ४३
 ह्रिका ॥ वक्ता प्रप्यसमाव्यातं स्थापयसी ०० धनंतखदं तास्त्रिचर्मवकुसमा
 वीहंतदाहृतिं ॐ जंरुंकावतक्षुपास्त्रवस्त्रापयत् ॥ अस्त्रक्ष्माचमनार्घचदद्यात्
 मदीपंगन्धनेविद्योषयत् ॥ जानूनाहंतवहलोपाशीसूत्रंचक्षत्रयत् ॥ ॐ अस्त्रयसाह

वाहा ॥ ततासमाहितामैत्रिवर्षुगन्धवनाह्लात्रक्षयचिह्नतथाशुभाशुततथावंक
 भिषामधमापानिष्पकंपसमूहना ॥ चउ४ भिवातमाकालाप्रक्षिसिद्धिस्त्रिसदा ॥ कन्द
 ॥ यद्विहृत ॥ चउकाकामलिप्रव्याउसावंगकत्रकापमं ॥ प्रप्यवागनिराचापिसर्व
 ॥ र्मुहंवाक्षेध्वयेध्वसंपदं ॥ चंपकाकात्पलाभीलमावतीभीतगन्धवान् ॥ कर्पलावृक्षग
 ॥ ४१ अतिगम्भीरनिर्धाषाअग्नित्रयसूत्रावह ॥ शीवस्त्रक्ष्माभीवाकुक्षिभूलकलभाक
 ॥ नकपिभूमहार्थदभा ॥ नतपांशुतसंपरिवायवावाग्धसंपदं ॥ चंचलादिमूत्राकाला
 ॥ मूरुप्रकंपितयामिमूरुहसतिनिरुलं ॥ मूरुजमकिवाभनमूरुस्य अतिमदिनी ॥ क
 ॥ पतकवं ॥ विवर्षुधूमवर्षुहम्भमवर्षुतिकर्षव ॥ वक्ष्मपलाभतिलां ४० ०० पितार्थ
 ॥ दंक्रतयदि ॥ ददो ॥ नव ॥ चराचरतिनादायाहूमरुभतिधाषवान् सिमिसिमाय

मानावावजघावार्थहानिकृतप्रभं प्रभलस्यार्थिह उद्धरणभीषसंनिहृयासोहया
पूष्यनाम्नवकुदिमुक्तिसकोषकावयत्तुश्चमनंतगादद्यादधिसंनिहृमानसा
ॐ वज्रयस्तय स्वाहा ॐ इववस्य ॥ ॐ वज्रकुवनाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रकुस्य ॥ ॐ सर्वप
ककुलस्य ॥ ॐ सर्वसंपदस्वाहा ॥ दध्यस्त्य ॥ ॐ वजाग्रप्रस्वाहा ॥ इवास्त्य ॥ ॐ अग्रप्र
चिक्रवीजपनिभर्तमहलचक्रं विहावयत्तु ॥ समयचक्रस्तनचक्रं ॥ अक्षयप्रवभयकृत
मुक्तिगर्भपाशं दुष्टजयत्तु ॥ स्वदेवतावीजोपनहामयदधिसंकिन ॥ प्रभुं कंदवनांदय
व्यानरूपसहामंयुविचक्रं सभक्तभक्तिर्विषयकदधिमूर्खदयात्तु ॥ समित्कभादिप्रहाम
गात्रपाशंपाददीपमर्घनिवयंच प्रवदयाय ॥ कनंयथापूर्वाकं न विधानेन न विसर्जयम
मंत्राशोलाकारुवंकथा ॥ आगिनीयागिसंमित्स्वायपानं विष्णुप्रभुं किल किलीमहात्मा

यदहिनं कार्यं सिद्धयन्ताहर्षभयभा ॥ ॐ कृताव ॥ सर्वसत्त्वार्थसिद्धिंदत्वाय ॥ नृगभगव
भक्तिसुखयनं कृत्वाक्रमदानपतंगहं ॥ एवं प्रयवाचानूचार्थं क्रमापयत्तु ॥ तत्र प्रवधा ॥ अथान
॥ सर्वसंपत्तिकृत्सर्पिः ॥ समित्कुविचक्रिका ॥ सोर्याधिकृतकनंकाशंसर्ववक्राकवक्र ॥ ॐ
र्थसर्वकं ॥ महावक्रं माघं च आयवगप्रदं यव ॥ आयवृद्धिकरीश्वरा ॥ धृमावागनाभनं ॥
देवताभारभं कर्मानूयं भान्यादिकर्मकृत् ॥ पूष्यं कृत्विजानीयात्कमान्निष्पलिन
कवृत् ॥ दिनमहावलंताविनाकुसर्वप्रोक्षान्पधिपतिं ॥ तनउद्धृतवत्सिद्धि ॥ सर्वकर्मिकहा
हास्तनामृकमतं मनसंकीकृतं ॥ सर्वलाकाग्रधुपू ॥ यस्मिंकालतवदधिसंमिंकालप्र
त्मानंसर्ववाचनं ॥ एवं कवामिथाहमंसिद्धिसोताग्रसंपदं ॥ लाकलाकारुवंस्तनलाहाया
नं वासनां वृद्धिनिर्मितां ॥ ललातलक्षप्रहारप्रधायाकुल ॥ उमर्हसि ॥ लयंचकीयततकुम

50

॥००॥ निधीवज्जवायाहिकल्पमहानकुवाज्जम्

आत्मश्रुतिवृत्तहामविधिप्रकृतर्तनामप्रतुर्विंशतीपटलभा ॥ अथान्यष्टमसं वक्ष्य
नानावर्षुरुलादयैः। यमतिथागिनासैम्यकवमार्थवमस्थितभननयागनमतिमीक्षया
बालानांवाधिमागताः। वज्रवलंयसवीर्जहका वमस्यसंयतं। वहनवधूतिनाजिदुर्धमस्य
वाधितिरुप्रकीर्णतां। लंघनंतवदापंचजितवक्तमयंतवत्। तगवत्तुगलिर्हकुसादित
संतवक्तिसदात्मनः। यागतकुसुहत्त्वपदभादृधकजायतभायागिनीतकुंतुगस्यामुसत्ता
नस्यस्यस्यवदाम्यहं। उक्ताकिथागजाह्ननंवलवज्रसूत्रपक। नायकीजाकिनाकानक
कीयात्सहजचरितिलकैर्हतीवन्दाम्। वनेवदानश्चकात्रयंततः। वलंचक्रयसर्वासांभ
मायुधतादृधैवपवर्ततभागुलिकावापिसुगुस्यस्ययंवायव्यतापितं। तापितातगमध्वप
भानवासिमहाकालानूनाय। तयथा। उंचलप्रचललललालयवलिंगमस्वाहा। सवायुर्क

मूधुधुप्रकलिविद्युजिह्वहृनरपचरदवदलमानयस्वाहा। वामचवततवभ्रवक्तनसम
कम्पजपद्वगीकवधमरुमं। उंचजकाधवलालवलहनदहपचविध्वंभयास्माकंमानय
कनवीनरुलादकनसचयतभागुगुवृधूपमविदिन्नंजिभुक्तवलिनंदयातुसफाहनाद
पनघांप्रवाहयतुवर्षकिवर्षापनयनविधिभा। उंगगभन्नविगमस्वाहा। अननप्रका
हवति। उंमृकानिसुकिमृकागदुकिमृकाः। कादृक्तित्वांगलंमृकानांमृगपूवीधधदव
स्यकस्यचित्कार्यमृखबंधव्यवहावपठितसिद्धिः। उंनमः। निभतेववायचितिशक्ति
दिनांमित्राविलिशस्वाहा। प्रकनमकुंभचकहस्तनलासुकंकाचकविंभक्तिवायंपविज
थवाविषलंभवाजिकासर्पप्रमूलवीजधनुवकनवीजमहाकात्रवीर्जवा। प्रकषांवकु
लिंदयारुत्यश्चादृक्किमहस्तसंगुह्यवामनतर्जनीकाधवाजनचकुर्विंशतिरूपयतु।

१४ तम संवत् धर्म प्रसन्न दयं यत्न वज्र प्रथा गन सिद्धि ति च वध्रिका नाना सिद्धि प्रदाम क
 मनि मी दयाना एत ह उति भक्तता प्रम वलायां वक्रा मि ४४ गा दवा गन नूनान रूयमानां
 गच्छि दुर्धम रवाल लाट गंस्व क वध धन य वज्रं क वध काल य वृद्धि मान्त्र ज वध म वध इ वध
 क्रि कुसादि नवी दि नदि न तस्मिं कृष्ण रुया दृष्टि पति ता सर्व वक्रु का म हा वा गन मात्मा च
 कस्या मु सत्तार्थ क त निश्चय ४ प्रम वला च वक्रा मि धर्म च प्रसन्न दयं च कु काय स्पथा ग
 कि ना कान्ता प्रय जग वं क्रि ना र्वा धि चि हं सदा य मं क्रि का यां च क वध च भा ग वृद्ध म ड व ग
 हय सर्वा सां भा ली जा ती सल रु धी ग हा मी च सर्व त ने वयै र्य व भ्रा दिका यथ न तथा वदि क
 गत गम रू प्र उ प्र धी वल वज्रि कं म धु लं ध रु ता स च नाना या ग प्र का मि तौ ॐ नम रू स्म
 हा ग स वा य कं कृ त्वा र्ध ना क लिंगं गृ ह्ण ता ता वज्र प्र या धा व दा ग द्वा ति पि धा कृ द्दि ४ ॥ ॐ चो

प्रवक्तु न स म वं लि वि त्वा न स्या त्य क व का र्ध ग जी ४ का व च रु द्ध यं लि वि त्म रु प दं लि वि त्वा
 स्मा कं मान य कं रु द्वा ल्मी ल्कं मया पंच ग व्य सहि त वि त ४ वि त्कु मी मा रु कं वा रु चिं कृ त्वा
 स फा ह ना द क ध वा पा न य नि यदि न च र्थ नि स फ म दि व स र्व व रु द्ध रु त्वा घ ट कं प क्रि
 अ न न प्र क्ता लि त म र्वा ला हं स फ र्म कृ त्वा क स्य वि द्दि त्वा व स्था प्य य न्म र्वा व व ध क ता
 पू र्वा ध ध द व द रु स्य म र्वा व व ध नि स्वा हा वा लि व र्ध स्या प ति त व र्ध या दि त्वा स्था प्य य न्म य
 य चि लि श किला न रू प न रू प ध म पि का ना रु धी व ध मि म क र्द ४ ग म व स र्प म क्ता व वा हा
 वा वं प वि रु प्य गृ ह्ण रु वा टि का यां च रु द्ध र्वा ला रु क र्प य लि व रू प द वा त व कि ॥ अ
 न न षां व रु सं था क म हि ष भू क व भू ग वा र्ध रू धि व धा ला य च रु द्ध र्वा पि प्र ष ध प व
 ति कृ प य न्म भी मा प्रा का व व ध क ता व ति ॥ ॐ जी जी रू रू वि द्द र्वा हा म् अ न न म रु

धर्ममयमहिमकापासीयस्थानप्रतिपद्विधिविनिर्वाहः। श्रीवक्रपयस्करः। ॐ वक्रपयस्करः।
 श्रीस्वाहा। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
 पामार्गमूलं वक्रपयस्करं वक्रपयस्करं वक्रपयस्करं वक्रपयस्करं वक्रपयस्करं वक्रपयस्करं।
 प्रतीपश्च ॐ नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
 श्रीमूर्तिवामः। ॐ नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
 कृतिविक्रयः। यका वा न्यां संपूर्णं कृत्वा नाममध्यविधाजयन्। उक्तानि पञ्चसंग्रहस्तपः।
 यकं लब्धं पूज्यं सुखं पितृभ्यः। विष्णुभावा तथा एतन्मूर्तिप्राप्तये कदिना। नद्यां प्रवाहयत्।
 रुद्ररुद्ररुद्र उच्चाटनप्रयागः। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
 पीठयन्मृत्तकश्च वक्ष्यन्। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।

यत्तु वसतिविधिः। वायव्यकाक्षकं मधुलम्पलिप्यर्जुपञ्चदशदरुस्पनामंलिख्यत्तुपि।
 राजनत्वश्चधिकसहस्रं पञ्चविंशत्युदकमध्यनिबृत्वा। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय। नमः शिवाय।
 प्रायकपञ्चनमं प्रति कृतिं मूर्त्वा दावत्यं यावत्पादतलस्य गुफं कावयत्। रुद्रपञ्चविंशदकां।
 रुद्राटकती कृते लना कानां रुद्राटकती कृते लनालाशुभजानामग्रहश्रृंखलसहस्रं रुद्र।
 शीयति। स्मभानरुभनाभकृष्टप्रति कृतिं कृत्वा दक्षिणातिमूर्त्वे वामपादनाकम्पमृक।
 कमीलस्वगतधुलघुताकानां श्रृंखलसहस्रं रुद्रयात्। धनधान्यसमृद्धिर्भवति। सध्वं।
 हविर्पञ्चदशवक्त्रा ब्रह्मविदया। नता उत्पन्नं च पञ्चकभलमभवत्। प्रियं गुभतपूष्पं च स्व।
 नदीवीजं मनो लभवत्। शिरुलासमरागं च उभीलनिम्बपत्रकं। हलकं वंजवीजं।
 दिव्यं संप्रकृतं पञ्चगव्यं नपीषयत्। यत्पदं गुटिकां कृत्वा श्रादिभ्यः प्रयाजयत्। उ

٧٢

लोप्यतन्त्रपिठुमरधप्रक्रियवरुकाकंदयातिमृत्त्रायति॥ कृष्णकावकस्यहस्तविरुतमृद
स्तिवारुवति॥ अथभद्रमावयकुमिच्छति॥ सिककनवापिष्ठकनवापतिकृतिंकृत्वाका
विचाक्षादकंपविजुपीजिसंध्यं कृष्णं पूजयच्चिनभ्यति॥ पंचसर्षपत्रुधिवाकानां
मृष्टसहस्रं श्रुयात्मासद्यश्चपस्मादभधीयति॥ त्रुधिवंद्यईयति॥ द्वावधवात्रुधिवधवा
नाकम्यमृकभिस्त्वेन कृष्णं नयस्नान्नामृष्टसहस्रं श्रुयात्पत्रमसोत्ताएषाहवति॥ स्व
विति॥ सार्धं पाण्डुवृत्तकिंतं कर्म॥ द्वाकनवीचपूष्यानिधचचन्दनकंतथा॥ कृष्टद्वयं
तपूष्यचस्वनसिद्धार्थकंतथा॥ निर्युष्टीरुतकभीचकभवावाचनंतथा॥ त्रिकंदुर्कीवा
कनंजवीजंचहिंशुहृत्ताटकींतथा॥ पंचविंशतिभतानिसमलागानिकावयग्नपूष्या
थाजयन् उपवासापत्राहृत्वा कृष्टाष्टम्यां विरभषत॥ स्वष्टदवताचार्यजपेदष्ट

सहस्रकं॥ एवं पूर्वविधाननप्रतिष्ठाहमनपूजयत्तु यहाभमंजनं लपेमककपंचदापय
प्रमृचयत्तु॥ इष्टयह प्रसर्वेषधूपंदत्वाप्रमाचयत्तु सर्वकलप्रभिनसिलनिर्कवातवत्तु॥
लपयत्तु॥ स्त्रीवसातवतिकं न्याधयत्तु रत्नगुहवति॥ इष्टप्रसवानावीक्षं नातिथानिप्र
तिभमडुका वंकातहाविधीत्तु पंचगव्यनसहपिवत्तु॥ गतीतिष्ठति पूजयतीतवति॥ व
लपयत्तु चंद्रार्गनाभयति॥ विषदं भकालक्ष्मणनालपयत्तु निर्विषातवति॥ निष्क
मृजंति॥ प्रममवक्रासर्वजनप्रियसोलागंधतवति॥ सर्वदाभाषितातुगमरध्वपूजोपधी
नकर्ममूलावरध्वसदास्ति॥ ४॥ सर्ववीजगन्माता ओषधीनां दुनायकी॥ ४॥ ॥
कवचनिर्देशसफविंशतिपठल॥ ॥ अथ ससावपालकाटिस्थ॥ कथं च
कावमस्तु कस्मिन् तं गीका वं पममरध्वडुवका वं रुदयपूच॥ धार्यमानं महाधार्गं सव

लावकस्मिन्त्वाक॥ ४॥ नवाचसाम॥ हयाका वं गीवायां वसायनाथाग॥ ४॥ षर्क॥ गच्छन्तं नथा
सूचवित्तानूगच्छति॥ वाधिमानसा॥ वाधितार॥ ४॥ षवसाचकथागिनीथागनायकी॥ ४॥
ध्वकं॥ लावितावसनार्थं दुयागिनीचक्रमार्गग॥ ४॥ उदयनिसाधनाश्रुत्यनथागिन्यास
पूस्वानन्दादितलक॥ ४॥ यरूवसानां लाकप्रसर्वसाधयत्तु कृष्णत॥ वसायनकुर्व
यथासुखे प्रवाधयं वज्रधवलमापूयारु॥ वागनवागमालाकवं क्रिदग्धुदाह
लादिलकृष्णवसायनं न कुर्वीत मध्यमास्ति॥ तिसादवात्तु॥ वाक्प्रह्लादिनां हानंथागि
नं विधिं वक्रं वसायनविरधारुमं॥ यनविहृतमाकुक्षसाविमोयाहिलकृष्ण॥ साम
चनं॥ ४॥ ४॥ पंचकलापत्रा॥ मध्यमांगति संतुव॥ सामान्यास्त्रीतवहीनवृक्षवृक्ष
कं भायासूगन्धकावका॥ ४॥ तस्यापूष्यं प्रभक्त्या सर्वाहिमनसिद्धिदं॥ शुक्लपत्रं

कपंचदापयत्तः कुरुता सर्वदा प्रेममयं नानाशरीरं भयः ॥ वालोनां भिन्नसिलपंवालयसे
 र्जितं वातवत्तुः सलोमः विवादनवाज्जानललाटकाः ॥ धात्रयस्सुजयातवतिकः ॥ नवच
 नातिथ्यानिष्ठलपयत्तः ॥ भीष्मप्रसूयनिसर्वदृष्ट्यागपूरा मज्जसहपिवत्सुखं हव
 तीरवतिः ॥ नवकभूलप्रकभूलादवनसहपिवत्तुः ॥ भूलंप्रभास्यतिचक्षुः ॥ गपूमसुका
 वतिनिष्कवयतिः ॥ सिंहव्याघ्रमृगवनस्पतिविरुत्तर्जनादिहिः ॥ सर्वग्रहस्पृशपवि
 धपूः ॥ ओषधीवलवज्रिकां ॥ मधुलंकाकुनामचनानावागनिवावरीः ॥ ॐ ह्यहहगवा
 ॥ ॥ ॐ किं प्रीवज्जवावाहिकल्पमहातनुवाज्जपमवलाकर्मप्रसवाः ॥ ओषधीप
 ॥ कथं नचवसायनं ॥ ह्ययीवप्रयागनसाधयः ॥ सलङ्गत्तैः ॥ हकां यथानिमलकुय
 ॥ हाथागंसवस्वमीवसायनं ॥ हवतिसर्वभागत्वेयकयत्तु नूवर्ततः ॥ वसायत्तु सदा

कुरुतः नथागननविस्मासमपूर्विकाः ॥ वसायनं वज्रसत्त्वं ॥ मन्त्रवर्गकाः ॥ कुर्वन्नागगण
 नायकीः ॥ सर्वसत्त्वप्रसजासमार्गप्रदर्शकः ॥ कत्तुतावसदा लाकहवनागमाह
 नथागिन्नामुपजायतः ॥ विनाशयति वागश्च विघ्नायानाशयति च ॥ अपहृन्नापि सर्व
 सायनकुक्षीः ॥ कुनिनेवात्माक्षप्रसासनाः ॥ वसाककायं कवी ॥ महामथागादिभवचः ॥
 ह्यकाकुदाहकः ॥ कदावागनवागं च सव्यमानं नवाधकः ॥ वसायनं च सत्कर्म कृत्वा ॥
 गं ह्यनं यागिनी वज्रधवादिर्कः ॥ नृपुत्रश्चानवद्वत्सत्त्वलाकाद्यसंतवाः ॥ वसाय
 र्जतैः ॥ सामसिलककस्तुत्रीतेषां पीतचन्दनं ॥ पृथक्पृथक् मातृत्वाज्जवामवसवं
 ॥ वृक्षवृक्षविवर्जयत्तुः ॥ कुरुवर्षुसुहृज्जी कुरुपद्मवज्रसंवाः ॥ दानिकास्त्रिध
 ॥ ॥ भुक्तपद्मपद्मार्थायाप्रभासौजवादिकृत् ॥ शायकाः ॥ शुचचुचुष्टुटिकसन्निरा

४१ प्रभक्तानि समितमना हि ४ स्यात्कस्तु विधुतं ॥ हतस्य वनसं ॥ ५ ॥ हते पक्षसंयहं वनं
ऊंच विधुतं ॥ उरुमंभीषं ऊंच सर्पिमध्यमं नलिका तवं ॥ अर्धमं मांसं संयुक्तं वसायन
ना हि स्याद्द्वेषं ॥ निका वली ॥ चतुष्टयं मातृवन्निष्पन्नं प्रपन्नं सवतसदा ॥ चन्दं च न
नत दस्तु समायाचं नभं दद्याच्च निष्पन्नं भाषणासकृत्तया एतन्मया यवद्वितिसर्वदा ॥ वामन
चक्रं पीतं हवितं मलामलविवर्जितं ॥ शुद्धं नूतनं वयं चतुर्दश विवर्जितं ॥ प्रसन्नं निर्मलं
मांसं तथा पातं स्त्रीसंगं च विवर्जितं ॥ धीमा विनीतं ४ स्युः फलं स्वदहं पविपालयं ॥ साधुं क्षिप्रं
धियं वतथा निष्पन्नं विवर्जितं ॥ मनुजपितं ॥ दानं पूजं कृतं कार्यं भिष्यं सकाशका वयं ॥ निव
मान् ॥ स्वदहं साधयत्संम्यक् फलानि च ॥ कृतं पश्चात्स वयं कर्मदं भवर्षा क्षिता वत ॥ व
र्जितं नाना भागविनिर्मुक्तं जीवदा चतुर्दश वक्तं ॥ दस्तु नम नूपाचक्षुः ॥ ॥ हवितं वति वस्तु

दिप्रवर्तनं कामरश्मिस्तुमंदहं वचनी सिद्धिमाप्नुयात् ॥ वृद्धा जीलकका बहु निर्गुणी चा
यच वा वसमचित्ते ॥ सर्वभागा विनिर्मुक्तं ४ निर्विष स्यात्सकानि मान् ॥ गिरुला चन्दनात्पत
यिकपायाश वत्सासं तं कथं न वयं कस्तु वीजिरुलायुक्तं पाषाणमात्रं संस्मितं ॥ यत्पीवत्स
यस्तु स्यात्तसिद्धिनिमित्तं नाश संभय ४ ॥ तीर्थिक प्रनवद्वयं प्रतदमरु प्रसर्वथा ॥ विव
निना ॥ ॥ हतगवान्स्वामि लोकि कचसदा स्मि ॥ ४ ॥ सर्वथा गिनि समायाग ॥ ४ ॥ गगन
गन वज्र वायु स्मल द्रुती ॥ संवर्तु प्रविवर्तु प्रयद्वयता कपा ४ ॥ ४ ॥ धातुं च न द्रुया
धर ॥ ४ ॥ न च प्रतं जनं साय चतं ॥ ४ ॥ च ल ४ ॥ सर्वकालं प्रवलं वाना ४ ॥ संभय ४ ॥ सर्वरुताम
नादा विहस विहया प्रहस्य बाला क ४ ॥ ४ ॥ मस्मात्था गिगर्तं च विहया ४ ॥ कथा गिहि ४ ॥ ४ ॥ अ
थ ४ ॥ वयं धर्माधिकं गपि नावकादि गतिरुथा ॥ ४ ॥ वृद्धा नां वाधिसुत्वा नां स्थानं च वज्रम

ससंग्रहं वनं श्रीनादिहाजनासन्नं पीतचन्दनसंग्रहं भीषजं नलिकाख्यातं मान्द
 र्कं वसायनविभक्तं मंगलं वपुषः परिकृतं चन्द्रं चन्द्रक सर्वलक्षणं व्याधिनिमृग
 राचन्दं च वतिपातव्यं चन्द्रं च वतितायिनि ॥ सूर्यासूर्यं धपातव्यं सूर्यावरुतिभाक्तवि
 विदा ॥ वामनं धैषदानं नपविशुद्धं नकर्मभाजीवनिवृत्तं सर्वशुक्लपङ्कजं भीयथा ॥ नि
 प्रसन्नं निर्मलं स्वच्छं किंचित्कृदिकसन्नितं ॥ शुद्धकृदिकरुवदं विभुवर्धनमूलं मत्स्य
 मं सार्द्धं क्षिप्रं समायुक्तं गृहाकस्पप्रवभयतादवतानाधनं कार्यं अलिवलिसमन्वितां स्वा
 तावयता ॥ निर्वाहस्थानं संप्राप्तिश्च निर्विघ्नकृतं ॥ सखमासनं संप्राप्तं मोनं कृत्वा सुवृद्धि
 सितावते ॥ वर्षद्वयं च संवत् ४८ सिद्धिकात्रसमी सदा ॥ द्वादशसिद्धिं संप्राप्तं वलिपलितं व
 तिवतिवत्सला ॥ पंचवहिवत्सला ॥ निष्पन्नाधकुरुतु यत्सदा ॥ एतं कर्म संपूर्णं मिदं सि

मधुनिर्गुणी चावतुल्यजे ॥ धृक्चन्द्रपञ्चनिर्यासकस्तुनी चन्दनाचिरे ॥ उदावयतियः स्वामि
 लाचन्दनात्पलांचरुं भीरुलयासहकस्तुर्प्यार्यः पिवद्वर्षं संतुवन्निर्जलावृत्तः ॥ चन्द्रमं
 तं यत्पीवत्सतं पीतं सतुवन्निवृत्तावृत्तं ॥ पञ्चासमांशं सव्यं दीर्घायुस्यात्सप्रवान् ॥
 र्सर्वथा ॥ विवृत्तसर्वथागस्यां समासानी विदम्बका ॥ वाचने सर्वविरूपेण द्वाकृतान्
 गजगराष्ट्रवर्त्तितं ॥ अथ यागिनिप्रवृत्तं नृणां कथं ॥ ४८ ॥ साधकः ॥ वज्रवानाहियो
 मंचनद्वयं याभाकायागपूरीकृतं वज्रपुष्पसमाख्यानाश्रुवनिधागिलावर्कं ॥ यागः ॥
 ४८ सर्वरुतामनायागी सर्ववृक्षाप्रवर्त्तितं ॥ हालाहलादिधारनयागिनीभाऊदायकी ॥
 गिति ॥ आत्मा मध्यमयागनसंप्राप्तं च प्रमथ्यता ॥ अलं यं सर्वविरूपेण दपं च प्रक
 थनं च वज्रमधुलं ॥ अभिमार्गयथाध्यामं च वना ॥ अथ यागिनी ॥ तस्मिं काले न वल्का

स्यादगम्यावालयागिनीं गगने सर्वधा नो तस्यागर्तप्रकाशितं प्रह्लापायात्मकं तं श्रुत्वा
निकीर्तंति कुवन्त्ययं जवं साकावतं स्वचरनिवाकावपदस्त्रितं । दयाचेवाद्ययं यानिचि
वागनधर्मसंधनं तथान्वयं यदि तीर्थिकविधौ स ० ० ० धर्ममहानयं । यदि प्रह्लापायात्म
कनाडुडं न धर्मकाडुयदि स्त्रिधागिनीधर्तकं रूपं तावितावृक्षरूपकं । चञ्चलवधूव
मधुलक्ष्मणध्यागिनीरूपसिद्धिसमावृतं । सिद्धिमाप्नोति मृगात्मा ० ० हलाकपवृक्ष
नागर्तकं वल ४॥ ॥ ० ० निधीवज्जवावाहिकल्पमहातकुवाजहययीवप्रकवध
विपक्षवमाहच । ताषडुतगवान्जीस्वसंवयस्पलकृती । बहस्पे सर्वगतालीनवलाप्य
गनयार्गचडुगतिस्वयं । शुक्रादिपतिपथकुवृक्षतस्तनसागवं । प्रथमजायतस्तन
चभूकात्मापक्षपञ्चाडुसम्भवं । सफमसागवं रूपं श्रुत्वा पञ्चकत्रुपिधी । नवमवसायनं

दक्षमार्कलुचचडुदक्षचडुमस्तथा । नारूपंचदक्षचेवषाडुअविन्नामकथास्वसंवय
नऊवानचमस्तुश्रवाधिकाष्टादिवर्जितं । धीकावंचतवनालोहकावंधुदयं नमस्तु । नूव
तु । षाडुभाकावतत्वं चयागिनीपत्रमाकृतं । स्थानास्थानचवकं वप्रविष्टं मध्यमकवं । च
वं । यायमानार्महाचिरं प्राप्यतभाघदर्शनार्कस्वप्राजायतनिस्तु ० ० ० सर्वकालवस्थितं
हवं । जवं चकस्त्रितायागीमार्गमायातिनिश्चितं । प्रह्लातत्वं समागमसूर्याभाप्रयतत्वं
चेवंतवातवं । कवृक्षाभूयतां यागमकृत्वा लाहलाहलं । मधुलचक्रमध्वपचिकपित
सायनासलिकावर्तं । मधुलंस्तनवजाख्यं श्रुतं । कीवसागव ४१ खधुसध्वमस्तनं डु
मावर्तुलाकावसुसमप्रता ४१ नानावलविचित्राक्षीपमवर्धुसमप्रता । श्रुत्वा दधुकादि
कृवाभं कृषासव्यकपालकूलिभध्वजं । तथावादं तथाघर्षं नवमकुववपदं । रुटकाधन

सकं तं प्रवृत्तं द्रव्यं भवति ॥ तगवच्चिरं ब्रह्म वन्द्यं मस्मिन् गिनी भवत्तु लोकसमन्ता
 तद्वयं यानि चिरं विज्ञानसक्तानि मन्त्रमादृष्टिहिं यागीज्ञानं तद्वन्मामलं ॥ यदिदं चान्न
 प्रज्ञापायात्मयागं भूतनात्मब्रह्मात्मकां यदि सर्वमनिष्ठात्मा तावयतु ॥ दं नयं ॥ किं व
 ॥ चञ्चलं वक्षुका वायोऽमात्रं सार्थं प्रसंस्ति तान् सर्वतः तत्पदं ब्रह्म मन्त्रि मार्गं नूनायिना
 लोकप्रवृत्तं ॥ ॥ ह्यारुगवान्नामि वसायनकवस्थितं सर्वविज्ञानयागमात्मा भूत
 प्रीवप्रकवत्तवसायनानामभ्रह्मविभक्तिपटलम् ॥ ॥ अथवावाही प्रजां कृत्वा प्र
 ज्ञानं नवताम्यद्वयं विधिं ॥ कथं तं द्रव्यं न्यायं ब्रह्म स्मृत्तान्मूलं श्रीहनुकी प्रथा
 भजायतस्तनं दिनीयगजवृषिनां ॥ तृतीयं वालगं दीवं चतुर्थं लङ्कवृषिनां पंचमं प
 नवमं वसायनं च दशमं सहजवृषिनां ॥ एकादशं भिववृषिनां द्वादशं चक्रवृषिनां ॥ तथा

तथा स्वसंवेद्यविज्ञानीया गृहा उभाकात्रलं ॥ श्रीहनुकी प्रथा एतच्चतुर्ध्वं प्रसाधयत् ॥
 यं तस्य गुरुका वं कृच्छ्रं चक्रं प्रकीका वं कुकापालकं चतुर्विंशका वं सखसंवेद्यलुका वं य
 तद्वमकवं ॥ चतुश्चक्रदलंगत्वा वसायनानां पदं सर्वकलं सर्वयागिनी विज्ञानीया अस्त
 तल्लवस्थितं ॥ सुसूत्रं नरदादृष्टिनिर्वाही तागवत्तु ॥ कुर्यात्प्रकृतने वात्स्यं क्लीर्थं प्रसं
 त्तप्रयत्नत्वं ॥ वसायनसंततयायागी कुरुपं कुरुयादृभी ॥ धाउभा नां कुकलानां सुव्य
 धप्रचिकपित्वा श्रीहनुकीं ॥ सर्वलक्षसंयुक्तं वसायनं कुजायतं ॥ अथ गुरुध्वं कुरु
 धमस्तनं कुञ्जीवा दसागवं ॥ तता सन्नासुनां देवी कनका कामवृषिनी ॥ उदिता कर्कस
 द्वादशकुजा दिव्यामंका वाहवसन्निता ॥ नानावसध्वी देवी देलाव्यं वसध्वनी ॥ द्वा
 तारुं टकाधनृपाभी चखवाङ्गी सकमधुलं ॥ भूलमूर्ध्ववी धाचगधयानि चोक्तवकवम् ॥

٥٤

वापिपच्यत न न यो न वं । कृष्ण चथा गिनी सर्वयायात्मान न कं वृजत । व्याधिभाकं तय न य
 तु वृषं न रु सिद्धि साधन निरूलं । एतच्च वृजय त्म की पूर्व वृज न तापितं । प्राभय दिधि
 सर्वसाधन तं कमु हाग हाग रु न क ल्य य न । तं न म त्वा द कं प्रापं सिद्धि वा क्ता च क ल्य
 तं नू ल न प्र दं । इव जामूल जा चैव र ग म डी पि हं च म धू जा । वृजा जा च वृ जा श्वे व य र ग
 वि धा नं च क म ज षा वि धा न तं । नाना द भ वि धा य न म य सं ह्य प्र व र्त्त तं । ती रू ति क का
 त् । पूर्णं गुग्गु बू ध पंच व लिं द या च्च श्रा ह न त् । कूर्या च्च वि धि सं पू र्णं जा य तं च व ल वा न्
 आ स व म दाम य ४ । अ र ग क र्ष म क रु व स को म ल का नि च । प्र ह्म म क रु नी न स्प ति व
 मि दं प्रा कं पार्थि वं न व विल स्ति ति धा । श्रा त ल का भ व ४ स व य धा त कि पूर्णं चू न पूर्णं च
 ग नि पा दां ल न प्र क ल्य य न् । धा रिं भं स लि ल स्या पि गु रु स्या ह्ये प नं ह व त् । जा य त म

दिवास्त्रे वज्रिदिदिवसविद्यतापुत्रकीमविचंसवीमंजिह्वागकंभलीदाडिमंचतथावा
 मगन्धं चक्रायनस्वरुणीतलीभाभकनासहसंथागीशालाशंकजवृद्धिमान्स्वरगलान
 भाभिगुह्यमाहवातायंशमलनसमन्वितंश्रद्धाईनप्रदातवंवक्रासूनुविचक्रुह
 पूर्वपुत्रकायवृद्धवातांशनसर्वातिवधयार्थेनथाजयताधन्यमध्यगतस्काप्यन
 हांजनंचक्रगंचक्रमसिद्धिंचक्रुहोद्विविधैकुहिननातिष्ठजातिरुलसमन्वितंभा
 समन्वितंभित्तिदियायावधप्रकुसुतावाचनकठपूतठ॥पचार्यगन्धपूष्यस्यभत
 श्रावकंषांचक्रत्वादभानूगहवत॥उतदाभवतंदंचतयतशक्रुहपथन
 मन्त्रिदंभाम्यासैतवामयंनकाश्चित्समेयाहवत॥आत्मयूगधवसैकाश्चिदुबुद्ध
 नेवप्रयागनास्पसंरुवं॥वान्नीचसमाख्यातंनर्हययातवायूनां०००ध्वनीवाधि

त्॥कीडिस्त्रयथागिंन्यासिद्धिमायानूगमिनी॥तत्त्वतावाकुदवींवेमयपानकुकाव
 कावंचक्रावध॥कावाक्रुयथागंचकीकावाचदवर्को॥हकावादिवलायमुवका
 सर्वविह्वयाथागमूरुमंगतिवपसमाधिसुपमनृत्पुध्वनस्वयंरहन्कीसंववीश्वे
 नसमाख्यातंनर्हयंविह्वनकं॥ध्वयंकुसंरुतंसर्वदहवर्कुरुजातासर्वरुदा
 काभभक्तवृषलजायतपनमाहुत॥यागिनीचक्रमध्वसूजन्पिनीकिडितं
 हावत॥सर्वथागिनीवसयाकिसाधनवाधिमूलकं॥मानरंगंरताकृतानृत्मान
 किथागिनांरुवध्वय॥सिद्धिलज्जास्वचिह्ननविकल्पनेवकावयन्॥अन्यथाहव
 तं॥रुवासनापनिष्ठासूत्रपंपभक्तदृष्टी॥०००॥हगवान्द्वीनृत्मानसुथा
 कवावाहिकल्पमहातकुवाऊवान्नीनिर्दभपमनृत्पुध्वनप्रकवर्तनामउतकि

महाविमंचकथावाचंलवंगमागधाविनंगुभकवलैचैवसफैचादकापयत्तुअभवशी
मानुस्त्वगलानलदंचकैकमालेवधर्षिकैच।सफमादिस्वतडाहिठतत्वसेयासदाकर्म
गसूत्रविचक्र॥४॥याचयत्तमधसंपकुततावधेषदापयत्तु।जिरुलाकूंक्रमनालि॥४॥
मध्यगतकापाचकुदिनंविभषत॥४॥याचयित्वाकुमधवीत्वा॥४॥वैचमंगरुवत्तु॥४॥
हलसमन्त्रितं।मगमदंसर्मचैवमदिवाचसमंतवत्तु।पयार्धधातकीपूर्वजामनेध
गन्धपूर्यस्य॥४॥मिथुंकावयत्तु।अननेवकुया।एनेमासमासुनकुयाकुयत्तु।नाना
गारुकापयत्तु।मयपानविनापूर्वहामंचैवघृतंविना।सुजुर्वचविनाधर्मविनाधर्मि
सैकश्चिदुबुद्धनलत्तु।अथवात्रभिपानंचदवतामतितापयत्तु।पमन्तुसुध्व
॥४॥ध्वनीवाधिवजननेपांचलंतवस्थिता॥४॥तत्रयकुत्तसंवयंपिवेनिकत्रक्षमखा

मयपानकुकावयत्तु।सवितापमन्तुसुध्वनीयथाविधिषलक्र॥४॥हंकावापवपूर्वगळुपम
देवलायसुवकावात्मनहकुं।धिकावंतवनिर्वीषयागंतस्यकावयत्तु।हाकावंतहाषया
बुकीसंववी।अथैववज्जवावाहिनायकी॥४॥पमन्तुसुध्वनंतपिविरूयासर्वथागिनी।पमन्तु
उ।जातासर्वतदाबुद्धाजिदुवनंचनरुंकं।नृत्तमानमहाविध्वनिमिरुंतलक्रयलुतध्व
नृपिनीकिडितं।वधकर्मसदाध्वानन्दंरुतुतिच।यस्ययस्यकुकर्मातिरुत्तस्येव
गुरुत्वानृत्तमानाकुपमध्वक।सर्वपापप्रभाम्यकुगगायुषंनिवर्तुतु।कामनासर्वसिद्ध
गत्तु।अन्यथाहवथागनचिरुंसर्वप्रवर्तुतु।तीर्थिकानांमनहंसंभानवावताम्य
नृत्तमानसुथागत॥४॥सर्वमयसमायागहृद्धध्वसदास्ति॥४॥ ॥४॥निधीव
वर्तनामउतत्रिंभक्ति॥४॥पटल॥४॥ ॥अथातिहविधिवध्वरुयासर्वमक्रिया

वानाकादिप्रयाणनसाधयकु वज्रयं वाधिविलं स्त्रितं यत्तु नृपनिवी र्ज्ञतः। चिरच
 गयदेवात्पन्नवला श्रुतिर्मिकाललयंगताः। साहिसचद्रुषा सांहिजायतस्तनचद्रुषा
 पथरु। क्रिकामानंदनृकाकार्यादिव्यवसुप्रयागतः॥ क्रिकाविज्ञानसमाधिस्तुत्यं नृनि
 यतुत्तथागवान्॥ अहर्निभीसमंकुत्वानात्रीषष्टत्वमवच। षष्ठीपत्रकुहामाधियटिकाकु
 नभलाकाद्यादभंगुला। क्रुत्यवमूरुर्लचकाष्टरुमनामपाः॥ श्रुताकुचविरुया
 गित्यादिंकालाकालनिवायत्तु। मधुलाकविंकुत्वायागिनीलक्रुजापतः॥ विश्वत्रूपमिदं
 मंकवागितुष्टमुपयमायावियमतिकं। सर्वाङ्गीकुविद्रुयाधर्मादयाकयस्त्रितां। हामय
 वध्रुहातिनाथवंवीजं वज्रवाहाहियागवान्। पंचवीजानिहामाधिश्रुतिस्तनामपंचमं
 विसाधकः। पूर्वाकविधानतस्तमकर्मसमायेहृत्। महामानसकुकीयत्तलाद्यसाधनाम

या
 मालमांसनदयोस्वमाकृतिं। मध्वकी वंसमालाशुलक्रमककुहामथरु। लहंतनगव
 कनास्मेप्रकालनउपकभाचिंतं। तथाकारुविष्णुमककभसुनस्मेदद्विधुतिमूवं। क
 महानिः। साधनामसमायागंधमृचत्रयावनादिकः॥ ससेनवलवाकस्पमन्यथामपिक
 केलविप्रुतः॥ पिभाचस्पानिप्रकाल्पव्यायव्यादिभिः कम्पवाः॥ उच्चाटयनसंदहः॥ सप
 संमिश्रंकाकलचग्रहानिच। धूरुनास्मेप्रकाल्पपूशहाष्टभतारुवं॥ विधिष्टसर्वलाक
 व्यांसाईदिग्गससाध्ममालंयचाम्बवं। ललिताकृयपी० स्कापाभं। प्रयागतः॥ जंका
 मानयत्तु। नृकस्वकुवालंवा निवर्त्तं। चायसातनं। लवसाध्म। नीनंवाकनवीनं। हामय
 तस्ववर्त्तनलवयत्साध्वपकं। वधुनाकृयसाध्मपिमर्तुं। जस्काइहातिच। नृकेकपूष्यसे
 वध्मामिचकचन्दनकाष्टकं। प्रमानंकृतिंकुत्वाचसवकवाचनतच। नामाहिसाधल

७८

लहतनगवस्थं जायतन्महाभयं विष्णोः भक्तुते लनमान्पास्ति रुहामयत् ॥ क० ४
 ॥ महिमुखं ॥ क० प्रविशामर्तुमिच्छा क्रमोऽकर्मिणा ॥ ४ ॥ हामयदकचिरं नवभवाग्नि
 ॥ मन्यथा मपिका कथा ॥ उच्चारतं तथा वक्ष्ये ॥ भक्तुं वदपि तं ॥ काकपद्मवत् ॥ निर्यात्
 ॥ न संदह ॥ सफना ॥ कर्मलि ॥ विद्वत्कर्ममार्गं ॥ निम्बपत्रं ॥ मरुविन् ॥ सप्यकंचक
 ॥ धिष्ट सर्वलाकर ॥ न्यकं वन्धुसहजं ॥ अथाकर्षं वक्ष्ये ॥ त्वातिन्ध्रसंमप्रहं ॥ वाय
 ॥ गत ॥ ॥ जंकात्रं वर्जयन् ॥ विद्वत्साधुदाम्बज ॥ ॥ यापितामलकं विद्वत्साधुवस
 ॥ नवीनं हामयलुत् ॥ साधनामसमूचा ॥ र्यत्र विद्वत्साधुवकाष्ठमवच ॥ ॥ र्जगत्तान्
 ॥ न केकपूषसं गृह्णन् ॥ साधपिविहं ॥ सफदिनं हामयन् ॥ नसितं तथा ॥ अथान्यकं
 ॥ माहि साधुत्वं च रुदयस्थायलुत् ॥ अर्धनाशयमिप्सितं नदाकर्षयदि तत ॥ ॥ शिकु

五

पर्यस्मिंकालवसंतवर्गभायंचदवताविंश्याभारतस्यमकुमर्लिकात्रकात।रुगलिकामरुवलावा
 कुयामन्नासर्वसंप्रहिकात्रकात।विनातकुहानभूपनानिमांप्रतिष्ठितां४।सैसावीयंतव
 यागिनीवतिमात्रुंनदाहणप्रकात्रयगुमकासांचयथाचापिसचिउसपूलपथगुपं
 मिभुलेस्सहस्रमकादयाधर्मादयाकुत्रसमानिच।विहात्रकस्थानभूमकुजल्पाकनीति
 रुवादिकंस्मृता४।भुक्तमकस्मिमकुर्थसंकताक्रुवमकुका।समयंचतगवान्कयाप्रति
 रूपदप्रयागिनीनान्यकंविउ४।हवयप्रपंचपंचरक्ता।क्रियादिनिनिब्रुवं।विउहा
 क।सदाप्रभाक्रुयागिन्यामकाद्यप्रतिष्ठितां।कर्मकिंमद्ययकुत्वाकिनुतकुसवदिकां
 भस्यत।भ्रन्यंचेवप्रकर्तुवीरुपयाकुपयासर्वतकुका।विभुक्तिंसर्वज्ञानस्यमभुलस्यादिद
 सैवाधिधाउ४।सफदभमनाख्याता४हवनिर्वाधपाशका४।सर्वाववनहवप्रविभु

वात्रजाश्रुशुकस्यसूचकं॥मधुलशुद्धिस्वर्चधर्मसंग्रहसूचकं॥वादधर्मविशुद्धात्माद
 विजानीयारुज्जलमयाहर्वसर्वरूक्षानकंसर्वमाशुद्धिप्रतिधानं॥वस्तुसंगतज्ञानं
 माथापमजगत्सर्वमशुलचक्रप्रयामया॥उक्तंस्वसंविदज्ञानंयज्यज्ञातिक्षानवी॥ज्ञायं
 त्वावं॥तस्मिंकालकुयाशुद्धिंवृक्षारुमराचवे॥श्रुक्वयागीनिमकुंचउरुवक्तिसूख
 ॥४॥माशुद्धि॥सर्वतावकं॥००॥द्वियविषयालीकंसमवसेसर्वथागिनी॥धर्मकायकंशुद्धि
 मत्पादिपूनस्तुचक्रुद्धिदिलिप्यत॥कवचंमकुंभंशुद्धिशुद्धियासर्वथागिनां॥वलि
 तिलकं॥नानाधारगप्रयाशुद्धियाशुद्धि॥प्रवमार्थकान्॥चर्ममान्सास्थिसूक्ष्मिस्वाधुस
 र्गप्रयायीतुस्तवावत॥प्रवमाहिरुथागनसर्ववक्रम्यत्वं॥शुद्धिपुत्रमाहूया
 ल्पवावाहितकुति॥नानास्थिचक्रुद्धि॥वाधिमार्गस्थिकायचक्रुद्धि॥कलावका॥त

काथाप

८०

कथंनपून॥००॥ग्राहगवान्स्वामीवज्जवानाहिकल्पका॥सर्वथागिनिसमायागवज्ज
 तामविशुद्धिप्रतिष्ठातृसनाम॥४॥शुद्धिभक्तिपठन॥॥श्रुथकथंनलक्ष्मण
 वृषाशुद्धिवावामाहुकामिनी॥कर्मज्ञाताविनीभकादाषाविष्टाचमातना॥समान्याह
 गेन्यादिमयंकर्मतावनाप्यनूतावना॥ललनाचलसनाचश्रवधनी॥रुखवदला॥प्रवला
 गृहा॥चलिकामावदाविकाचतुसूर्याग्निवाहका॥षड्विंशतिथागिन्या॥उर्ककस्यकुदा
 प्यंगुलदर्भयत्न॥श्रुधर्म्मसमानकालकुश्रुगुष्टदर्भयत्न॥सर्वप्राकुथागिनां
 कस्यप्रदर्भयत्नंवास्तवसु॥श्रुनामिकादर्भयथाहुतदातस्यप्रदर्भिनी॥चतुसूर्य
 त्ना॥वज्रपत्रप्रथागनउर्ध्वमृत्पितृभूतं॥ललाटदर्भयथासुयदिसंतस्यप्रदर्भयत्न
 प्रदर्भयत्न॥स्वसंवयसूखंतगुवंधनमूडयायुतं॥चक्रंदर्भयथासुमदिनी॥कस्यप्रद

भयताप्रतापनंप्रभतकुदिवं प्रियमृकात्रभातु उदयं ता उयया जनाहितस्पदभयं
प्रदभयं त्रभयताकवृत्तसंमकनीलीयागचपभतग। रुकुटिंदभयथा रुसीमकं
मुसमृदंतस्पदभयं त्रभयता। उकरुमीप्रयागनसर्वरुमिप्रभसतभजानंदभयथा सुपादं
यथा रुपीदीनस्पदभयं त्रभयता। सखंतागभमकं जाता ४ या वदाहवसं प्रवठवाहं दभं
। उवचदभयथा सुगुं तस्पदभयं त्रभयता। कादलुकात्रकाभीमधुचलीनकं। उ
ववस्तिता। उअंदभयथा उचिबुक्तस्पदभयं त्रभयता। अवाच्यसर्वधर्मत्वविस्मृति सर्वमिति
नरूपकं। भित्तिंदभयथा सुपादां उचं प्रदभयं त्रभयता। मतिस्सुहृदस्पवत्प्राधदभतमध्यमावि
यथा। सूर्येदभयथा रुद्राकाभीनस्पदभयं त्रभयता। रुदेयाहृतं सर्वलाकं ह्ययं पत्रमाकृता
मिवाच्यनागगुं दभयं या रुकपालं तस्पदभयं त्रभयता। सर्वसन्धिषयागीनां प्रहावाकाभयो

आरुवं समुद्रा। कमधुलंदभयथा सुपर्वतकस्पदभयं त्रभयता। धवन्नामृकधवा सुपर्वता
रुपाप्यनधु। भिरगचवातु। वमुंदभयथा सुवांगकस्पदभयं त्रभयता। सर्वधर्मास्वता वप्रनेवासं
नवासनाविवविप्रवाजि फालालयथा सुहं रुहस्पदभयं त्रभयता। रुसि सर्वसुखाना रु प्रा
धवायनां रुकायसूर्यकिंतं। नितम्बंदभयथा सुकं तस्पदभयं त्रभयता। अकनालय
नजानातिववावाहं अहंपत्रस्वकायवातु। हासंचदभयथा सुकन्दनेतस्पदभयं त्रभयता
दभयं त्रभयता। उववनंसर्वमायापभतं रुहस्पता वतठ। कंकालदभयथा रुस्रवकस्पदभ
रुयागिनो मृदासुथपवा। अतिरगवती वावं विरूया चवकुचकभापचभुदलपत्यं
मंच विरूया यावददयगचवं। अकिमी जालमविलंसहजा रुवमीलिनं। वजाक
उरुस्वता वमविलंस अदिपादमिप्यता। मृदासंकतका सर्वायागिन्या त्यहिल रुधै। म

तस्य प्रदर्शयत् ॥ धर्मक्षेत्रं पंचरात्रं विष्णुं नमस्कृतं ॥ आकाशं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ तस्य
 आकाशं दधत् ॥ तस्य प्रदर्शयत् ॥ श्री ३ तं तस्य थागिन्या ॥ नूतन वस्त्राय न स्वयं ॥ नदी न्दधत् ॥ अथ
 दधत् ॥ तस्य प्रदर्शयत् ॥ सृगतिं गतिकालं ॥ ०० ॥ त्रिचं वस्तु तद्गुणं ॥ सनं संदर्भ
 वठ ॥ वाहं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ तस्य प्रदर्शयत् ॥ कलिना दधत् ॥ वस्त्रं पंचामृतं पूजापथं
 चलीनकं ॥ जिघांसं दधत् ॥ दातुं तालं संदर्भं ॥ तन्मा ॥ चक्षुली सर्वनाडी प्रमिलित्वा ॥
 स्मृति सर्वमिन्द्रियं ॥ अक्षुत्पातं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ नखकस्य प्रदर्शयत् ॥ कटिलं सर्ववर्गं च ॥ ०० ॥ दधत् ॥
 धर्ममध्यमा विलं ॥ कक्षं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ गीवाकस्य प्रदर्शयत् ॥ अपेक्षं सर्वं पञ्चकुसुमं ॥ लामृतं
 पित्रमाहुवातु ॥ मदिनीं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ तलं प्रदर्शयत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥
 अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥

धर्मक्षेत्रं पंचरात्रं विष्णुं नमस्कृतं ॥ आकाशं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ तस्य
 आकाशं दधत् ॥ तस्य प्रदर्शयत् ॥ श्री ३ तं तस्य थागिन्या ॥ नूतन वस्त्राय न स्वयं ॥ नदी न्दधत् ॥ अथ
 दधत् ॥ तस्य प्रदर्शयत् ॥ सृगतिं गतिकालं ॥ ०० ॥ त्रिचं वस्तु तद्गुणं ॥ सनं संदर्भ
 वठ ॥ वाहं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ तस्य प्रदर्शयत् ॥ कलिना दधत् ॥ वस्त्रं पंचामृतं पूजापथं
 चलीनकं ॥ जिघांसं दधत् ॥ दातुं तालं संदर्भं ॥ तन्मा ॥ चक्षुली सर्वनाडी प्रमिलित्वा ॥
 स्मृति सर्वमिन्द्रियं ॥ अक्षुत्पातं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ नखकस्य प्रदर्शयत् ॥ कटिलं सर्ववर्गं च ॥ ०० ॥ दधत् ॥
 धर्ममध्यमा विलं ॥ कक्षं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ गीवाकस्य प्रदर्शयत् ॥ अपेक्षं सर्वं पञ्चकुसुमं ॥ लामृतं
 पित्रमाहुवातु ॥ मदिनीं दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ तलं प्रदर्शयत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥
 अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥ अथ दधत् ॥

52

गङ्गायाः लम्पूवन्धवाः माहृष्यपरागणं वेवागं मानउत्पकं॥००॥ कान्तिकायसुमा
चसहमन्त्रसापवां॥००॥ श्रयंथागिनीदद्यानर्थापदिभृष्टिका॥ नसेवप्रतिमूजाउथा
मरुमूददवानांचसूर्यकं॥ मणिमूकिप्रवालरुफकांचनजालकां॥ कालाख्यशुक्रकर्पास
लक्ष्मीपूष्पिमुवधकं॥ मावः॥ च्चाटनालांच००॥ कृष्णदृष्टिमच्यतगायथक्रमपूदात
प्रगमं प्राप्तेवामवाहनताम्यवां॥ स्वलावंतपूर्विरूपापदिभृष्टिरुवाहकां॥ चक्रुषायादृ
भृष्टकुर्यात्सहादृष्टिवत्तथायास्वतदका॥ एवंकासफकिरूपाप्राप्यतसर्वसंपदां॥ वाना
नीं॥ वीर्यमधिपादाश्चैववावाक्काथागिनीसदा॥ थागिनीसर्वविकल्पतकृष्णक्रीवदृष्टि
मूडजाकिनीं॥ सैवलिपवमार्थंचश्रुक्तिमिकास्वक्रुवद्यमवाहिसर्वथागपभस्यत
प्रदिमानयं॥ थागिनीमूपाययकंसफजिभक्तियात्मकं॥ तयाक्षमाहिधननसर्ववाधि

सुत्रपकं गमना कुरु प्रचासना संचात्रयागयागिकीं वरुं प्रपंयथा तस्य वा नाकायागिनी
द्वारुस्वाहा ॥ अं च अक्षी यरुं रुं रुं द्वाहा ॥ प्रधुगिनी चपी ॥ १० प्रप्रच अ सर्वयागिनी ॥ प्र
विकृतां ॥ उके कस्य च कुर्वि ॥ अपी ॥ अपपी ॥ कं पू न ॥ अ न जा प म कुं ॥ अ न वा रु व व र्जि क
वजाम न संत वा ॥ श्रियान प्र महा न कु वि वृ लि सं वृ लि का व की ॥ रु द य च क ह त व्या च इ
ह र ग वा न च जी व ज दा की त था ग न ॥ सर्वयागिनी समायाग ॥ वरु सत्व ॥ प वं सर व ॥
धि क र्ति ॥ ति ॥ प ॥ ॥ अथ अत ॥ सै प्र व क्ता मिश्र मा कुरु यथा विधि ॥ इत्यावे
का व ॥ कि पिठ क ठी कुरु नू क र्प वं सि म न कं स्व यं ॥ क रु लि का चा स र्म वा वं क कं ल
वं ग म रु द ह न वि मू स ना म ॥ उ वं या गि नी नां त था ज वा न प्र क म का ॥ उ च्चा न य नि स
अथ वा उ म वं मि यामे ध नं ॥ कुरु न कं मा सं जं व रं कुं सु जं ग र्थं च लिं ग प मं म ला प क र

म न कृ ग व स्वा नं ह स्ति अर्धे न वं ॥ वि द्मू र्धं अ कं व कं म कं ॥ उ वं च प्र ति क्ता म का ह त व
य क नि र्मा र्थे स त्वा ला न र्थे ॥ वा धि चि रु ड व धा ॥ उ ॥ प र्ति ॥ अ सं व य पा पि च ॥ पि थो व क या व
॥ स्व रा वं क म क रू या प्प र द ॥ अ र्थ वा न च कां ॥ उ के क स्या रु व द वी प्र ता व रु न व पि की
स र्व स र्वा ल यी ॥ प्र कृ त म र्म म र्म प्र क पा न रु क मा द यी ॥ ता व ना पि वि क ल्या त्मा ह
द ह न था ग ॥ त्मा प्र ता व म् क र वं वि ॥ मी मा न् स म धि पा दा उ ॥ उ डि यां न ग वं त था ॥ म
म ध ग ॥ ॥ प्र कृ पा या त्म का ॥ अ व स फ र्ति ॥ अ ति द व ता ॥ अं कं वि का द ल प्र मा रु ल
व नी य रू र रु द्वा हा ॥ व र्धु प्र पं उ प्र र्व या ग सि धि स्व यं प्र ता ॥ अं काल मा य ह ता त्मा
का व कं प्र पं श्रा पा दा न प्र म रु कां ॥ ना द मा ज मि तं स र्व स्व यं उ ध र्म स गि ति कां ॥ उ वं च रु
स च्चा ॥ अ धि पा दा वि ह न र्थे ला क म र्ध च रु व च ॥ स र्व उ म च कं च दी य त मा कुरु ह न ना ॥ न

८३

[illegible]

स्वहावनां तावनाहवद्रुपंचश्रुतावंहवद्रुपती॥ स्वसंवयमयंकर्महावनाप्यनूहावनाम
चनं जायतं श्रुताकालं सर्वरुद्रानकन्यया॥ सर्वतत्त्वस्वतावंचसमं लघुइतंगम॥ ह
विचानगचवधनिर्विवाद॥ भाकनिश्चिन्नु॥ श्रुतं वादिरुद्रतत्त्वत॥ श्रुवाच्यालरुद्रासवं
मूडासुखादयं यशुगद्यवस्ति तं नाघटितं मया कश्चिद् ध्यास्तेन समपस्ति त॥ प्रति
गमयनानन्दा॥ कीर्तुप्रवचनमासंपूर्णमूडातत्त्वस्वतनय॥ स्तुलनानाकावेध उपचिह्न
मिच्छुक्तं सर्वकावेकसंवयं॥ मधुलं सर्वसंदृष्टि॥ मूडाकालविलकृता॥ यागिनायागि
॥ निवातासामनाकाभमभमननायकं॥ सर्वतावस्वतावत्तात्सर्वतावसदास्थितं॥ स्व
त्यसौ॥ तथाचितयाचिह्नं चकविष्णुचवाधक॥ तावातावतावविचकताविचहितं स्वय
वविभालिनिर्मदतयादर्शरुलं मधुल॥ पायसर्वसुखालय॥ सहजानन्दचतुर्थाव्यया

लं उवमयं॥ धर्मसंतां निर्मानं महासुखमिति क्रम॥ महासुखस्वतावनसर्मचक्रचतु
वनिवृत्तालय॥ श्रुतुसुसमताज्ञानवांवीर्यमूका॥ उद्रुजनमथरुकावीचकवृद्ध
सादं॥ ततात्रपादिर्हिचं गेधकुसंविदांसयागीनामविद्धिन्मानन्दपिताहावलि॥ या
वरुलं यत॥ साधनान्नाययागमाश्रालिकालिपूर्वाहवा॥ धर्मकर्मसमायातमहाम्
यामूडाभादिपादरुथा॥ आकाभचक्रमाख्यातं दिव्ययागिनिमीलकं॥ आधिपतिमहाम्
विलकृत्तुवमतसर्वयागिनीं॥ वयंसवस्वतीयातिमध्वगंगमदुवाहिनी॥ धवर्षादकथा
रुंचनीयतयकुमुतयनिष्ठावगहय॥ ज्ञानगर्तकं मादु॥ सर्वद्रवसचावयत॥ मधुल
वर्धुसंस्तुनपूर्वचतैव॥ कालनाडिकं॥ वीववीव॥ मकुलपापतदिव्यकायजो॥ भिन्न
संकं॥ कलरुदयवाहूचककं॥ ननुपाध्वकं॥ नाहिमदुगुठलिं॥ उद्रुजानुर्जं॥ पपादकं॥

50

नसर्मचक्रचक्रुष्टयं निःसंगविचित्रागी सर्वतावप्रसर्वदा निलयः पंकमध्वपिसंसा
वीक्ष्यतवृद्धुलं अविगतजिनधर्मः सासनप्रपसन्नः सः हतवतिपातंतस्यकुर्याप
माहावलिः यावकावाधिसंतावः तावकावनिर्मलाः प्रह्लापायात्मकायागी अत्रुल
मायातमहामूडास्वतावकं चक्रुर्मूडातिक्ष्णत्वाच्चक्रुः नाक्रुवकल्पनां पी० संवृद्धविह
धिपतिमहामूडानामासप्रकासचः अद्याकनासयात्वासंप्रवर्धस्थितस्थानकं मध्वलक्र
ववर्धदकथागनप्राप्तापाधकधवयन् वानं विह्वलनकं ह्यत्वलक्रुर्धेतं जयत्सचचि
वयत्तमधुलचक्रमध्वप्रतावयदिमां पूनः प्रह्लापायास्वतावक्रुर्मूडाक्रुवप्रउहवा
कायजोऽभिनिहितवाः ललाटंचवामदक्षिणकर्णयोऽपृष्ठवंसंवाहूधचनाभाजनयश्चा
नृजं प्रपादकं अङ्गुलिवंगुलगर्भपादतवक्रुसर्वथाः अङ्गुपातिहस्तचर्मकर्मधिल

लाटपार्थकं। सीमाउदयकं। सयंथागिन्नादीयनसदा। प्रतिमूजायागिनः। स्यादुदीयनकुय
लाधूपागन्धनेविद्यकाः। रुलाङ्गनापाशापाशाङ्गदीपाकलषका। वरुंदर्यभङ्गं च वि
हाचं च किंकिरीजालकंपूनः। सिंहसनमकूटं च वलं नानाविधं तथा। एगजवर्थापपी
वीथिसहजहावायां प्रहिंभतावकात्मकां। स्वधधुप्रविप्रयमिदियकर्मकर्मिकां। विष
मुषु। अजिदिनप्रथाएगप्रपुस्त्यायात्मकप्रचरा। सहजयागिन्यसुप्रपुहिंभतदहिन्नतां
ववस्तिताः। एगचयनवृद्धप्रसववद्ययागिनीसुखी। धर्यमानं महाचैव दधभाकर्ग
नाच्यति। तिश्चगम्यत। एवं एगजवलीहस्ताभुद्धियप्रवजकी। वीनविनधवीतावनन
कल्पमूडामुसहजवीर्यनामनां। वरुंसंखनपूर्वप्रख्याच्चसर्वथागिनी। वीर्यसंकम
लजिह्वाकुविहयाधुसकापूर्वदर्भिकां। प्रतिक्षमानचांन्यासिप्रतिजिह्वाद्ययदियं।

विषयि। यद्विषयिजनामूठाश्रविद्याइहचतसाध। प्राप्तागिनसंवृद्धत्वं नवकपचरुध्वं।
संतवत्सूनां। लक्ष्मिनप्रसदाहत्वाश्रयनागधवर्धनां। वायचक्रप्रथागिन्नावलवान्दीय
वावाकासर्वगधगतः। सर्वथागिनीसमाथागः वज्रसत्त्वसूखालयः॥ ॥००॥ ति
नियमनामघादिंभतिः॥ पटलः॥ ॥ प्रकाभयकुलगवांचिजिह्वाकुकाधमका। का
रुसौ। वक्रलत्वाकुपस्पपंचतागतुमासनं। जितिः॥ वल्लि। तश्चगस्यवदनासममान्तिकेः।
चक्रः॥ वदनाहितिर्तागस्यल्ललार्कमूधवनासिकेः। जामकामूखउर्ध्वस्यद्विहिवहुलिच
कधमूलतागकी। रुदिस्नानं पिनाहस्पकादधतिः सर्वतः। सुनमकचक्रं तस्यसुनास्याम
स्यउर्ध्वघासमचिकं चकुलां गुलसंरुकायां पादाकाकतरथवच। दधभाकालकाकस्य
ककालस्यवाहूदोसंयमनकु। वज्रजितिर्मंगुल्यसोमपदवंकुधमयां। चकुलंगवभाषकु

सादुदीयतुयथाक्रमं। वंभावीलीकंसागीतामरुन्दामरुजादिका। मालालाभानृत्यक
 दर्पभक्तुंचविमानं चामवाकथा। पताकाभवदामंचधजाश्रगन्धकूटकांभकिहावाई
 । एगजवर्थापपी० स्थभुद्धियस्वतावका०। वीववित्रधवीथाएगनसर्वमूडाप्रकथतरा।
 र्मकर्मिकी। विषयभवं तथाकृषघदंसर्वयथाक्रमात्ततपूगनर्गनंरूनंसहजंनान्यव
 हुंभतदहिन्नतांमहासमयमलाम्पपमगर्तपूतंविदने। तजात्यनास्वयंमूडादरभदरभ
 वेवघादभाकर्गनंनृभां। वजवायप्रविष्टस्यतयद्रुत्रयोगजं। यागिनीचनसौख्यस्यना
 नभवीतावनचक्रमधुनायकीं। सफरिंभात्मकयागींमनुयूकस्वनामकीं। नानावि
 तींवीर्यसंक्रमतयस्मादहिधनसमूहवां। गभ्रुंथागयूकनक्रियतनाउसंभय०। च
 काद्ययदियं। नानागभ्रुतकुषनवर्तुतंमयानव०। ॐ दंतंउप्रथागकुनरुमानत

कपचरुध्वं। तस्मान्प्रसन्नचिलात्मासुविद्याकृत्सादवां। प्राप्तातिवृद्धत्वमविचालनमस्तु
 न्यावलवाचीर्यमस्तकां। लीयतपूमहाचिरुवजवाय० प्रहदकां। ॐ ग्राहलगवान्स्वामी
 ॥ ॐ निधीवजवावाहिकल्पमहातकुवाजमहानासालकृतकमत्तलकृषविधि
 कक्षमका। काथाकृमाचिरुधु० कथन०। साधकी। चिद्विगंदववृपस्यश्रकानदवल
 सममान्तिके०। मूवेघादभतागकुचउत्रुवयीवच। भिवावावादिगस्येवकर्तुधोसुवि
 दितिवहुंलिचइके०। चउलंगुलच्छिन्नस्यतस्यप्रससितायदि। यीवामधुमिधुमस्यका
 तस्यस्तनास्यामूवकानक०। हस्तकानकदितीयाकुपाशोस्यनिचाइवे०। चउत्रुलयूक्त
 । कालकानकस्पदवतात्रपचिद्विगं। निर्मलाभादितागस्यमूपरभातनिचिद्विगं। सापिताका
 हलंगुवभाषकुमासनाकश्चदभके०। शसनासहि० वधेदितिवहुलमधुलं। चउमधु

लगर्हं शुभ्रवक्रादिकात्रयं गङ्गायावज्जदवस्य चादभाकावलङ्ग्ये निम्नतागदिताग
 हिमकुल्यासोमदवक्रुक्ष्मतां सापितालमखं कृत्वा उदवापीलयत्सदा वर्जयन्ति किं वञ्च
 लवीरुत्सवपुंड्रनवतात्रविचित्रितं क्रमक्रमं तथा कव्यं मधुलाचक्रदवताममव्यवज
 वस्मनश्चक्षुष्यागिनां नियतात्मनः जीतिजस्वसहादवीनासाकर्षुदिमकुली दकना
 नियतं सिद्धिहानिकुमिदं वचनमववीत् ॥ शिषिस्त्रुलमहाथागजं पादादिगुथा ४ म
 प्रंजवंतु वनार्थहानिकुभीष्टं नान्यजुसंभय ४ शिषिवक्त्रामहाथागं कनकर्षुलला
 वृकाय उवचयं ॥ तयश्चाप्रचो नानां मत्प्रायकुनसंभय ४ कवलं हिन्ननाभस्य कर्षु
 संचचवमासंचतिन्नकोष्ठा वनार्थहानिकुस्वाभनंलतं सदा उवदीवादिश्रंगस्य
 कसंताप ३४ वस्वविम्वदापादिलङ्ग्ये ॥ शिषि ४ संकटकायस्य श्रायाधुमकृत्मान

निवीक्रासूविचावर्धं विनीतसर्वभित्तिप्रचित्रितं सुसमाहितं सर्वलङ्ग्यसंपूर्णसूत्रपावि
 उंभोजाहयानकं वीचवीवाजीसंकावाहसिसिंगवाभावावाक्रवधारानदभं विक्र
 कपाटं सर्वदहितां चित्रितं चयप्रधारणप्रसर्वाचाक्रवसन्निता ४ श्रवार्धमीलनं कृत्वा
 तानिवचक्रानि उवंथागकानि च उदभमिदं ककुननिर्द्भममगं स्मृतं ॥ वववीचप्रधा
 चाहाप्रसूत्रपात्मानि बाधमूपगच्छति ॥ बहस्येचित्रितानां च श्रुनकालत्यतस्कृष्टं ॥ बल
 त्मर्कं वा मध्ववीर्यं द्रियं कृतव्यं प्रवमाहुतं ॥ वागमवागविमिश्रं च न सैतवति तत्क
 क्रयकुतथागता ४ वमनादवनागमं श्रुं धानां विचक्र ४ गयाति ४ सर्वकावकु
 वं कपाटस्थानानि प्रदिं भवतसदा ॥ चावतं दंतविस्तृतं गुह्यदाप्रकुकी ४ ॥ ४ ॥ संम
 प ४ ॥ विन्नानां स्पुर्दानां चक्रं नाभानिकर्षुया ॥ प्रापश्रपासचावस्पनवधावस्पत

नेम्रतागदितागम्यपभातनिचिजितंसापिष्ममालस्यवाहूधोसंयमनचवावर्जयन्ति
 र्जयन्तिहिबंश्यासंधिसन्धिरुसर्वभग्नकाधकाधधवीदवीचटिचटिकिंकनीगधा
 वतागमध्वकवावाहिउतांलकसन्धितानाजितीदीर्घमहादवीविवर्जंघस्यदवकीउच्चा
 रुलीगदकनाशासंगृह्यप्रथदावकंसूवातपश्चात्प्रकाभयच्चिचिधियानाकुनयेवच
 तादिगधुयाधमावविघ्राभयाइवंसाधकान्नियमात्मनागीलिविम्बमहादापंकपोलडुव
 रुनकर्णुललाटकंकालहाभकूपीरुकुश्रचिबसवसाधकधुलीसिहीनमहादापधु
 मनाभस्यकर्णुशुललाटकंकानानाविधंचमवर्षयागीनान्नियमात्मनधुउर्ध्वदृष्टिस्वा
 दीवादिश्रंगस्यश्रुसैव्यादापकीर्तिर्नचइर्तिनादिमाशास्यविपर्याचिंक्रमइयानभा
 धमकृडमानसंमृत्तयानिधियाश्रुश्रुप्रियाप्रिययाचकेधुउवंथागीमहादाप

संपूर्णसूत्रपाविधिदर्शनंसोम्यासोम्यकुत्रपस्पचिजितविधितंसासोम्यासोम्यकुत्रपकुत्रो
 गनदभंजिकप्रशधिकाधमूजान्नप्रतिचिष्वदयसमयीधूवागउवंमूजावसहृत्वा
 र्धमीलनंकृत्वाथागयागिनीनायकींरुसंचत्वाविसृज्यानिगस्यानन्दचिरुनथाविधि
 ॥खर्ववीचप्रथागनहृतव्येमन्तिधंविधिधुखसमंचिजितमालांधवचवीचवगस्वयंवा
 त्यनसूटंवावत्तवजाकवविम्बंरुधनं००धननाधुसर्वसैलावथागभात्माचत्वावचडुवा
 नसैतवतिरुहधधुयागिमध्वसूधसूधनार्पचरुतात्मकात्मनास्वास्तचक्रंनदातस्यत
 तेधुसर्वकावकुच्यमिचसर्वदहिनींनवद्यानात्मकैव्यामैसाहिरुत्वाचडुर्धुनीं॥३
 ॥४॥धुसंम्यकथागकुप्रमार्थच्यनिकावकधुसमार्गभाहनंज्ञनंश्रमार्गहवदा
 पनवद्यावस्पलकृतीनाहिकामिकस्वर्गचविन्द्रनानूपदहिनींउर्ध्वउर्ध्वचस्वन

नस्तत्रयमस्तिनांविधिः॥ एवंलक्ष्मलक्ष्मसमजाधंवटचित्रितंश्रादिकर्मिकमकु
त॥ ॥००॥ निधीवजवावाहिकल्पमहातकुवाजप्रतिविम्बमूडाधमस्वतावति
मीवजजकीमहाप्रहाभदभयकुयभन्यायंयागिनीनांलक्ष्मैशुतभाचकुयागिनिप्रयाग
नादीपयगन्धकुर्मचतिपमायनगन्धकुवर्धुचम्पकयस्य॥ दाकिनीपमिनीचेवतामा
श्रलक्ष्मयत्सुविचक्ष्मभापमिनीनीलक्ष्मैवधुम्वंचमधुलाकृतिभतभानिलपूष्पाकृ
कर्पलचन्दनंगन्धपूष्पलीकदलकृवि॥ मगनाहिसमंगन्धनीलायवकुवर्धुकं॥ ००॥ दीवव
कनकीगन्धकंरुयंयकवंधूकसंनितं॥ पाठलीमलिकागन्धगर्भैवर्धुउपूनभापादोसमृ
स्यस्रभाहनिमातमातङ्गमिनीपमगन्धहंसस्वनापमवन्धनकामयत्॥ पमस्यभ
मिनीतथाश्राननकवंवक्षहस्तिनीलक्ष्मैवधुम्वंचमधुलाकृतिभतभानिलपूष्पाकृ

वन्धनशुभाकास्यर्भहस्तिनीभिवसिपूलकंदत्वागम्भामालिंगभक्तनमदनासूखस्यर्भन
वताभजतालक्ष्मसंपन्नाहस्तिनीचविधीयता॥ भेदिपीलक्ष्मैवधुदीर्घकभादीर्घनाभि
वतिकभवामहस्तनगृह्णउष्टदकनपीउयत्॥ अतिगम्भसूवतठचंवयित्वाहृदयनल
क्ष्मसंपूर्णुभेदिनीकथनसदा॥ चिदिपीचतथाचतस्वल्पकंयाउतस्याउभाहनीपीरु
भयनीलंवासीपानावत्स्वनाश्रमिषगन्धवाकविकीर्णुविचिरीवतिकीठाचवक्षतभाप
गम्भमालिंगनंउष्टस्वादयत्॥ गम्भकाव्यसूचोपकालक्ष्मसंपन्नचिदिपीवृपिपीहवत्
आत्मकास्यता॥ भिवसिमहासूखचक्रचुर्दलपमकं॥ ००॥ चमदस्थानसर्वस्याधवे
कावाधाम्भवंधुवतिगवाधचिरास्मिकाचउंकाचउंकालापंचदभास्मिकीमहासूखं
लिखवृपिनीकर्मकावभनूपधचत्वावानन्दवृपिपीसहजानन्दस्वतावश्रुदयपत्रमभ

एदिकर्मिकमक्रासंप्रतिविम्बादिका नथसिद्धिमापूर्यतभीष्टंमूजांविस्तार्यसाधय
 गच्छमस्वतावविधिलङ्घनामज्याशुंभितितमठपटल॥ ॥ अथतगवान्स्वा
 यागिनिप्रयागननवनवेकेकस्यउं कर्मधर्मसमयमुमहाम्जाचउर्थकां॥ मधालणेनया
 मिनीचेवलामारुवतिहस्तिनीसंखिनीद्वलाहाश्चिदिधीतववृषिनी॥ चरुर्जातिस्ववृषा
 धनिलपूष्पाकतिनासिकाताम्रमुखीरूमृष्टाचगजातीचंपकंगन्धउतधर्तुवृषधनधी॥
 लिंकं॥ ॥ दीववदलस्यामंगधनसेवलङ्कयत्॥ मञ्जिकास्यवगन्धचवाक्कावर्तुकसन्नितां
 रनभपादोसमृद्धिनीकनोनालरुलाकावागोमावलीकभाजिवलीतगहगायांउत्रात
 यत्॥ पद्मस्यर्भाकभहस्तनसंगकउाष्टदकपीठयत्॥ तगमृगलिपक्रिपकामयस्य
 कनासिकावागमावलीमदनात्कटासूलकायाचपलान्वपीठतस्यकावयत्॥ उवस्काट

नासूखस्यर्भनखदकदाप्रयत्ननखनाकार्ययद्धध॥ सावमस्वनाहस्तिनी॥ गीतवादिति
 कभादीर्घनाभिका॥ नातिकृषानाकिस्त्रुलासुनोवावाक्कुरुलाकति॥ दधिग्रथताऊनप्रिय
 यित्वाकृदयनखप्रह्वंदाप्रयत्न॥ भाविगन्धवसाजिकाकावाकाकखवाभीखिनी॥ ननल
 ॥ ॥ अरुनोशीरुलाकावस्तनोभ्यक्षलजाश्रुतिक्वाभनित्यकलहप्रिय॥ काकजंघाउकान
 जचवक्षत॥ प्रथमैतगहस्तनपीठयत्चंवनेस्तनमर्दनं॥ सिवभिपूलकंदत्वासेजनवति
 ॥ वृषिधीतवत्॥ अथान्यतमसंवक्षसंक्रान्तिहृदलङ्घनवाक्कसंक्रान्तिस्थलस्पीभृक्क
 मनसर्वस्वाधववृषत्वात्॥ वाधिमधुस्वहाववीजकृतश्चवाक्कधाणिभदलपमक्रुत्सखह
 मकीमहासूखंवहतनित्यंयागिनीपाठभीकला॥ ललनावसनाद्यथा॥ पार्श्वश्रुलिका
 मृदयपत्रमभ्यवीसंवृतकन्दसंकाभीवृषितंसूखवृषिधी॥ वृक्षानांवाधिसत्वानांमाध

मलिका वंदुमार्गसामंथवनिनिवतं॥ रुदयधर्मचक्रमरुदलंविश्वदलपमंमध्वरू
 विज्ञाननिष्ठादिहं व्यापकं तथा॥ स्वयंरूज्ञानज्ञानमाधवंविज्ञानं पदमध्ववंनाहोचतुषष्टि
 रूकन्दरूपयत्॥ वासफतिसहस्ररूकन्दश्रावमूचतं॥ ललनाप्रज्ञास्वरूपसनापा
 ददोचतुर्मूजापदायनी॥ महास्वरूपदासिधिसदासंयुक्तदायनी॥ यनयनहिलावनमन
 ॥ आवहलितप्रज्ञानवपनमात्रअलीकलितप्रकाशविलसत्संचलितवामना॥ दग्धस्कन्द
 कंचामतं॥ एवंकर्ममूजाया रुदव्यामूजा रुकथतं॥ सोगतगणेश्वरता रुद्रकृजाया गिनी
 भाकूलसमारुकां॥ निर्विकल्पात्मकानावी॥ अवी॥ प्रवक्तु॥ वाजाकूलस्वरावस्यकथास्त्र
 गिनीवलवन्त्रता॥ विष्वांपन्नपाता रुधर्मज्ञाननरूपपति॥ वीवकूलप्रसमत्पन्नंसामि
 यक्तश्रमाध्वनं॥ प्रवापना॥ एवंधर्ममूजा रुसमयमूजा हिधीयता वलिप्रज्ञास्त्रवक्तुस

॥ व्याताश्रितप्रकप्रकंतवी॥ धर्मचक्रप्रवर्तकनिर्णयसमयपालकं॥ एवंदव्यास्वरावा रुप्रतिद
 रुप्रवलिज्ञानकावितां॥ यागिनी प्रवक्तुविसरूयावक्तुनायकीं॥ सर्वकालनध्वदस्याप्रह
 मूजा रुमहादव्याप्रकथनं॥ सहजा रुजादवीमकुजालाकनायकीं॥ यागजापी॥ जान्वेवसा
 गवा रुप्रतिमूजास्वरावकां॥ यायस्वरुगन्धंचसातस्याहिनयंस्मृतं॥ वावाही वज्रप्रथा
 ॥ वज्ञानवायनां प्रविष्टंचतुमखुलवागनवस्वरावात्मायागिनी चक्रचिरुता वज्रउक्ष
 कां॥ एकेकस्पुचिलस्पष्टिं॥ अष्टा रुकात्मकां॥ कायिकं प्रपतनेव रुकादि रुद्रपक
 ॥ वृक्षकं॥ प्रवद्रूपकतादवीरूपका॥ वृक्षमार्गकं॥ ॐ द्रियंसर्वसर्वसर्ववृक्षंप्रज्ञापानमिता
 प्रतिसर्वकामदे॥ यागिनी चक्रमरुप्रसक्तकामरुद्रपका॥ ॐ रुमटा हाककलालप
 गियरूरू रुद्रस्वाहा॥ ॐ निमला रुवावीजासंतवनिववप्रदां॥ वरुसंस्मानकं॥ र्वयथास

आचार्य
आदिदेवीक
आदिमोतीक

वैद्यगिकां॥ **अ**नननसंवक्षसंक्रमंविन्दुपिथीं॥ भुक्तप्रतिपदावत्यपूर्वमास्यानिकिया
कात्रथानोचदुर्ध्मा॥ **श**काव८॥ नाहोपंचम्यां॥ उकाव८॥ दय॥ प्रष्ट्यां॥ उकाव८॥ सुनसप्रम्यां॥
व८॥ च८॥ षी॥ उकाद८॥ सी॥ उकाव८॥ क८॥ मूल८॥ द८॥ धं८॥ नेकाव८॥ जथाद८॥ धं८॥ लला८॥ उ८॥ काव८॥
स्वहावा॥ त८॥ येव८॥ क८॥ सुप्रतिपदालत्यमाव८॥ दमावा८॥ सिताव८॥ संक्रमनं८॥ त८॥ व८॥ वा८॥ म८॥ च८॥ उ८॥ श्रालि
क्रमनं८॥ ष८॥ ऊ८॥ रं८॥ त८॥ था८॥ यामार्च८॥ संचा८॥ व८॥ त८॥ द८॥ न८॥ संक्रान्ति८॥ धा८॥ उ८॥ म८॥ रं८॥ च८॥ उ८॥ य८॥ स८॥ सूर्य८॥ य८॥ स८॥ वि
निर्विकल्पमहासौर्यं८॥ श्रकां८॥ क्रा८॥ हान८॥ न८॥ प्रवा८॥ न८॥ श्रान८॥ न्दा८॥ सो८॥ स८॥ रा८॥ ग८॥ भ८॥ व८॥ द८॥ ह८॥ ल८॥ लि८॥ ता८॥
व८॥ स८॥ त्व८॥ ८॥ प८॥ वं८॥ स८॥ र८॥ व८॥ ॥ ॥ **॥** तिथी८॥ व८॥ ज८॥ वा८॥ ना८॥ हि८॥ क८॥ ल८॥ म८॥ हा८॥ न८॥ कु८॥ ना८॥ ज८॥ था८॥ गि८॥ नी८॥ नि८॥ द८॥
व८॥ क्ष८॥ य८॥ था८॥ व८॥ द८॥ न८॥ पूर्व८॥ स८॥ ८॥ ध८॥ र्मा८॥ द८॥ या८॥ न८॥ र्ग८॥ तं८॥ च८॥ व८॥ लि८॥ द८॥ या८॥ य८॥ वि८॥ धि८॥ ८॥ ॥ उ८॥ की८॥ म८॥ र्त्ति८॥ कु८॥ था८॥
प८॥ य८॥ त्८॥ वा८॥ कं८॥ चा८॥ ध्मा८॥ लि८॥ कं८॥ द८॥ व८॥ भू८॥ ती८॥ या८॥ नि८॥ मा८॥ लि८॥ र्थ८॥ ॥ ना८॥ हि८॥ म८॥ र्ध्मा८॥ र्च८॥ न८॥ च८॥ प८॥ म८॥ हा८॥

कूदहनादिसर्वमान्सायननानिच॥ कालनंसर्वचिह्ननतापनंवागवंकिना॥ साधनंप्रवमात
मकुथषुजाकिन्पावलिमूजायागित८॥ क८॥ त्वा८॥ य८॥ श्रु८॥ लिय८॥ द्यं८॥ खल८॥ म८॥ ध८॥ सू८॥ च्चा८॥ गु८॥ व८॥ जं८॥ ॥ द८॥
दार्च८॥ द८॥ द्धि८॥ म८॥ क्ति८॥ ता८॥ क८॥ न८॥ त८॥ स८॥ वं८॥ म८॥ र्द्रा८॥ कु८॥ र्प्या८॥ इ८॥ त्का८॥ व८॥ त्ता८॥ द८॥ न८॥ द८॥ न८॥ दि८॥ र्त्ता८॥ क८॥ र्त्त८॥ वि८॥ व८॥ या८॥ गि८॥
त्वां८॥ म८॥ नं८॥ उ८॥ कि८॥ ती८॥ स८॥ र्वां८॥ व८॥ लि८॥ क८॥ र्म८॥ प्र८॥ व८॥ क्ता८॥ मि८॥ व८॥ लि८॥ न८॥ त्व८॥ य८॥ वि८॥ धिं८॥ म८॥ धु८॥ लं८॥ हा८॥ म८॥ जा८॥ पं८॥ च८॥ प्र८॥
सा८॥ ध८॥ न८॥ का८॥ ल८॥ उ८॥ स८॥ र्व८॥ क८॥ र्म८॥ प्र८॥ च८॥ आ८॥ रु८॥ मं८॥ श्रु८॥ लि८॥ व८॥ लि८॥ वि८॥ ना८॥ क८॥ र्म८॥ भी८॥ प्र८॥ सि८॥ धिं८॥ न८॥ जा८॥ य८॥ नं८॥ व८॥ लि८॥ न८॥
न८॥ व८॥ क्ता८॥ द८॥ य८॥ न८॥ सं८॥ न८॥ क८॥ र्त्तं८॥ का८॥ व८॥ ना८॥ द८॥ ना८॥ दि८॥ तं८॥ च८॥ उ८॥ र्वि८॥ भ८॥ ति८॥ क्त्वा८॥ न८॥ न८॥ भ८॥ वी८॥ व८॥ त्ता८॥ य८॥ त्ता८॥ य८॥ त्ता८॥ य८॥ त्ता८॥
कु८॥ म८॥ र्च८॥ न८॥ त्ता८॥ प्र८॥ थ८॥ मं८॥ ता८॥ व८॥ ह८॥ क्त्वा८॥ का८॥ दि८॥ कं८॥ प्र८॥ व८॥ त८॥ सं८॥ स्था८॥ य८॥ वि८॥ त्ता८॥ ध८॥ य८॥ त्ता८॥ त८॥ य८॥ प्र८॥ व८॥ त८॥ यं८॥ व८॥
दि८॥ त८॥ य८॥ क८॥ त८॥ च८॥ लि८॥ कं८॥ व८॥ र्त्तं८॥ प८॥ म८॥ तां८॥ ज८॥ नं८॥ त८॥ म८॥ र्ध्मा८॥ त८॥ क्ता८॥ दि८॥ कं८॥ ॥ उं८॥ श्रं८॥ श्रं८॥ र्वं८॥ र्त्तं८॥ लं८॥ मां८॥ पां८॥ यं८॥ त्ता८॥
ता८॥ प८॥ वि८॥ ली८॥ न८॥ वी८॥ क्त्वा८॥ दि८॥ क८॥ म८॥ ति८॥ न८॥ व८॥ ता८॥ नू८॥ व८॥ र्त्तं८॥ व८॥ स८॥ न८॥ पं८॥ प८॥ म८॥ त्ता८॥ त८॥ स्था८॥ प८॥ वि८॥ वा८॥ वा८॥ द८॥ न८॥ द८॥ न८॥

पूर्वमास्यानित्यावत०॥ शुक्रप्रतिपदां शुक्रकावजं घायां द्वितीयाकावजं तृतीयाकावजं
 व० सुनसप्तम्यां भकाव० ग० व० शुक्रम्यां भकाव० क० व० ल० न० व० म्यां ३ वा व० ग० ६ द० भ० म्यां ३ वा
 ला० ३ वा काव० म० र्द्धिच० र्द्धं ३ वा काव० म० द० स० वामदक्षिणपूर्वमा० म्यां ३ वा काव०
 वामच० अलिजिम्बुलाव० दक्षिणसूर्यकालिस्तूलस्वलाव० वीधिसत्त्वात्मलावनसं
 मसूर्यमसविन्दुनिवापश्चात्का० निवाध० ३ वा समचिन्तासंज्ञानिषा० भविधीयत०
 वद० हललिताममं॥ ३ वा ह० ग० वान्चजीव० ऊ० कि० निरु० म० म० ३ वा सर्ववी० व० समायाग
 म्यागिनीनिर्द० भ० म० जाल० र्द्धम० कि० विधिच० र्द्धि० भ० ति० प० ल० ३ वा ॥ अथवलितत्वं
 गकीमूर्तिरुधाराग० उ० क० व० चादि० व० क्रां० पू० न० ३ वा समाधि० माला० म० य० ल० च० प० म० ला० लु० श्र० स्त्रा
 र्द्धव० च० प० म० ला० लु० विकल्प० य० प० च० का० सि० का० म० न० च० सम० व० सं० सर्व० का० व० य० ग० स्त्रा० न० य० ग०

साधनं पञ्चमालानं ममृती क० व० ल० पू० न० ३ वा नम० जाल० र्द्धम० कि० विधिच० र्द्धि० भ० ति० प० ल० ३ वा ॥ अथवलितत्वं
 म्यागिनीनिर्द० भ० म० जाल० र्द्धम० कि० विधिच० र्द्धि० भ० ति० प० ल० ३ वा ॥ अथवलितत्वं
 गकीमूर्तिरुधाराग० उ० क० व० चादि० व० क्रां० पू० न० ३ वा समाधि० माला० म० य० ल० च० प० म० ला० लु० श्र० स्त्रा
 र्द्धव० च० प० म० ला० लु० विकल्प० य० प० च० का० सि० का० म० न० च० सम० व० सं० सर्व० का० व० य० ग० स्त्रा० न० य० ग०

वभीरुं नंपरं शालिकालिपविषता ४५ उं श्रा ४ हूं का वा नूपविस्किता नूतं स्यमधुलच
न प्रवेज प्रविष्टा ॥ अत्यन्त प्रयावदिकुत्र विहित ॥ हत्वा ययन्दी भवत्तवधसूची ॥
नू श्रा कानपादार्थदृष्टिं कुमूर्धा हत्वा वनादि कु ॥ दधदिग्सीस्किता वीनवी वाथागिन्याव
यत्सर्वं समथहा ३ वामदक्षिण वर्तुन नन्यामथ नू ॥ पूज पूजक पूजा वामहृदादिभाक्क पू
न सपनिवा वाना कर्षयज ४ ॥ पश्चिम वत्त सपनिवा वाना कर्षयज ४ ॥ दक्षिण यम सप
एतथ सपनिवा वाना कर्षयज ४ ॥ नेम नू वाक्क सपनिवा वाना कर्षयज ४ ॥ वायव्य वाय
वाना कर्षयज ४ ॥ हृत्पदमचिती अर्ध ४ पृथिवी देवता सपनिवा वाना कर्षयज ४ ॥
हृदयथासूखं ॥ श्रवणिहा ४ ४ हूं वं हा ४ वज्र ताकिन्या समयत्वं द ॥ ध हा ४ वज्र ताकि
त्वत्वा हि २ सर्वयज्ञ वाक्क सत्तु प्रतपि भावात्मा दापस्मान्ता किन्या दय ०० मं वलिं ग

कालनयासत्सुखविशुद्धयममसहायकाहवक्तुहैंहैंरुद्रस्वाहागमकुप्रवधतायावतन
हाऊकुवीबासांयागिनीनांरुस्थेवचभुवूम्रवानिकार्यातिमहाचक्रप्रयागत॥यंयंयं
यूमचक्रकुर्याहिवधवामकिनयूगभ्रसुनंवाप्रचर्मचनवचर्मप्रहाऊनंमहाप
पिवाभयागिनीचक्रकुवीबासांपार्श्वकूमावकंडुविपुमालामदृष्टचगन्धनामाहिधंत
मक्तिरुपपूर्वकादिभ॥स्वपथचसुनांसर्वानूजांहाहूनिनकुडु॥प्रहपूजनपूजाच
हूईनंसर्वतीर्थिकादिभूमक्तिरु॥पवमादिजगुमहासूहता००विहवशू००सिचक्र
ह००॥निरूवससुयलहूनवदसहा००काबूधरूव००वमरुमहा००॥शूऊकुसिप
जिअतिनरूजानरूलीशूरुसर्वरूउलावभुपूवरू॥उवमादिउसर्वचगोहितंयजयज
गतिंचकानयत्पार्श्वपमहसूकुशोकनीयास्वयंप्रतीपमहसूषूटकीयादापथ

नृकल्पमधुलचक्रद्वयनास्त्रालिनाति॥ उगदर्थकृत्वासमापन्न॥ पूर्वकीर्णवीर्ययथाप०
 लवधसूचीं॥ मंगलीकजादृष्टसंप्रथाक संस्कारमधुललाटदं॥ श्रवर्णवर्णनंशामय
 वीनाथागिन्याकर्षितं॥ यदागत्सूत्र॥ वामदक्षिणातिस्था॥ मन्त्रं॥ उकिजालसस्त्रं॥ सम
 हृदादिभाक्कपूरकं॥ नृयद्वयनापूर्व॥ उादिसपनिवावानार्यकर्षयज॥ उरुवक्रव
 दक्षिणयमसपनिवावानाकर्षयज॥ ॐ नमो महाकृत् सपनिवावानाकर्षयज॥ आ
 ॥ वायव्यवायूद्वयनासपनिवावानाकर्षयज॥ उर्ध्वचन्द्रसूर्यवक्रायाद्वयनासपनि
 नाकर्षयज॥ ॥ हूं वंहा॥ संकपासर्वद्वयनासाधकस्य॥ किंपूर्ष्टिं पूत्रसर्वकार्यकुसिद्धिं
 ॥ ॥ हा॥ वज्रजकिनासमयस्त्रं॥ ॥ हा॥ वज्रजलया उर्ध्वविकचावलिनंद्यालि॥ अर्धकं॥ उं
 ह्य॥ मंवलिंगकृत्सर्वसिद्धिमप्रयकृत्तुय॥ थं॥ उजथपिवथमात्तिकमथममसर्वा

सांग
 लायुध
 मकोहन
 मवपाव

रवभतायावतनरुवस्त्रक॥ स्थिर॥ प्राप्तातिचश्रविद्धिन्नकिमप्याननूजंसूत्रं॥ वलि
 गागक॥ यंयंथागिनीनामवीनासांचरथेवच॥ तन्त्रं॥ कथ्यमानं॥ चमदनं॥ महासोव्यदं॥
 प्रहाजनं॥ महापात्रकुपानप्रमन्त्रिनलं॥ वितं॥ क॥ थागिनीपात्रकं॥ यं॥ क॥ मानिकातथा
 न्धनामाहिधं॥ तथा॥ ग॥ यनं॥ नृत्पनं॥ चायं॥ धा॥ उ॥ वादिस्तुकाकिला॥ वलि॥ हा॥ निसर्वासि
 कप्रजनपूजाचपूजाकाकुपनंपना॥ स्वभिष्यं॥ का॥ वय॥ च॥ अथ॥ वा॥ समाहिता॥ न्यका॥ वर्ज्य
 ॥ ॥ सिचक्रमहा॥ ॥ अलि॥ वि॥ वि॥ मा॥ ह॥ प॥ भु॥ ला॥ अ॥ न॥ जा॥ ॥ स॥ ह॥ ज॥ सं॥ द॥ विल॥ ॥ म॥ ह॥ स॥
 ॥ ॥ अ॥ ज॥ उ॥ सि॥ प॥ व॥ मा॥ थ॥ न॥ हा॥ व॥ कृ॥ ॥ ति॥ व॥ मि॥ स॥ हि॥ व॥ य॥ उ॥ न॥ पा॥ व॥ कृ॥ ॥ अ॥ वि॥ अ॥ न॥ क॥ व॥ व॥ कृ॥
 ॥ ग॥ हि॥ तं॥ य॥ ज॥ य॥ ज॥ ॥ म॥ या॥ त॥ कृ॥ प्र॥ क॥ ल्प॥ प्र॥ दा॥ त॥ वं॥ म॥ नि॥ क्ष॥ रू॥ या॥ ॥ च॥ न्द॥ नं॥ कृ॥ त्॥ नं॥ त॥ स॥ नृ॥ त्प॥
 ॥ की॥ या॥ दा॥ प॥ थ॥ कृ॥ ने॥ व॥ उ॥ ॥ था॥ गि॥ नी॥ नां॥ म॥ य॥ पि॥ लुं॥ प्र॥ ति॥ पा॥ द॥ नं॥ का॥ व॥ थ॥ त्॥ उ॥ क्रा॥ व॥ स॥ धा॥ दि॥

हरापयत्सर्वरुतकां॥ दक्षिणादापयत्सर्वरुतकां॥ दक्षिणादापयत्सर्वरुतकां॥ दक्षिणादापयत्सर्वरुतकां॥
धामपयत्सर्वरुतकां॥ दक्षिणादापयत्सर्वरुतकां॥ दक्षिणादापयत्सर्वरुतकां॥ दक्षिणादापयत्सर्वरुतकां॥
गत्वांसिद्धलाकामध्यातां॥ पापकृत्यहेलाकृतवदुसिद्धिमुजांवाचयपूजनां॥ ॐ नमः
त्रिधाकमालावलंबिन्दमगृह्णत्सप्तपातालगतकुजंगम॥ सर्ववाकर्जयश्चाकाट्यश्च
दृष्टं॥ नननेकवाचाच्चानितनरुगवतिसुप्रहृष्टाक॥ अकिन्नादीनांयममर्थनीपर्यका
मयस्त्वद्विष्टा॥ ॐ नननेवद्विष्टिचक्र॥ पंचवाचिताच्चानितनरुगवतिसुप्रहृष्टाक॥ अकिन्नादीनांयममर्थनीपर्यका
ॐ निप्रार्थयत्॥ हवसमसमंग॥ हवसंकल्पसूक्त॥ हवमिवसकलतावंतावतावीक्षमा
वानूकपातता॥ हवमभानदिक्कालादीनांपूर्ववक्षामयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस
समयंयक्तुममसर्वसिद्धिंप्रयत्नयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस
समयंयक्तुममसर्वसिद्धिंप्रयत्नयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस

श्रुतपदमकुसुमसंस्तुत्याहिमनसिद्धिंप्रार्थयत्॥ हवमभानदिक्कालादीनांपूर्ववक्षामयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस
न्दसकम्पामूडापसंहात्रसुचालिंगाहिनयपूर्वकामानांष्टदशतिकंदद्यात्॥ ॐ कृताव
चवित्रहर्षयत्सर्वं॥ ॐ वज्रमूत्रनिपथीविसृष्टरुचक्रदवतावात्मनिसर्वोत्पदरु
कृतालांमूजांविहावयत्॥ धालकृत्कावनादनदद्याश्चिह्नरुताहुक॥ प्रप्यधूपादिकव
लितकृत्यसुखाहा॥ कवृक्षादिवसंपतमधुलंगमथयत्॥ हवमभानदिक्कालादीनांपूर्ववक्षामयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस
थतांपविगमयत्॥ दिवसादिवसंकुसंपाफंमान्सिक्तवत्सकंरुथा॥ संप्रहृष्टजगतांमनात्र
नामयच्चकपविवर्तनजिनयुगोमानादयंभाद्रदं॥ तस्यांयस्यकृपाकुवस्ममहतानिगुरु
गच्छजसत्त्वसुखाकवं॥ ॥ ॐ निप्रार्थयत्॥ हवमभानदिक्कालादीनांपूर्ववक्षामयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस
मिवजवावाहिसाधनंपूजांकृत्यामहादेवी॥ हवमभानदिक्कालादीनांपूर्ववक्षामयत्॥ हववावाहिसर्वयक्तवाक्तस

٤٢

॥ अं यागश्च द्वाष्ट सर्वधर्माभीयागश्च द्वाष्ट ॥ ॐ निपथक्कमलावर्तनमडयासैजा नवलं वि
 त्तु ॥ अं कृतावष्ट सर्वसत्त्वार्थसिद्धिंदत्वाय धानूगभगवद्ध्वं वृद्धविषयपूतं वायगमनाय
 सर्वोत्पदं ॥ ॐ नतठ पञ्चाङ्गिष्टस्ववलिं संहावकर्तुं वां ॥ समयसिद्धयाम् स्वनमद्यपू
 ष्यधूपादिकंदत्वा संताप्तामनुमन्त्रयन् ॥ अं सर्वरुद्रैर्वेवाहि २ उद्दिष्टवलिमूद्दिष्टव
 त्तु ॥ अं निर्विकात्रमहासूदं ॥ प्रक्षाल्यात्मकायागसर्वकर्मासिद्धिं सत्वाधिरुद्रपंत
 जगतां मनात्रयप्रवं सर्ववदानादिनां ॥ पिष्ट्वा सर्वविकल्पमाहगबलं जाकिनीहवृकादि
 त्तमहानिग्रंरुद्धं ॥ अयसै ॥ ॐ ह्राहृगवान्तामीवज्जाकिनथागतं ॥ सर्ववीथ्यवीथ्या
 विलूपहावचक्रपूजाविधिनिर्देशप्रचरिं भक्तमष्टपटलं ॥ ॥ अथाननकवेवका
 लयथागीमुखसोचादिकंकृत्वा समयरुद्रिकं मूवं प्रक्षिप्पगिविगच्छवादिमनावम

स्मृतविश्ववज्रासवासीनः॥ अलिकालिंवावयंमूत्रार्थं श्रुहं वज्रवावाही रत्नातदाका
न॥ कदायनक वभिहिः प्रलयानलदंसहेनक निष्ठुवमवर्हिनीं वज्रवावाही वक्रम
भिनिनिर्गतपूजाहिः संप्रकचः कदयुतः पापदभनां प्रभानूभादनाप्रधपविधमन
ततः भूतगानन वज्रस्रहावात्मकाः सर्वधर्माः ॐ भूतगानन वज्रस्रहावात्मकाः
प्रतिधनवभातसमाध्वयुक्तयः आकाशयं वंलंपविभतानिधनृत्तिका लवर्तवच
विप्रभतः कइपविस्तंका वंसं वंसमं च वंसं च वंसमयं ॐ भूतगानन वज्रस्रहावात्मकाः
॥ ॐ वज्रपैजलं पंक्तं ॥ ॐ वज्रविमानं वंक्तं ॥ ॐ वज्रभवजालं वंक्तं ॥ ॐ वज्रकाल
आदिसर्वलक्षणसंप्रकं कृतागमं विचित्रं ॥ कृत्वा ध्वनकापंका वज्रमदलपमंतद
कानंप्रकृतिप्रहासं पंक्तं ॥ एतत्सर्वं पविधमभात्मानं तगवती वज्रवावाही जति

ठकवधंगधवां प्रकाननां जिनजं मूक्तं ॐ प्रघां दिगं वयां पंचरत्नात्मिका सहजानन
तगजं सववृद्धिं पिवकी हावयन् ॥ कथापूर्वादिच वदलप्रयथाक्रमं वामावर्त्तनजव
कुर्जुजाः वामवधंगकपालहस्ताः दक्षिणममूक्तं ॥ जिनजं मूक्तं ॐ न
त्वाविवाधिविहारी पुरुनिकपावाविचित्रयत् ॥ तदनुत्तगवती रुधीजविनिर्गतवभि
वप्रवधवंकालनवंधनं ॥ हाः कावभताप्रसेक्यता ॥ ततः ॐ वं आः हां हं कालेन
नालोः हां धां रुदिः ॐ मां वक्तुः ॥ ॐ मूत्रिः ॐ भिवायां ॥ रुद्रसर्वाः ॐ ध्वयं ॥ ततः
मकुजपतः ॥ तजमकुः ॐ वज्रवेवाचनीयं ॐ रुद्रस्वाहा ॥ विसंधं वलिपूर्वकं तगव
धसुदावाच्यकां विप्रहृत्तनवाभेहलथायानमाः ॥ प्रभमस्रवसमधा वज्रवा
यां वज्रं न्याविधिनात्ति तः कचिच्च भभानादोमनान् कलस्थानसच्चन्दनामपलिप

मेषादितावनापूर्वकं स्वहृदि च कावजसूर्यमधुलसितजी० कावजवर्णिजाले ० प्रका
 पूव० संनीक हृदी जनिर्गतपुत्र० च० श्रीपुतावती महानासावीवमती स्वर्वीलं व
 श्रीभामादवीसुहृदहयकस्तुखगननावाकृताहृति० चक्रवर्गवर्णवाहाभोधिनी
 वीति० नीलवक्रसितवर्णुति० अज्ञास्यामिताति० वेवाचनभिवाधवाति० चक्रास
 भिवाति० कर्लिकपाववर्णमन्त्रितं पूजाव्ययकनपल्लवाति० अर्घादिपूव० संबं पूज
 ममवाधिविहृतादमार्गधयमश्रुतावनिर्वाननाश्रुधप्रसायाचनाविधिवि
 लागभभापा० पूर्वकं तथागतमरुधप्रयत्नं तद्वयंगमभा० ॐ सर्वसत्त्वानां सर्वसिद्धय
 स्वरावधुदाहमिति॥ तदननकवंपूयपूजापूजकान्सर्वधर्माश्चभूत्यानिमिताप्रधि
 तजालं नवातासीकन्या॥ ॐ भूत्याताहानवजस्वरावात्मकाहमित्यहंकावां कुर्या

पभापविश्रंकावजमवलमधुलसितहंकावधसूर्यासूर्यास्थसितजी० कानाधिष्ठित
 वर्षाकानां भवदिन्दधवलानं वक्रवस्तुवजिनशां ०० षट्शकलावदनातानाकुर
 तकापालमालावधुकिभिष्ठां॥ चकीकुरुलकलीवचकभरवलातं कतां विलसत
 यासुविधायिनी॥ अरवसव्यनाधुवकभकार्धरुप्रचभूकभिनदधुनृगनभुक्तसा
 विश्वपताकाविवाजितवारुदधुसंसकरवर्णागचतुर्मालाधितपूरुपमहाजनं
 वक्रपभापविसूर्यस्वरूपा नपूवधालिरुप्रदस्वविवस्त्राप्रचधुसूर्यप्रतासु
 रुजगदर्थपनां सूर्यस्वरूपा कानाधिष्ठितसूर्यस्थवजहृदयां वजवावाहीमात्मानं ध्याया
 मभवत्तगवती वजवावाहीमहंकावंकुर्यात्तदनस्वनालोविश्वपमावधुसूर्यम
 नवदनविवनमनिश्रम्यवृद्धगधुधममिमेलोपधिचन्द्रतावालिपिभक्तकलादिप्रता

भिंजाले ४ प्रकाभी कृत् वज्रवाही प्रमृद्वगुन्यागिनी वाधिसत्त्व कथागतां यथास्मन्
 ती त्वर्वदीलंकभ्यवीरुमद्वचिरुचका साति ४ जेनावती महार्ते ववावायवगसुवात
 प्रवाहाभोलिनी चक्रवर्तिनी सूवीरामहावलाचक्रवर्तिनी महावीर्याकायचक्रा साति ४ द
 वाति ४ चक्रासननिभयपंचमजाधवाति ४ वज्रपमचक्रकपालवर्द्धिभिखालंकृत
 देपूव ४ सबं पूजयित्वा वन्दनापापदभना ॥ कवयसंववपूरुषानूमादनाकिभनवग
 चनाविधिविद्विधय ॥ पूरुषं पवित्रमभूत्पतास्तु प्रमिपलुयभिन्नसिसंप्रदांजलिंक
 तानां सर्वसिद्धय ४ संप्रयतां सर्वतथागतां अधिनिष्ठता ॥ ॐ स्वहावशुभा ४ सर्वधर्मा
 रानिमित्ता प्रसिहिता ४ कावयस्वप्रययवपुत्र्यात्मवेद्यमधिर्चन ॥ हन्मकुकिव
 प्रहंकावां कुर्यात् ॥ ततः स्वचिरुवकपंकावनूपपविनिष्पन्नं तस्य विषमवका

ॐ कानाधिष्ठिता वृत्तपंचभूचिकवज्रं व्याख्यास्व नमसंरुधसपूर्वकं तस्य विषमताषाठम
 दना नानाकसूमविवाजितमृक्तकं भाधचन्द्रविवाजितां ॥ कुरु वजावलि दयमव्याक
 कतां विलसत्प्रिपताकाकलत्सव्यकवपल्लवस्थिता ४ पूर्वाक्तवज्रभास्तनपूरुषस्यत
 नृगरुशुक्लसाद्यभिवाविश्ववज्रकनककलभमूलविनिर्गतवदसुक्लघटिकाचित्र
 र्हुपमराजनं धनयनी ॥ कुरु वज्रधिवसार्जनायन्ति तपंचासभिवामालाप्रलंविनी
 सूर्यप्रतास्तु नडाममालिनी ॥ प्रतिविम्बसमां गलादिवसापतां नानानिर्याहोर्दभादि
 मात्मानं व्याया क ॥ ततः रुद्धीं वभिजाले ४ सर्वसत्त्वान्कड्पापत्तानिष्पाद्य आत्मनि प्रव
 र्गशुभसूर्यमभुलभिरुडीका वंद्य कल्मसालामरु सुजाकावांसितां चक्रमधयाग
 स्तु कलादिप्रताविमांदापनातिविवत्रपविसक्तिस्वयंपां सर्वास्तनदहनात्मिका व्याया क ॥

लेनघादिप्रवृत्तसर्वपूजयित्वा हंकावमरुपा ० पूर्वकालामुद्राम्बाललाटवामावर्तन
 मुद्रा ४ सर्वधर्मायागमुद्रा ५ नरुद्रा ५ सैवादितांगगनस्थी १ श्रुतादितागगतानीय
 गमनववीक्ष्यवर्गीकधनिति ४ दवास्त्रे ५ आकाशकावपयायले ५ भवंकर्मकर्पवकमुवीस्त्र
 महत्तापयिष्यामि ५ अंदिधनवाविष्म ५ गमथापठनिति वात्मानमतिषिंचय ५ सर्वतथागता
 तभिन्नस्त्रचिकय ५ नरुद्रा ५ निर्मितप्रचक्षुतिद्वीति ४ ननिर्मितनानाविधपूजाति ४ आत्मा
 तर्पणवर्क ५ इत्यादिदोषनहिर्गमलैजपत ५ नारायणमरु ५ जी ४ यदाउल्काकुक्काम ४ नदाम
 म्पभनाक्रवंचेदि ५ आचार्यद्वयहंकावमेद्रहनसर्वधर्माश्चतुष्पापन्नान्यधंयथसर्ववि
 यवजसत्त्वनापतिष्ठदृष्टाभरवसूनाध्याभरवसूपाध्याभरवश्रुतवक्रामतवसर्वसिद्धि
 नवजमाभमंचवजी ५ तवमहासमयसत्त्वश्र ४ ०० कि ॥ सीधान्नपिमितिठिद्व्याकावम

६५

र्य्यान् ५ अर्धनाशसेव्यायाकु पूर्ववत्सर्वकत्वाभयनकालभिन्न ४ स्थान ५ नूवृद्धवाधिसत्त्वान्दृष्टा
 दवाप्रवाधि ४ सनू पूर्ववत्सर्वक्यादिति ५ यद्वाश्रननक्रम ५ कचित्पद ५ भवपर्या ५ नस
 त्यादपूर्वक ५ आकावपनिभतायास्त्रिजि कार्यापमदलाकलायां ५ जी ४ कावंधवक्रासंबयावदि
 गीसूत्र ५ ४ पूर्वविधिनास्वपत ५ चर्वजपतावनात्मकाविधिवल्लघान् ५ अष्टलाकधर्मनि
 त्रलज्जापत ५ सर्वभक्तकल्पकेलापप्रविस्तारवतिमधावी ५ अविभाजद ४ पविषदनतिरु
 ह ५ यतिरुदमृगंरुवति ५ तिष्ठसतिमकुजापस्मिन ५ नत्तमकुतिमक्तिताकधिनीयस्येवह
 रुवति ५ अतिरूपदवेपदवानां ५ अथपामपिसर्वापकन ५ समर्थरुवति ५ किंवदूनाक
 दयजापन ०० दंप्रल्लाकसाधनंरुगंयपन ४ स्त्रि ५ तसा ५ अनकयाका ५ उर्येका ५ रुवति
 तसाधनलाकानां ५ वजसत्त्व ४ सूत्राचिक ४ ॥ ०० कि ५ वजवावाहीकल्पमहातनुवाज

पुष्पलाकसाधनलक्षणविधिनिर्देशप्रदिग्भित्तिपटलः॥ ॥ अथान्यतमसंवत्सरावधि
भीकृत्पञ्चदशवार्यसत्त्वावगावत्तयवर्धविधिं वक्ष्यते॥ ततः पूर्वार्त्तकर्मणिष्यन्तं गव
श्रुत्वा कृत्वादिगम्याति॥ अतस्त्वनिर्यातामस्त्वकवाटुयापवित्रक्तश्रावकावज
नृद्धाश्रयं पवित्रतवाथाग्रिमधुलायां कालेनमापनं कृत्वा समयेन सुवीजवर्धन
जचक्षुस्तदधिष्ठितसितपंचस्रचिकवजस्तुविकलभिजाले॥ वज्रधनमपि चक्षुवज
त्वाकृत्वित्रसेसधर्मानानमृत्तनृपापन्नानानालोकधाम्भुत्तमपि नृपवर्धपधव
वदन्तास्वादंकृत्वायावदिकृत्वाव्यस्वनामाकृत्वापवित्रक्तस्य साध्वं पूजावर्त्तिनं दृष्ट्वा क
विद्यतमावक्तुचक्षुमधुलाकावंध्यात्वात्तुमालानिर्गतांदवीं वक्तुवर्धुवामकवर्धन
साध्वं पूजावर्त्तिनीं दृष्ट्वा ॥ ॐ श्रावजी ॥ अमुकस्य चिरुमाकर्षयत्तं ॥ ॐ निगाहप

नियथावदानोयस्वचिरुप्रवक्ष्यते॥ देवी दुर्मंशमालां तर्गनादस्रव्या॥ ततस्तं मृकभिर्विविक्त
मस्त्वकिंकनामीति॥ अथदिगंवनामृककभीवज्रवावाहीनादंभकलिकपावधविशीनृत्त
वीक्षं सदवतीनां महधियानां महान्तं महारुचं महामायामहंभवीं॥ उलोकसंहवत्तुषां वेल
नीं विद्यां प्रपदयं महंभवीं॥ अथाविद्यातमाक्याविधया साधकध्वजः॥ सदवगन्धर्वगन्धर्व
नयकिरुतानिजलजस्थलजानिचरमहाश्रय्याकवीविद्या ॐ उजालकवी तथामाहने
वंगपठिताकृत्तुविद्यावाचासिद्धिंचसाधकं नृपं नृपतं तस्यानापचासाविधायकं॥ अ
धकं॥ प्रवक्ष्यामिमहायागीदिव्यवक्त्रपंकिलि॥ ॐ नमो गवती वज्रवावाही श्रय्या
जितश्रपवाजितवर्धकविनृत्तमतिविषयं॥ अथनिषाधनिषाधनिकलालिनिर्ग
वाहिमहायागिनीकामध्वविद्यगन्धर्वप्रागं गश्हनश्रावकं किं विधिं विनिधुन

सर्वपापसत्त्वानां सर्वपभूषां मानसकृदनिष्काधनिकाधमर्लङ्काकलाविधीमहामूढभीह्व
 भकालामरविपिङ्गुललाचनवज्रभवीववजासनिमिलिरतिमिलिरहहं हं हं वावधूधू
 विहाहाहाहं हं हं लाक्कनाभनिभनसहस्रकाटितभगनपविवावितं हं हं हं सिंहवृष
 महामुमाहनियागभवित्रं जाकिनीलाकानां वन्धनिसय ४ प्रत्ययकालिनिहं हं हं
 वांरुगवनीमहामायापथिरुसिष्ठाः अस्याः धवतेरुवतिः सामयहसूर्यग्रहवायुहमप
 नावन्ति सूर्ये वनूगम्पतः साहस्रचक्रविगनाकर्षयति साचपमिहू च चरुसाडचाट
 भक्तिपत्रवृक्षादीनां दर्भयति भूमिना ज्ञातं सूर्यरूपं गृह्यमभनगवं वाक्तिपत्रं दाहं द
 नासूर्यरूपं फाचउर्दिभीक्तिपत्रं उग्रं गलं दर्भयति मयत्रपिहू कं विपविगं जामयं न
 देहागमभुलेस्यैसाधकान् ग्रहं नाम भूमिना न उरुवश्चेत्तकनं पश्चिमकाधेन

८

लं वायव्यसिंहनादं महारुक्तावं जेभानसनाजवीर्जनाम भूमिना न प्रयथायागंदग्धार्द्ध
 कलिचरुभित्रीष्वाइवलवराध्वत्तनागके भवयादया ४ यथाक्रममहिषमार्जाव
 मनासूर्यके भूगमगुल्लकवायसश्चवतालुतादयं गतिः महामायादव्या भूमिना न ४
 गध्वानं कूर्यात् नानाहिमस्त्ववंतुवजिकाधमग्निमधुलं कस्मस्त्वचउर्दलंप्रम्वकवर्धु
 वक्रवर्धु चउर्दलंप्रपंचामकरुतपदातां जनं धत्वा प्रतासनस्त्वं शालीलापदानयं
 मभवघातकपावर्जनीपाभधवां चकमूखां जिनेशं रुक्टी कबालवदनां वज्रधानां
 र्वइष्टां जी ४ स्वाहा उपरुदयं ४ ॐ हं जी ४ हां हृदयं लज्जपत्रं समाहितारुत्वासि
 कत्वाधूपंदयासटायक ४ सिद्धिदिने कविं भूयावन्नान्यथा ॐ जी ४ हं हां ह ४ ही ४ हं
 पचां वं ददातव्य ४ यस्मै कस्मै चिन्नकथनीयं वज्रयोगिन् ३ धिनिष्ठकिं नारायणाय ४

五

श्रीगुरुदेवकावचं वज्रमस्तु ॥ वीजं गत्समस्तु वान्दवी हगवत्या वज्रवावाही प्रलयानल
 र्जिकां ॥ वामकपालश्च दक्षिणार्धं ववकालाया कानं प्रत्यालीरुतना ॥ पुवादिग्वासां म
 ॥ विश्ववज्रध्वं मूर्ध्नि वज्रमालाकपालाभारितां ॥ मधुसूदामदहाहय ॥ आतां कावरु
 यिकं सूत्रसंहातविग्रहां ॥ पूजास्तु सदा सदा दंष्ट्राधागी समाहितः ॥ सादवंताव
 विरुगा ॐ वं वज्रवावाही नाहो ॥ हांथायामिनी रुदि ॥ जीं मां माहनी वकुं ॥ जीं जीं संचा
 हं ॥ नाहो रुदि तथ वकुं भिबठ भिरवास्तु भवच्च ॥ कत्वययन्या एव लमध सूची श्रं
 ॥ आमयत ॥ आकाशापादार्य दृष्टिस्तु मूर्ध्नि कावनादतः ॥ दधदिस्त्वकधकु
 ॥ ॐ अलेलिहा ॥ ४ज ॥ ४हं वं ॥ ४वज्रठा किन्वा ॥ समयस्त्वं दधहा ॥ वजां जल्पाउ
 सरुत प्रतपि ॥ आत्मादापस्मा वजा किन्वा दय ॥ ०० मं वलिं गुरुकु समय वरुनु

三

हे कमलापविमामसंप्रयान्गर्गतमल्लतन्त्राकावयमिच्छयाकुरुते धातुर्कप्रतास्ववतया
पतावनाकधितामसपिबुसकलंतत्त्वहं वजाधागिनीमक्रागुगानरुसिरुद्यावकंदृष्टाउत्रक
त्वापूजांमघप्रकल्पयन्मश्रुहतिमाकुरुतिर्नृपंचामरुतयागतमश्रुगोप्याद्यापंचयागि
मश्रुर्घदभयनिन्यंपूर्ध्वंचेकनूमादयन्मश्रुवत्तभवदीयायाधारिभेचिरुवितर्किच।प्र
हंसर्वभप्रतम।तदनूजिनमर्तुपथयन्मश्रुन्यतास्तनवजस्वतावात्मकारुस्वपयंवितावा
तवविश्ववजं।तनेवजसवितावयन्मश्रुकोकावर्कपंजलंबन्धनंचत्वधर्माचिरुद्धिधीमान्
तुल्लमल्लतन्त्रांमधुलीवितावयन्मश्रुप्रकजपूनर्ध्यादग्नेचमत्रमधुलंममत्रम
तन्मना।चतुर्कोटीचतुष्टायंश्रुतमेकापराहिरं।हावार्धहावसेयुकीवजस्रुवलीक
तश्रासनंपंचदभीमरुमश्रुभनापविचलंचचतुष्टापवितास्ववंश्रुनयोर्मधगतवी

५०८

हवन्ताप्रथमं हावय कष्टादिनायनक्रं विहावयन्तु न ती यहावयन्ती तांच दुर्धहनि हो नभ
 तं म नृपस्कन्ध तवं दृजा लोत्रो वद नायां स्मृता सैरुया वा विधागीनि सैरुया वजया गिनी
 स्मापित्यै कवी ॥ पृथ्वी च पूरु क सिद्ध्या ता श्रद्धा ३४ भवनी मता ४१ तं जश्च अलिनी रुया
 भवर्त्तलोगन्धविषय वसुच घस्म वी तथ्य ॥ स्पर्श रूच वी द्या ता द्य च वी धर्म वा रुच ॥ स
 षवजिका ॥ घातमा सूर्य को द्या ता वरु च वाग वजिका ४१ स्पर्श रूच वी वजी च मना वा
 त्मृष्टै कर्त्तिका ना नकु दनी ॥ कपाल कुं भमृ ॥ धुनस्कन्ध स्माप विचासनं ॥ एव चार्थ दृ
 रूचु लै भवतथार्थार्यमर्कुं ऊर्षे च कलिका नृच क प्राप्तिवर्धय क्ता मूर्तां तं जि कुं च मवली
 ममृ ६६ पुने ३३ ओ श्रं श्र स्वाहमा माहा विभु दिकथयामि ॥ श्रुक्ता ए श्रु चि नृप धामि ता ह
 यां लि ता मय ४ पंचे नं ३ द्या दिका ॥ दाघप विहा ले ता धार्य या गिनी सधा धृ ता ॥ श्रु द्या त्म

नृपं कथयामि श्रीनृपं तच्च शभनं । अलिकालो समापत्वा वाक्काष्ठं धनिधिवितं । प्रवक्ष्यामि
 र्वधर्मात्तमायनत्पन्नत्वात् ॐ श्रीगुरुः ॥ १ ॥ वज्रवावाहियागिना ४ संवत् कथयामि ।
 सा दुमाकृतिः ॥ आदिस्ववस्त्रावासाधीतिवृद्धे ४ प्रकल्पिताः ॥ व्याघ्रानि ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 राक्षसाधिचिरुं सहैव ३ । तस्मात्कायकयानाद्याललनावसनावधूतया । कायवाक्किरु
 अवधूतीमध्वदः ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

चित्तप्रतिमरूपसत्त्वेकचेताऽसूधीऽउत्पन्नक्रमतवसाहिवहिरांध्यात्सूक्तसदा। व्याघ्रासी
कंकाणहास्यलान्चिभ्रातनडंसाधनडंपवहितवृचिनायकप्रसङ्गसंगलाकार्थरूपिगतं
संविताव्यासवाक्कात्यकवभूततांवालम्बचानकवाक्चउमधुलसंकावतकर्त्तिकमस्त्रिचल
दोवोजासदभस्त्रित्वाजवंकावमभ्युक्ततल्लभ्यपंकावपविनामनविध्यपमदलवव
भनतगवतीविलावयत्। भुक्तांडयकिवतांडुर्धपादलित्तांभक्तवक्ताजानंश्रधपादन
संपीनान्नडप्रथाधवांवक्तवडलजिनजानयनीसकृत्तंगरुकूटिनी। पंक्षीकलाववदनं
हावयत्। हावनाविनायागीजापमर्कुतजायंमकुवाजभा। उंसर्ववृद्धाकिनीयवजवे
हा। उपरुदयंग। श्रथवलिमकु४। उंवजधागिनी७३दंवलिंगुक्र२वृममसिद्धिप्रयक
वत्प्राहंकावतविहवगवशाश्नयहंरुर्वेकिसाधकस्पचयदिभुक्ताभयउवृत्काश्र

५०५

[illegible]

पधूपदत्ताभमभासांगवतनिभायावहवत्तावधापिचसमाजातिर्किंपूनठइउमानूषाठ
 कर्षतक्षवंस्वकायश्रीरुन्वाननठस्वकभैरामयद्धधशजपचलावधरुउनविकन
 वकिजिकादीरुउरुत्तामानसैस्वाश्रालाघवामहकनहामयत्तानिम्बकाष्टाग्निप्रकात्
 लसमालायसधाचाटनमावलीजायनठस्रफकतामिष्ठउंजमानोभेधनपिच।सदका
 नं॥रस्यमाययाइर्धसद्येनभधनकलान्।मामहामान्ननयठकश्चिन्हामयत्सद्यसंयुनं॥भ
 मानयन्।वाचंरस्यप्रयद्धतिप्रीत्याजकिन्नानसंभयठ।अथपूजोच्यतामधुलैरुत्ताध
 वनयाहृद्यविकामध्वश्रावाप्य।उंसर्ववृद्धजकिनीयत्पादिमकुलधर्मादयामध्वप्र
 पार्ष्व।उंवजवर्धुनीयहंस्वाहतिमकुलधपश्चादक्षिणपार्ष्व।उंवजवेवाचनीयहंस्वाहा।
 नरुजयन्।पूनवपिधर्मसंलागनिर्मासमहासूरवर्त्त्यूनन।उंसर्ववृद्धजकिनीयउंव

गतदवीरुटीलचार्यभागिनी।रुषानकनिकाहासहृद्धजसमतजस।नदवींचिरुमालाव
 नीयथाकाभीव्याधिलक्षवर्जितं।महामुद्रात्मकंरभचिरुवर्त्नप्रकाशत॥००दंमंजुं
 भवजउपमासचसर्ववृद्धेसुहापितं॥ ॥००॥००दमवाचरुगवानारुमनसठश्रुनं
 वगं॥अनावंत्वयंमभासावकुावंचपन्नन।सुहापितंताप्यमानंतन्मयश्चातिर्हव
 नंदमिदंवचमृक्कागच्छतिपापेभुरुवस्याससम्पनता॥००॥हृगवान्त्वामिवजज
 श्रीवज्रवानाहिकल्पमहामंरुवाजआगहनवज्रवावाहिकियातत्त्वारुवाभीतिवावाका
 रुवाहृदुस्रपांरुथागत॥कवदलुषांचथानिवाधुनवंवादिमहाधुमस॥यासोधर्मस
 र्ववाजिष्ठादापे०पवनचविने०॥श्रमदाषप्रचावे०यूर्यंरुसाउवनगतावाधिस

902

[illegible]

74

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 373